२५५९

नारदासकृतपदसंग्रह.

छपावी प्रसिद्ध करनार.

बुकसेलर त्रीभोवन रणछोड

उमरेठवाळा.

२५५५

तथा

बुकसेलर हरगोवन द्वारकादास.

अमदावाद मध्ये.

शा. छगनलाल मगनलालना

शीळा प्रेसमां छपाव्युं

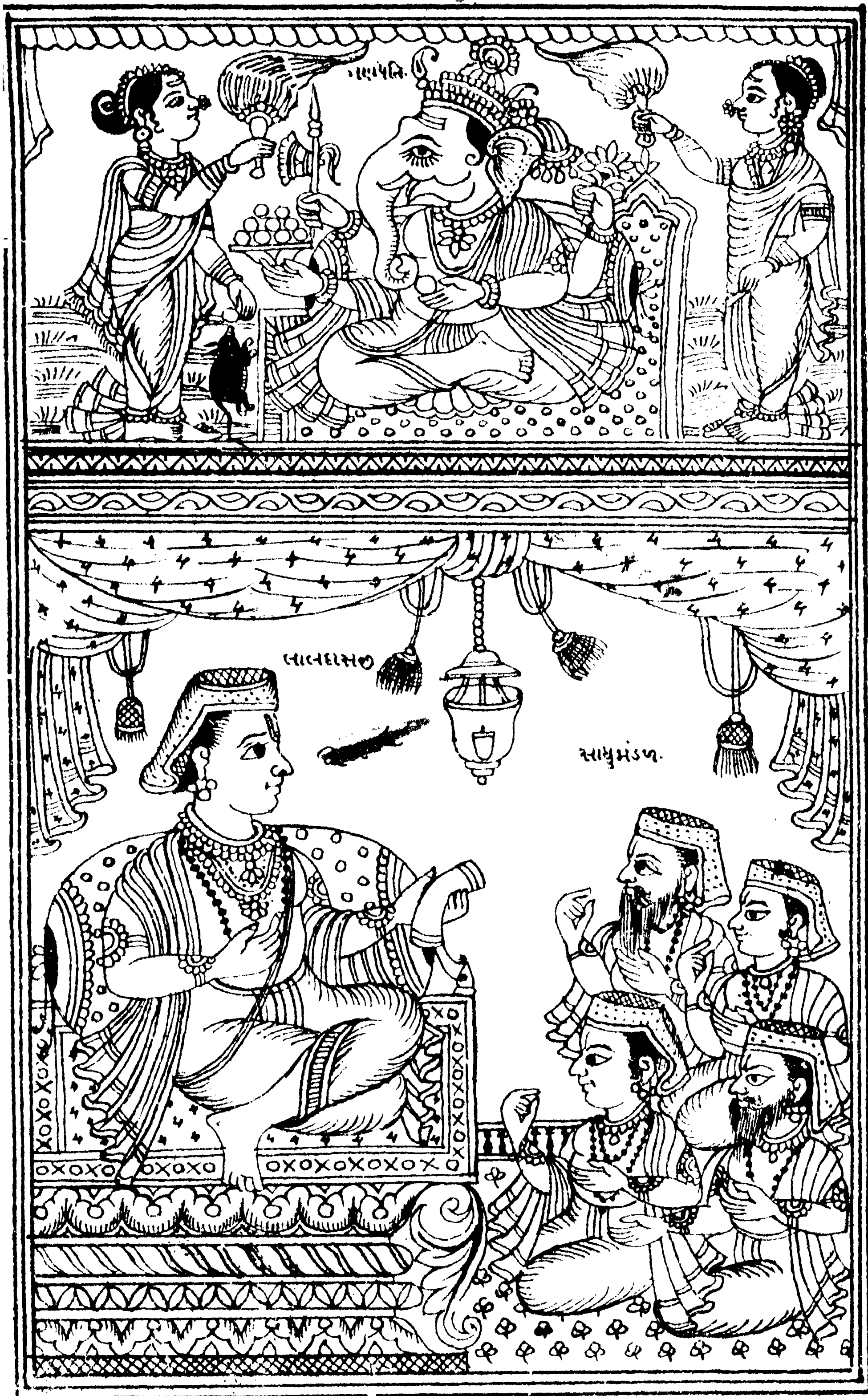
ठेकाणुं लखुरकाखाण हरगोविंदपुरीआ

नी दुकानमां

आपुस्तक सने १८६७ ना २५ मा आक्ट प्रमाणे रजीस्टर कराव्युं छे.

संवत १९४१

सने १८८५


ગણપતિ.
સાધુમંડળ.

अनुक्रमणिका.

अनुक्रमणिका.

अनुक्रमणिका.

अनुक्रमणिका.

अनुक्रमणिका.

अथश्री डाकोरना लालदासकृत पदसंग्रह लिख्यते.

श्री डाकोरनाथनी विनति विषेनां पद.

राग काफी॥ ॥डाकोरनो श्री ठाकोररे ॥रसी
कजन संग रमीयो ॥छेल छबीलोरे॥गोविंद
मारे मनगमीयो॥टेक॥शरणागत वत्सल
श्री हरि तमे ॥दीनबंधु दातार॥दीनानाथ दया
निधि भुजपर॥करुणा करो कीरतार॥ तमविना
त्रिविक्रमरे॥ लवमां बहु लमीयो॥डाकोर॰॥१
॥वारवार कहुंछुं विठ्ठलवर॥ साधन करयुं नथी
लेरे॥परधन परमन करवा माटे॥मेंधर्यो वै
ष्णवनो घेरे॥ नम्र थईनेरे, चरणमां नथी नमी
यो॥डाकोर॰॥२॥ अन्य नथी रक्षक कोई मारे॥
तम विना दीन दयाल॥ तेमाटे करगरी कहुं तमने
॥आप करो संभाळ॥शोकनो सागररे, श्याम
विना नथी समीयो॥डाकोर॥३॥ दीनप्रति दर
शन दासने आपो ॥प्रीतम प्राण आधार॥कर
ण कर्म लय करो लालनो॥करीन लहे संसार॥
मीथ्या सुख माटेरे॥जरे मैं कुंज बहु भमीयो॥
डाकोर॰॥४॥ ॥पद॥१॥ ॥राग काफी
॥ ॥डाकोरना श्री ठाकोररे॥कृपाळु कृपा करम
न ..रो॥रसीक वर विठ्ठलरे॥जोणो न प्रभु भोटे॥

जरो ॥ ठाकोरा ॥ टेक ॥ जणार्थी सहु जण लखाने
जयधरी मन भावा ॥ ओंह्यनीये गुण दोष न देजे
॥ सलीतानो जल स्वभाव ॥ घटे नहिं तमने गि
रिधररे ॥ विषम गुण मुकोपरो ॥ ठाकोर० ॥ १ ॥
पुत्रवती माता जेम पुत्रमां ॥ प्रीत्य करे जहु प्या
रा ॥ श्वेत स्याम गुण दोष अंगना ॥ धरे नहीं मन
मां लगार ॥ ते माटे कहुं छुं तमनेरे ॥ दासना दोष
हिलनधरो ॥ ठाकोर० ॥ २ ॥ क्षितिनो क्षमा स्व
भाव देखी सहु ॥ जो दे जणे अपार ॥ मण मू-
त्रादि धरे ते ऊपर ॥ तदपि करे ऊपकार ॥ विश्वा
र करो ब्रजपतिरे ॥ क्षमा भार मनमां भरो ॥ ठा
कोर० ॥ ३ ॥ इत्यादिक गुण अनेक अनेक प्रति ॥ धर्या
तमे नंदलाला ॥ गुण भंडार उदार शरणमां ॥
कम रहे लाल जेहवा ॥ पोतानुं जीई पाळीरे ॥
त्रिविधि ताप तनना हरो ॥ ठाकोर० ॥ ४ ॥ ॥
पद ॥ ४ ॥ ॥ राग काफी ॥ ॥ ठाकोरना श्री
ठाकोररे ॥ सांभळो घनश्याम हरि ॥ वृद्ध स्व-
भावेरे ॥ जेरे कहुं तमने कहुं छुं जरि ॥ ठाकोरना रे
आयु गयु गनाना योनि जन्म धरि ॥ लटक्योज
कु भगवाना ॥ त्रिविधि तापमां तप्यो दिनरजनी ॥
तदपि वणि नथी सान ॥ पामर प्राणि पापीरे ॥ ठा
मनथी जे मोटरी ॥ ठाकोरना ॥ १ ॥ घन भजन मद

केर्यदीत्यारे॥ मनमांडीपन्यो कामा॥ रातदिव-
सनारी संगराच्यो॥ क्षण न लह्यो विश्राम॥
हवे कुकरि हार्यो रे॥ कोग टकरा करि करी॥ ठाकोर
॥२॥ मीथ्या सुख मारे में जोयो॥ रत्न सरीखो
देह॥ कृष्ण कृपा निधि कृपा करी मने॥ तमपर आ-
पो नेह॥ प्रीतिना प्रतिपाल करे॥ कहुं छुं तमने
करगरी॥ ठाकोर॥३॥ दीनप्रति दरशन दास नेआ
पो॥ श्रीअल्पे दकृपाळ॥ दुःख दुष्कृत सकु दूर करी
ने॥ लालने करयो निहाल॥ चरण शरण मारे॥
राखो प्रभु प्रीतें करी॥ ठाकोर॥४॥ ॥पद॥७
॥ ॥राग काफी॥ ॥ठाकोरना श्रीठाकोरे रे
॥श्रीरणछोड कृपाळ॥ रीस न धरशो रे॥ रुं ठाव
करो ठाला॥ ठाकोर॥टेक॥ दीन दयाळ जेवुं जर
द तमारुं॥ लोक वेद विख्यात॥ कुजित दीनशर-
णांगत मुजपर॥ केम न थाओ तात॥ कारण
जतावो रे॥ शंन डशामण गाळा॥ ठाकोर॥१॥
कोटिक लन्कने कृपा करी तमे॥ केशव कृपा निधा-
न॥ कुं याचक शरण तमहारे॥ तेने केम न करो कृ-
पा दान॥ कठीला कठ मूको रे॥ मोहन मोरलीधा-
ण॥ ठाकोर॥२॥ अजिला धार अजिल कुंज कर
ता॥ अंतरजामी नाम॥ अंतरनी पीड प्रभु मा
री॥ केम न हरो घनश्याम॥ छजिला छक मुकोरे

॥नटवरनंदलाला॥डाकोरमां॥३॥गुणसागर
गोपाळगदाधर॥ भक्ततणा प्रीतिपाळनार
३ तो राजी रंकु लालनो॥तमपर आपो व्हाल
॥प्रीति करीने रे॥पाओ प्रेमरसप्याला॥डाको
रमां॥४॥ ॥पद॥४॥ ॥रागकाफी॥ ॥
डाकोरना श्री ठाकोर रे॥प्रीतमविना कळनपडे
॥जगतपति जगमां रे॥जोउं छुं पण मने जडे
॥डाकोरवाले श्या॥विरहाग्नि व्याप्यो उर अंतर॥त
नडुं तपित पीजयां॥व्याकुळ थइ घरमां नथी गम
तुं॥मन मळवा अकळाय॥वनवनमांहीरे
॥जोळेथी केम जजर नडे॥डाकोरमां॥२॥अति
आतुरताथी हुं तमनो॥संभाळु घनश्याम॥
॥पीडा दुसह पडे मने दीनमां॥रात्रिये क्षणु न
विराम॥वहे छे आंसुधारा रे॥नेत्रमां मने आ
विनडो॥डाकोरमां॥३॥छानी पीडा थाय छजिल
॥चेंन नथी चितमांय॥तालावेली थइ मारा त
नमां॥क्षणक्षणे शरीर सुकाय॥चटपटि चिंता
नुं रे॥चेटक मारा चितमां च्हडे॥डाकोरमां॥४॥ज
ळजविना मीन जीवे नहीं॥करे कोटि उपचार॥
तेंम गति मारी तमविना गिरिधर॥प्रेमनी रह
री प्यार॥लालने पाओ प्रीत्ये रे॥टळशे पीडा
तम पडे॥डाकोरमां॥५॥ ॥पद॥५॥ ॥

रागकाफी॥ ॥डाकोरना श्रीठाकोररे॥कृष्णमा
धुतमनेहरुं॥श्रीरणछोडरंगीलारे॥करगरीने
करयुंहुं॥डाकोर॰॥टेक॥अंगअंगविरहाग्निलगा
ड्यो॥तनमांतपेजहुतापे॥मनपतंगआ
तुरथईतेमां॥पडीपामेसंतापे॥विठ्ठलनावि
योगेरे॥संकटहुंतोजहुसहुं॥डाकोर॰॥१॥व्य
भिचारीनारीनेनीतजेम॥प्रीतमसणवानुंम
न्न॥घडीपणधंधोगमेनहीघरनो॥चित्तमां
करेचिंतवन्न॥तमचिनातेमजरे॥चिंतनमारा
चित्तमांजहुं॥डाकोर॰॥२॥लोलीनेदीलदामव-
सेजेम॥कामीनेचित्तकामा॥रामलक्षमनराम
वसेजेम॥तेमम्हारेमनश्याम॥कोटिनेउपायेरे
॥रंगीलाविनाकेमरहुं॥डाकोर॰॥३॥विषय
भोगरोगसमलागे॥लोकलजेनहीमुज
॥विरहविहुणपईहुंवनवनमां॥लालनेक्ष
णनथीसुज॥विचारीजोयुजुक्तेरे॥सुजते
श्यामसंगेवह्युं॥डाकोर॰॥४॥ ॥पद॥६॥
॥ ॥रागकाफी॥ ॥डाकोरना श्रीठाकोर
रे॥प्रीतमनिजपणपालीया॥प्रेमलक्षिला
वेरे॥आविनेअंतरलालीया॥डाकोर॰॥टेक॥
विरहवेदनासहुंहुंधामी॥पामीनिजलरता
॥वारवारअंतरआविलोकी॥आनंदथयोअपा

रा॥ त्रिविधि तापे तन नासे॥ हे अत लत खाण रणि
या॥ डाकोर०॥ २॥ घरमां स्याम निरखी थयुं माहुं
॥ रीझी तज तन मन प्राण॥ गद गद कंठ थई निरखु
अनी॥ वहीन सके मुख वाण॥ मृगे ते जेम मुख-
मांसे॥ रसनाकरना कण गणी या॥ डाकोर०॥ ३॥ सा
गर जळमां नही मळी जेम॥ तरंगनी ज रूप ने नाम
॥ लवण पूतळी पाणिमां जेम॥ लक्त मळ्या ते
म स्याम॥ पूर्वनी प्रीत्ये रे॥ परस्पर थई लपी-
या॥ डाकोर०॥ ४॥ सतगुरु कृपा थकी ते देखो॥ प्र
तम ज्योत प्रकाशे॥ तम अज्ञान टळे सकु तेनुं
॥ पामे पद अविनाशी॥ लाल खखण रूपे रे॥ चै
तन सिंधुमां लळी या॥ डाकोर०॥ ५॥ ॥
पद॥ ७॥ ॥ राग काफी॥ ॥ डाकोरना श्री
ठाकोर रे॥ कसो न केम कष्ट हरि॥ रणछोड रंगीला रे
॥ कहुं छुं तमने करगरी॥ डाकोर०॥ टेक॥ मुज पूठे प्र-
लु पडि अविद्या॥ माया त्रिगुणाकार॥ अंतर ज-
गी थति नथी अळगी॥ दीन दीन दुःख अपार
॥ अलबेला अमने आपे रे॥ मारी ने मन मां
छानि छरी॥ डाकोर०॥ १॥ चित्र विचित्र विषय
कणनो करे॥ वारवार विस्तार॥ मन पंखी मन
रंजन देखी॥ सुखी थयुं मो झार॥ पापी मोह पंख
रमां से॥ पडे छे डोगट करी करी॥ डाकोर०॥ २॥ तेथी

तत्वस्वरूपलहीने ।। तद्रूप थई तन मांया ।। तनसं
गी सुत वित नारीना ।। संगमां रंगी सहाया ।। अने
क योनी अथडायो रे ।। जीव नीच कर्म करी ।। ठाकोर
।।४।। ते माटे हवे हेत करी आपो ।। निजसंतनो
संग ।। एथी अविद्या टळीने लालने ।। हृदये
लागे रंग ।। निजजन दीर धीरज रासे रे ।। विषय
सुख करी विसरी ।। ठाकोर० ।।५।। ।।पद।।८
।। ।।राग काफी।। ।।ठाकोरना श्रीठाको
रे ।। कृपाकरुणा ने धात धरो ।। दयाकरु दीनबंधु रे ।।
दीननुं दुःख दुर करो ।। ठाकोर ।।टेक।। कष्ट साध्य सा
धन करी करी ।। कु पाम्यो कोटीक फेरा ।। तदपि मू
ढता मटि नथि मननी ।। लज्यो वैष्णव वेरा ।।
अन्यने आपी ऊपदेश रे ।। प्रपंच करी पेट भर्यो
।। ठाकोर० ।।१।। विषय त्याग हरिचरण राग वि-
ना ।। सुख नथी आ संसार ।। अम चतुर थई अन्य
ने चेतवु ।। मुजमां नथि बोध लगार ।। श्रीकृष्ण तु-
ज आपे रहीने रे ।। विषयसुखमां विचरयो ।।
ठाकोर० ।।२।। भूंडा भक्त तणुं जगमां ।। जगजीव
न राखे माना ।। एवो सुशील स्वभाव श्यामनो
।। सांभळीने हूं दास ।। अंतर आतुर थई आव्यो रे
।। शरणमां भाव भर्यो ।। ठाकोर० ।।३।। पतीत
पावन अधम उधारण ।। भवजळ तारण नाम ।।

इत्यादिक जन जूदे जूदे धरीया ॥ लालने आपो विश्रा-
मा ॥ रंगीला री रणछो राजो रे ॥ प्रीतम न वकरशो पे
रो ॥ डाकोरना० ॥ ४ ॥ ॥ पद ॥ ८ ॥ ॥ राग का
फी ॥ ॥ डाकोरना श्री ठाकोर रे ॥ रंगीला रण
छोडा ॥ पूरण प्रेमी जनना रे ॥ पूरो छो प्रीत्ये कोडा ॥
डाकोर ॥ टेक ॥ मुष्टिक तांदुल भारे मोहना ॥ मी-
त्र सुदामानी जाथि ॥ गोष्टि करी गिरधर आरोग्या
॥ हेते लेई निज हाथि ॥ अपार वैभव आप्यो रे ॥
जेतां न जगमां जडे जोड ॥ डाकोर० ॥ १ ॥ कुहोक्या
रे शीधुं सबरीये ॥ सरजू गंगा स्नाना ॥ शीस्त्रा
त्यास करयो नथि तदपि ॥ भावे दिज भगवान
॥ आरोग्या जूठां बोर रे ॥ तमारी कोण करे होड
॥ डाकोर० ॥ २ ॥ रसीक भक्त रहिदास तणी तमे
॥ जनतन जेई जडु नाथि ॥ श्याम सुंदर श्रीकृष्ण ली
धुं अेनुं ॥ हेत धरि नीज हाथि ॥ अेवी श्रद्धा मने आ
पि रे ॥ मुकावो मननी दोड ॥ डाकोर० ॥ ३ ॥ इत्यादि
क भक्तजनना भाविक, भक्त तणा ॥ ते अनेक ॥
पूरया मनना मनोरथ प्रभुत मे ॥ लालने राखी
अेक ॥ बांनानी पत जतां रे ॥ जरे तमने लाग
शे खोड ॥ डाकोर० ॥ ४ ॥ ॥ पद ॥ १० ॥ ॥
राग काफी ॥ ॥ डाकोरना श्री ठाकोर रे ॥ दयाळु दी-
नबंधु हरि ॥ तेनो तुं दास थईने रे ॥ विषय सुख जन

विसरी ॥ डाकोरना० ॥ ३ ॥ मनुष्य देह चिंतामणि
मोंघो ॥ मले नहि जीवो वारा ॥ ते मळ्यां छे नोतम
नारीने अंग ॥ तेलेचे छे अकुवारा ॥ जेवुं समजी
अज्ञानी रे ॥ चेती ले चित चूप करी ॥ डाकोर० ॥ ४
॥ स्याम मल्या तो सुंदर अवसर ॥ अेळेवीती ज
या ॥ स्वप्न सरीखो सघळो जोटो ॥ जेल जन्यो ज
गमांय ॥ जेता मां पणसी जडीरे ॥ थीर नथी
रेहेवुं ठरी ॥ डाकोर० ॥ ५ ॥ जाण पणुं जोयुं ज
ग्याले ॥ जेजन जुवती संग ॥ वृद्धपणे सहु थे
इ वीकळ थई ॥ हृदीये लाग्यो न रंग ॥ हवे तुं चे
ती लेने रे ॥ लिख्युं गीतानुं ज्ञान धरी ॥ डाकोर०
॥ ६ ॥ वांति सरीखा विषय लोग करी ॥ नेह धरी
हरि नाम ॥ श्वासोश्वासे साच धरि ॥ अंतरमां
आठे जाम ॥ लाल तुं समरी लेने रे ॥ आनंद उ
र मांहि लरी ॥ डाकोर० ॥ ७ ॥ ॥ पद ॥ ८ ॥ ॥
रागकाफी ॥ ॥ डाकोरना श्री ठाकोर रे ॥ जेवो ते
वो पण छुं तारो ॥ चत्रुभुज राजीया ठाकोर रे ॥ धर
णी धर वीनती उर धारो ॥ डाकोर० ॥ टेक ॥ राम
स्वरूप धरि अंतरमां ॥ हेतथी ने अपार ॥ मई
र रीछनी साथे सख्यो ॥ कर्यो तमे मीत्राचार ॥
अवगुण गुण नहीं गणता रे ॥ विठ्ठलवर वात वि
चारो ॥ डाकोर० ॥ नेने वृसोना नीचे तमे ॥

चसीकरता विश्राम ॥ तेते वृक्षो ऊपर चढीवन
चरा ॥ चित चंचळ धाम ॥ ऊतपात घणा आच
रतारे ॥ कुदारा करता कलसो ॥ डाकोरना० ॥ २ ॥ कृ
षण स्वरूप धरी तमे कसनी ॥ दासी कुब्जन सा
था ॥ एक चंदन माटे रीज्या ॥ रीसाया श्री जदुना
था ॥ हठीला हठ हवे न्यो छोरे ॥ अपराध अवो
रयो अमारो ॥ डाकोरना० ॥ ३ ॥ मारे मोटी आशा
नथी ॥ अंतरमां श्री अविनाशी ॥ ज्हां ज्हां ज-
नम धरुं त्हां त्हां ॥ तमे स्वामी हूं तुज दासा ॥ अ
वार मुजे ऊगारोरे ॥ सेवक लाल छु मारो ॥ डा
कोरना० ॥ ४ ॥ ॥ पद ॥ ५२ ॥ ॥ राग काफी ॥
डाकोरना श्री ठाकोररे ॥ सांभळो सरणागतरा ॥
निज नाम तणो गणीना तोरे ॥ अपराधिता-
स्या अपार ॥ डाकोरना० ॥ टेक ॥ लोक वेद विख्यात
अजमेण ॥ विप्र अधम अघ धामा ॥ जमना म
रथकी मुकाव्यो ॥ सेने श्री घनश्याम ॥ सुत कहित
नारायण नामरे ॥ अंतरमां कीधुं ऊच्चार ॥ डा
कोरा ॥ १ ॥ अति अभिमानी परशु हथीने ॥ ग्राह
ग्रस्यो जल मांही ॥ नाम मात्र सुणी श्रीपति श्री
तनि ॥ आव्या आतुर धाई ॥ मुकावि महा सुज
आप्युं रे ॥ निराधारना आधार ॥ डाकोरना० ॥ २ ॥
जाळ जिव्य पीडा पामी थया ॥ आतुर अंतर

मांया॥ आतुरवचन सुणी आव्या तमे॥ त्रीकम
तत्क्षण तांया॥ अलबेलाजी उद्धार्यो॥ पूर
ण मनमां करी प्यार॥ ओधोरगा॥३॥ गणिका गी
ध अगणित अपराधी॥ तमे तार्या संसार॥ अ
ल सरीखा महापापीने॥ तारो प्रेलु आवार
॥ रे॥ रणमां आवी श्यामरे॥ प्रीत्ये कृष्ण पोकार
॥ ओधोरगा॥४॥ ॥पद॥५३॥ ॥श्रीगुरु-
भ्यो नमः॥ ॥रागकाफी॥ ॥रणछोड
मने छोडो रे॥ रंगीला लालकरी॥ मायानुं जाळ
मोडो रे॥ मने आपे दुःख करीकरी॥ रणछोड०॥
टेक॥ अंतर आवी लोलजताथी॥ मोह मनने
उपजावे रंजित रसरसनामां मुकी॥ पछी ना
री थईने फरणावे॥ अपार दुःख आपे रे॥ करोने
पापणीने परी॥ रणछोड॥१॥ क्यारेक धननो लो
ल देखाडी॥ धननुं ध्यान धरावे॥ धन आपी अं
तर व्यापी पछी॥ ध्यान धणिनुं लुलावे॥ करे त-
मने म मन कापे रे॥ टाळे थी नथी अति टळी॥ रण
छोड०॥२॥ क्यारेक अंतरमां आ पीने॥ क्रोध अ
ग्नि उपजावे॥ मन तन वाणी विकल करीने॥
गुरुजीने गाळ देवरावे॥ पापनो पार मोटो रे
॥ मुके छे मारे माथे धरी॥ रणछोड०॥३॥ तुज
संगे जप पामीने॥ तुज स्मृतिने अथडावे॥

त्रिगुणाकार थई अंतर रह्यो॥ तुज साथे अंतर पड्यो
थो ते मारे कहुं छुं तमने रे॥ कर जोडीने करगरी॥ र
णछोड॥ टेक॥१॥ ईत्यादिक दुःख मायातणां मुज॥ अं
तरमां कीधां अनंत॥ अंतरजामी प्रभु जक्तनामी
॥तमे आणो दुःखनो अंत॥ बालकना अंतरमां
आवो रे॥ दुरकरशो माया जडी॥ रणछोडना पा॥ ॥
पद॥१४॥ ॥राग काफी॥ ॥रणछोड रं-
गीला रे॥ कहुं छुं कहुं करगरी॥ मायाकर्म टालरे॥
जिक देवोडे करी॥ रणछोड॥ टेक॥ जातां पी-
तां खातां स्वप्ने सुख नथी मनने लवलेश॥ कृत
करी करी थयुं क्रपाणुं॥ देखाडो निजनंद देश॥ ई-
हांतो माया आपे रे॥ रोग टल दुःख करि करी॥ रण
छोड॥२॥ मन रंजित रमणीक रूपधरी॥ मायाम
न लालच्यावे॥ लोल देखाडी अंतर पाडी मनेश
विषे रसमां लपटावे॥ जे सुखथी नथी पतीज
जागी रे॥ अंतरमां गई प्रसरी॥ रणछोड॥३॥
क्यारेक कर्म क्लिष्ट दुःख आपी॥ मनउपरामक
रावे॥ पाछुं सुख आपी संमृति व्यापी मने॥ रोग
रवरा करावे॥ अपार दुःख देखी रे॥ मन मारुं भय
डरी॥ रणछोड॥४॥ क्यारेक ज्ञान ध्यान करा
वी॥ अंतरवृत्ति लगावे॥ सुख दीन ने देखी अव
सर पेखी॥ दुःख दरीयामां हिंडुलावे॥ अने तारु

गेडुं थाक्योरे॥ नाना योनीमां नृत्य करि॥ जुए०॥
४॥ सरवे संमति करिने परस्पर॥ निज नीजसृ
ष्टि जोवावे॥ काम क्रोध मद लोभादिकने॥ वेग
लेवि वसावे॥ काएु नथी ठीकरे॥ स्थाने मा
टे मारे ठरी॥ जुए०॥ ५॥ कर्त्ता निकर्त्ता सत्ता कर्त्ता
॥ दीनानाथ दयाला॥ विरुद्ध करी सृष्टिनी सत्ता
॥ वेगे हरीने कृपाला॥ दासनुं दुःख हेरजोरे॥ स्तुंथा
शे अंतर नगरी॥ जुए०॥ ६॥ कालावलन्तिकेउ
री दुःख हरी॥ शीलस्तृष्टि सुखधामा॥ अंतरला
वी वेगे वसावी॥ थीर थापि घन श्यामा॥ लालने
सुख आपोरे॥ व्रजपति वालकरि॥ जुए०॥ ७॥
॥ ॥ पद॥ ५॥ ॥ राग काफी॥ ॥ प्रभु
ने तुं प्रीत्येरे॥ समर पाम्ये प्राणि॥ चेतीने चे
तेरे॥ आरत अंतर आणि॥ टेक॥ नौतम नर त
न नथी मळवानुं॥ वारवार संसार॥ कृष्णकृ-
पा कुये कृपा करि तनो॥ आप्युं छे आधार॥ ते माटे
कहुं छुं तुजनेरे॥ मुज हरि सहयाणी॥ प्रभुने॥
१॥ अंतर आंख्य उघाडि जोने॥ अवसर आपे
लया॥ आजकाल करतां तन ताहरुं॥ जाण आपान
नहि आय॥ जठपट लेजेरे॥ अक्तपतीने जाणि
॥ प्रभुने॥ २॥ अंगे आणा सआणी खुंदंध्या
॥ मोह निंद्रानी मांया॥ चेतन पद पीतमां ले

जगी॥ वेणा रे गुलवही जया॥ ये तुरनरये तो रे
॥ हरि विना थाय हाणि॥ प्रभुने॥३॥ राज्यस
दासत गुरुनी साथे॥ मन क्रम वचने साथे॥
तत्व विचार करीतुं तजने॥ कुडां कर्मनी काये
॥ लाल हरि ही रे रे॥ जांच्य कर देताणी॥ प्रभु
॥४॥ ॥पद॥१३॥ ॥मुरख जनम हि मण-
रे रे॥ मनुष तन करी करी॥ त्रिविधि ताप टळरी रे
॥ लज्ज ले हरि लाय धरी॥ मुरख॥टेक॥ अडपा
कडपन जग प रे पुंजी॥ गर्भव जेल पी रे॥ त्यां गर्भ
त्यां हिकजकु जन्म धरीतुं; नाख्यो जक्तमां नाख्य
॥ चार खाण्य मांही रे॥ अवतरियो तुं मरि मरि
॥ मुरख॥१॥ हरिराजण माया गुण मेळवे॥ पूर्व क
र्म संजोग॥ तेणे करि जीत तारा तनन॥ थाय
छे योग वियोग॥ कोरीक काळ थी रे॥ मन थी
जे ठोडरी॥ मुरख॥२॥ जनने करि करुणा करुणा
निधि॥ कारण रहित कृपाण॥ अ दुःख तरवाने
माटे तने॥ आप्यो नर अवतार॥ विचारीने लरन
ने रे॥ हरिथी डगलां तुं डरी॥ मुरख॥३॥ तेमा
टे स्वहेत करीने॥ हरि भज वारंवार॥ सुकरी न
हि अवसर छे छेलो॥ तजने विषय विकार॥ दया
णु दुःख हरखी रे॥ लालनो प्रभु प्रीत्ये करी॥ मुरख
॥४॥ ॥पद॥१४॥ ॥राग काफी॥ ए

जोतांजोतां जरीरे ॥ मुरख जन तारे ठगी ॥ ए
छेरीगति थारीरे ॥ पेहेलो तुजनने मतुने मणी ॥
॥ जोतांजोतां० ॥ टेक ॥ जोरीनीर सरीपेसुं तनता
हुंरे ॥ तेनो करने घियारा ॥ ओढीने अणगुं पातां
अनो ॥ फरीरी लागे घारा ॥ वेगे वणसी जरीरे ॥ जे
मकांई पुष्पफणी ॥ जोतांजोतां ॥ १ ॥ कोईगर्भे
कोई प्रसवसमे कोई ॥ बालक कोई पौगंड ॥ कोई
जोबनकोई वृद्ध जरामां ॥ पकडे काल प्रचंड ॥ अ
जगल करतांरे ॥ जूर तने जरी गणी ॥ जोतांजो
तां० ॥ २ ॥ रावण जणि बाणासुर कौरव ॥ काळय-
वनने कंस ॥ देव दनुज मुनि मनुज सहूनो ॥ काळेउ
ख्योछे वंशरे ॥ तारी नजरे तुजनेरे ॥ आव्यां छेरी-
र श्वेतपणी ॥ जोतांजोतां ॥ ३ ॥ जेना डरथी थरथर
ध्रुजे ॥ नाना मोटा सर्व ॥ तेनो पण हरिहरिजन
पोते ॥ उतारेछे गर्व ॥ ते मारे हरिहरिजननेरे ॥
लालतुं जनने वशचली ॥ जोतांजोतां ॥ ४ ॥ ॥
॥ पद ५८ ॥ ॥ राग काफी ॥ ॥ अकाल
करतांरे ॥ जेजन गयुं तारे पही ॥ सोगट केरो कर-
तांरे ॥ मुरख मन लाजे नही ॥ अकाल ॥ टेक ॥
जोतां जोतांमां हरण थयुं ॥ तारुं सघळुं सारी
रा विरुणपण इंद्रि सहुह्न ॥ नेण नासीकानी
रा डगमग डोलेरे ॥ लाठि करमांहि सही ॥ आ-

जटालंगोटा॥ सघळा शरीरपर भभूत चयाछे॥जो-
गी मटीने केरी॥ अंको देई तारा तनमां जेने॥
जाणे कर्योछे प्रवेश॥ जहर जूरी जे रोशे॥तारी
नजरे जुद्धा कही॥ आजकाल॥२॥ कोईनुं जोर्युं
नथी सांभळ्यातुं॥ जेने तारे ज्ञान॥ अर्पण थई
गईछे सहु इन्द्रि॥ मन जूली गयु भान॥ वारंवा-
रं तुजनेरे॥ करगरीने थाक्यो कहि॥ आजकाल०
॥३॥ हवे थई हवे लज्जा लेहरीनो॥ सगु नथी को-
ई संसार॥ मनक्रमवचने लाव धरी करु॥ ला-
ल प्रभु रूं प्यार॥ दुःखनी वेळा मां रे॥ लेसे ह-
रि हाथ ग्रही॥ आजकाल॥४॥ ॥पद॥२०
॥ ॥रागकाफी॥ ॥प्रेमीजन पू-
रारे॥ कोटिकमां कोईक हशी॥ अनंत अधूरारे॥
वनग्रहमां किवसे॥ प्रेमीजना॥टेक॥ जीजं वृ-
क्ष जहु वनवनमां॥ चंदन वृक्ष जकोय॥ अम
लेअंधारी लवमां जहु लरंकु॥ प्रेमी विरला
होय॥ बाकी जीवजहु जनरे॥ तेनाथी क्यमज्ञा
य थरो॥ प्रेमी०॥१॥ ऊपर त्यागजणावि जन्क
नो॥ आपे अति ऊपदेशरे॥ अंतर विषयनी आ-
श॥ तजे नहि॥ जन्यो वैष्णव वेश॥ चित्रित
भोभो दीपर॥ तेनाथी केम तिमिर जरो॥ प्रेमी०
॥२॥ पद साधी ईस्वंतन बीधी नो॥ जक्तमां कुण

कहे पूजाय॥ देखतां सहुनी कहिये॥ प्रेमी सर जाण
णाय॥ चित्रित गज घणा कूडा रे॥ गजनी जेरी दे
खम जेपरी॥ प्रेमी॥ ३॥ कर्म संजोगे प्रेमी जननो
॥ कुदि कोई ने संग थाय॥ अंतर ग्रेह वैराग विना कु
हो॥ केम एने ओळखाय॥ कहे लाल कोईक जाणे
रो॥ जे प्रेम अंसे अवतरशे॥ प्रेमी॥ ४॥ ॥
पद॥ ५॥ ॥ राग काफी॥ ॥ जगमांनथी
जीयारे॥ सिंहना समूह को फरता॥ वेषने वणो-
यारे॥ प्रपंच करी पेट भरता॥ जगमांनथी॥ टे
क॥ कामी थया ज्ञानी घणा जगतमां॥ हिंडे हरोह
रा अंतर साचुं ज्ञान नथी॥ अज्ञानी अजनी
लार॥ धर्म कर्म मुकीरे॥ भुरजे मन मांन धरता॥
जगमां॥ १॥ शून्यवादी मनमां मकलाता॥ वद
शून्य मही माय॥ शून्य थकी उपजे सहु सृष्टि॥
॥ शून्यमां पाछी समाय॥ शून्येशून्य थईने रे
॥ जगमां जन्मी जन्मी मरता॥ जगमां॥ २॥ नारी
धन संपति सुतनो थयो॥ कर्म संजोगे नारी॥ वि
षे लंपट ग्रह काज कृये नहीं॥ धरीने वेष संन्यासना
एवा कई अपार रे॥ संगीनी श्रद्धाने हरता॥ जग
मां॥ ३॥ साचा ब्रह्मज्ञानी संन्यासी॥ कोईक
विरला संत॥ दर्शन दुर्लभ देवने तेनुं॥ आगम
गाय अनंत॥ कहे लाल पर पोतानुं रो कल्या-

ए। कदी नथि करता ॥जगमां॥७॥ ॥पद॥२१
॥ ॥रागकाफी॥ ॥साच्यो ज्ञानी सूर
रे॥ अंतरनुं अज्ञान करे॥ कुबधथी रहे दूररे॥ के-
ते हरी हरदे धरे॥साच्यो॥टेक॥ जक्त स्वप्न सम गु
णुं ज्ञाने जेम॥ जळमां लूण समी जाय॥ चिदानंद
सिंधुमां रमे तेमा॥ ते हरी रमे जगमांय॥ जे करमे कु
थणीने रे॥ द्वैतपणु दूर करे॥साच्यो॥१॥ चंचळ चि-
त चंचळ तातणी॥ चैतन थई थयुं चिदाकार॥ देह
छतां विदेह थयाते॥ सीदने जेमे संसार॥ विषय
ना वियोगी रे॥ विवेकी नीरजे वियरे॥साच्यो॥२॥
रा पोताना सुखनी पोते कहो॥ केम करीने करथा
ता॥ मीसरी कुणनो स्वाद समजीने मा॥ मूंगो म
न मुसकात॥ ओम समजी कोई संतरे॥ अंतरमां
आनंद लरे॥ साच्यो॥३॥ राजरकु गणने थयो
संगा॥ मुक्तके रूपनो संग॥ अति अज्ञान रज्युं
अंतरनुं॥ सूदीये नाठ्यो तेगा॥ कहे साल जेवा
कोईरे॥ मिथ्याज्ञानी अनेक रे॥ साच्यो ज्ञानी ए
का॥ ॥पद॥२२॥ ॥रागकाफी॥ ॥
पूरा प्रेमीनो रंगरे॥ चीन्ते चढ्यो नहि ऊतरे
॥ अंतरमां सुख अभंगरे॥ कुब्रह्म छुं अवुं रीदे
ऊपेरे॥ पूरा प्रेमी॥टेक॥ मे समीने कही कर्म संजो
गा॥ सो लांघण छे धाय॥ संकट सघणुं सहे रे प

हीरे॥ खूंच्यो घास न आया॥ हीरानी कींमतनो
रे॥ हीरो शुं प्रति उत्तर करे॥ पूरा प्रेमी॥१॥ सा
ध्या केसरा रण संग्रामे॥ केसर जांघीने ज्यास-
न्मुख मार सहे रीपुनो॥ पाछा पग न भराया॥ शू-
रा पोतानी श्लाघा रे॥ डोंगर केम करता फरे॥ पूरा प्रे
मी॥२॥ सतीनुं सत्य थयुं उतरे नहीं॥ उतरे
नहि शृंगारा॥ सकुटुंबने ल्यातां सती पोते॥ पडे
लई अग्नि मोझार॥ कोटीक उपाये रे॥ सती केम
पाछी घर मां फरे॥ पूरा प्रेमी॥३॥ प्रेमी प्रेमी पोका
र करे पण॥ प्रेमी नहि परखाया॥ प्रेमीने कांई नेम
नहि कहो॥ केम करीने ओळखाय, जालतां नजरे
ज्यारे॥ अंतरमां ओळखीने ए॥ पूरा प्रेमी

॥४॥ ॥पद॥२७॥ ॥समाप्तं॥ ॥

अथ सुदामाजीनां पद लिख्यते॥ ॥राग
काफी॥ ॥सुदामानी नारी रे॥ पोतानी
पीउ पतिने कहे॥ संसारी दुःख संभारीरे॥ आं-
खे आंसू धार वहे॥ सुदामानी॥टेक॥ लाल परीध
रि लीधुं वृत्ति करी॥ संतोष्यां में आणा॥ यत्न क
रि करि गृह गृह फरि फिरि॥ कष्टे काप्यो काळ॥ दीन दी
न क्षुधानुं रे, दुःख दुःख आण सहे॥ सुदामानी॥१॥
॥ वण लरि लरि सेवा करि करिने॥ मान मुकीने
मनमां॥ व्याकुळ थई थई संकट सहि सहि॥ करगाइण

लावि अन्न।। पिलागे वेंथी आप्युं रे ।।तथापी रा
ते रहतां रह्या सुदामानी ।। २ ।। दीन थई मागे पण
नथ मा।। नथि मणतुं हवे अन्न।। अन्न विना जा
णइने पाणका।। विति गया जे दन्न।। कन्द मूळ फळ
र।।जी म्यारां जाणइ ज्यांथी लह्या सुदामानी।।३
।।लणथी फळ केम रणे मुलमन जणे।। कुंजीयां दे
खी प्राण।।सुजनी वात गई वीसरी जकु।।
दीनदीन थाय जे हाल।।लाजनी प्रलु पासें रो
जरे नसो तो कुःज जेहा।। सुदामानी।। ४।। ।।
पदा।। ।।सती पतिनी पासे रे।।कहे छे क
रपोकारी।।आविने अवासें रे।।नम्र थईने नारी।।
सतीपतिनी।।टेक।।स्वामी साल्यो विचार करोल
मी।। अंतर आणि विवेक।।घरमां धातु पात्र नथि।।
नथि सणीयुं साल्लु अेक।। मृत्तिका पात्र करी गात्रे
।।सरवे लणनां अकारी।।सतीपतिनी।।१।।श्री
कृ नाथि अनाथि नाथि नित निराधार आधारा।।ते
नी सायें स्वामी तमारे।।साप्यो मित्राचार।।म
टे भणवा संघाथे रे।।वाले वारे कहु विस्तारी।।स
तीपतिनी।।२।। लईने लहु पतिने लाग्यो।। जेदी
नानाथि दयाळ।।वेगें वीलारने प्रीति प्रकारी।।प्री
त तणा प्रतिपाळ।।दासनी पूरे आशा।।दारी
न कुःजना दारी।।सतीपतिनी।।३।।दरीनमा

નથી દુઃખ કરશો ॥ નહિકે કહેવું પડે કાંઈ લેરી ॥ ઘર
ઘર વાસી ખૂરણ પ્રક્રુશી ॥ અંતરની જાણે અશેષ
॥ સાહેબના પ્રતિપાળ રે ॥ ગુણધારી હરિ ગીરધારી
॥ સતીપતિની ॥ ૪ ॥ ॥ પદ ॥ ૨ ॥ ॥
રાગ કાફી ॥ ॥ સુધર્મો સ્વામી વાત રે ॥ ક
હેછે રૂડી રીત કથી ॥ સતી સાહેબ સાસાત રે ॥
જવાનું કાંઈ કારણ નથી ॥ સુધર્મો ॥ ટેક ॥ અંતર
જામી અજાણ નથી ॥ તું જેવું વહેછે નાથ ॥ તેના
અર્થ તણો તું મનમાં ॥ પેગે કરને વિચાર ॥ ગિર
અંતરમાં સંભારરે ॥ ગઈ છે કુતારી ગતી ॥ સુ
ધર્મો ॥ ૧ ॥ ગર્ભમાં અર્ભક તેને ॥ તણે કહો કો
ણ આપે અન્ન ॥ પાળણ પોષણ કરે પ્રભુ તેનું ॥ એ
વું સમજી મન્ન ॥ જુઠું જ લ મુકીરે ॥ વિશ્વાસે વ
ળગી રેહેને સતી ॥ સુધર્મો ॥ ૨ ॥ જેવું સમજી
ઊદ્યમ તજી ॥ મનમાં ધરવો સંતોષ ॥ સંતોષી
ના મનમાં વસે સહુ ॥ સુખ સંપતીનો કોષ ॥ દુ
ખેથી દીન દીન થાય રે ॥ રસીક રાધાવરમાં રતિ ॥
સુધર્મો ॥ ૩ ॥ સુખમાં શ્યામ તણું સહુ સેજો ॥ ભૂ
લીલ જન ન્યાય ॥ વિષેમાં વહિ મનમથ વસનમ
નમેઘ ॥ દુઃખ રીયામાં હિ ડુજાય ॥ સાહેબનો પ્ર
ભુ પોતે રે ॥ જાણે છે વાત રતિરતિ ॥ સુધર્મો ॥
॥ ૪ ॥ ॥ પદ ॥ ૩ ॥ ॥ રાગ કાફી ॥ ॥

अंतरजामीये जाण्युं रे ॥ अंतरमां वीचार करी ॥
दुःख जापीने थीर थाप्युं रे ॥ चरणमां चीत धरी ॥
अंतरजामी जो टेक ॥ दुःख देखीने दीन पणुं नी
॥ सुख देखीने रीझवुं मन ॥ सुख दुःख देह सं-
गाथी समजो ॥ जेम कांई रजनी दन ॥ गति
कर्मनी गहलीरे रे ॥ विवेकीने पण जाय विसरी ॥
अंतरजामी ॥१॥ कर्म करे छे जीव प्राणीनो ॥ क-
र्म करे प्रतिपाळ ॥ करीकरी जन्म मरण आपीने ॥
अपडावे अतिकाळ ॥ कर्मना प्रेरक प्रभु नारे ॥ आ-
शय ने रे कहुं अनूसरी ॥ अंतरजामीये ॥२॥ जा-
णे छे अलजे सौ सघणी ॥ अंतरनी सकु वात
॥ कह्या पाखे संकट सकु हरशे ॥ व्यर्थ उद्वेग मस-
साता ॥ समजीने अंतर समधुं रे ॥ दयाळु दुःख
हरशे हरी ॥ अंतरजामीये ॥३॥ मीत्र पासे म-
न मांन मुकीने ॥ मागवुं मरण समान ॥ धीक
मन धीक तन धीक छे लक्षण ॥ धीक वाणि वदवा-
ण ॥ लालना प्रभु पासे रे ॥ जाचवाने मन जय डरी
॥ अंतरजामीये ॥४॥ ॥पद॥४॥ ॥
विवेकनि वात रे ॥ जसी कहो छो जरता ॥ दुःख
मां वितेदीन रात रे ॥ तेनो करता नथी विचार ॥
विवेक ॥ टेक ॥ तमे वारवार कहो छो ॥ अंतरजामी
कांई नथी अजाण ॥ तो नहीं पडे जाण्युं कह्या पति

पासे ॥ नहि वदविपरे दीनवाण ॥ भीजनामननी
जाणीरे ॥ आपरी सुख अपार ॥ विवेक ॥ ३ ॥ विश्वा
स सरीखी वात करे केम ॥ सुधा अग्निओ जाय ॥
जळजण कीधाथी कहो केम ठरी ॥ जळनी पीपास
जाय ॥ जूरजशुं पडीओरे ॥ खबर नथी आधारा ॥
विवेक ॥ २ ॥ कल्पवृक्षना पासे वसे तेने ॥ सघळी
वस्तु पमाय ॥ अग्निना संगीनी सेवा रीत ज्य-
था जकु जया ॥ अमृतना आहारीनेरे ॥ जमकिंक
रनो केम होय त्रास ॥ विवेक ॥ ३ ॥ जेमहुं जदाणी
दूदमे नहि तेने ॥ जेने हरिथी हेतायारा ॥ जेथुं स
मजी वेगे सधावो ॥ हरि निराधार आधार ॥ ज्ञान
ना अंतर जामीरे ॥ वणकीधे करशे कुंजपार ॥ वि
वेक ॥ ४ ॥ ॥ पद ॥ ५ ॥ ॥ राग काफी ॥
॥ ॥ सांभळजो कुंसाधीरे ॥ समजण
नो सार ॥ जनानांदनो जल्यासीरे ॥ उद्यम
नो नथी अधिकार ॥ सांभळजो ॥ टेक ॥ पूर्वकर्म सं
जोगे सरज्युं ॥ तन त्रिया सुत वित्त धाम ॥ जेण
ईच्छित आवे ने जाय ॥ जेम रजनी दिन जाम ॥
जेथुं समजी घनश्यामरे ॥ साधे समरूं वारवार ॥
॥ सांभळजो ॥ १ ॥ कुत्सित कर्म तणुं फळ जगमां ॥
दुःख दाणीर अपार ॥ समर्थीन कर्म तणुं फळ ज
गमां ॥ सुख संपति घन तणां ॥ राणी त्य जावे ने

न्यचरे॥कर्मनी गति अपार॥सांभळने॥२॥
आपणने पण पूर्व कर्म,अनूसारे आ संसार॥
प्राप्त थयुं पूरणरीते कांई॥ दुःख दाणीमे अपार
॥माटे समजने करयोरे॥संतोष अमृतनो आ
हार॥ सांभळने॥३॥धीरज धारी दुःख विसा
री॥अंतर आणी विश्वास॥श्वासोश्वासे
श्याम संभारी॥ पूरे अंतर आश॥ लालनो प्र-
भुआपेरे॥लक्ष्मि ये रिधसिध भंडार॥सांभ
ळने॥४॥ ॥पद॥६॥ ॥रागकाफी॥
॥ ॥स्वामी तमे तो साचीरे॥विवेकनीवा
तकही॥ मारीतो मती काचीरे॥ रंचक नथी र-
हिये रही॥स्वामी॥टेक॥अन्नविना कहो तन
रहे केम॥ केम करी धरे मन धीर॥अन्न विनाजं
र्ठ यात रूपे नहीं॥अन्ननुं बांध्युं शरीर॥अन्न
माटे अर्थ डायरे॥ दीश प्रदेश ग्रही॥ स्वामी॥१॥
सर्व शरीर धारीनो सरज्यो॥अनुक्रम विधिये
आहार॥ आहार विना केम धर्म ध्यान रहे॥आ
हार विना श्यो विचार॥ वधार्यां रूपां विंजन रे॥
लवण विना रूपे नहि॥स्वामी॥२॥ आहार विना
प्रीते अंतर मां॥ प्रभुनुं भजन न थाय॥ आहार
विना आपण जाणका॥प्राण वकु अकुळाय॥
रांकने रडतां देखीशे॥आवे छे आंखे आंसु वही

॥સ્વામી૦॥૩॥મોટે મનમાં વિચાર કરીને॥કરૂણાલા
વો કંથ॥કૈયે કોગર જાસે નહીં નથી॥ નિષ્ફળ હરિ
નો પંથ॥લાલનો પ્રભુ દયાળ રે॥ દારીદ્ર દુઃખ નાખે
દહી॥સ્વામી૦॥૪॥ ॥પદ॥૭॥ ॥રાગ સારંગ
॥ ॥સુદામા વિપ્ર ઉર અંતરમાં ઉંડો કરે છે
વિચાર॥ પીતવી ને પીતઃ જવું પડશે જદુપતિ પાસે નિ
રધાર॥ સુદામા વિપ્ર॥ટેક॥ કુ અજાણનો શો દોષ
સકુ॥જાણ રડતાં દેખી રડે છે જદુ॥ એનું દુઃખ દેખી
નથી જાતું સહ્યું॥સુદામા૦॥૧॥ એવું ચિંતવિ કહે સુ-
દામો દાસ॥ ત્યજ ઘૂન પ્રભુ પૂરશે આશ॥ કહ્યો લેઠ
રી ઘણું જદુપતિ પાસ॥સુદામા૦॥૨॥ શ્રીકૃષ્ણને સુત
સમુદાય જદુ॥ રાક કરી આવા માગે સકુ॥ તેના પ્ર-
ત્યે ઉત્તર કહોરીું કહું॥સુદામા વિપ્ર॥૩॥ એવું સુણી
નઈ પાડોશણ પાસ॥ લઈ આપી પૂરો મનઆશ॥
તેણે તાંદુલ આપ્યા આણી ઉલ્લાસ॥સુદામા૦॥૪॥
લેઈ શીઘ્ર સુધારી શ્વેત કરી॥ બાંધ્યાં જીર્ણ વસ્ત્ર ઉ
પરા ઉપરી॥ ચાલ્યા વિપ્ર તે નિ હૃદયે ધરી॥ સુદા
મા૦॥૫॥ વેગે પોહોંચ્યા દ્વારામતિમાં જઈ॥ તહાં કૃષ્ણ કૃ
પાળુને અજર ગઈ॥ ઉઠ્યા લાલનો પ્રભુ મન પ્રસં
ન થઈ॥સુદામા૦॥૬॥ ॥પદ॥૮॥ ॥રાગ-
સારંગ॥ ॥ધાય જદુરાય॥ મારો મીત્ર સુદામો
સનેહિ સહાય॥ જેમ કહે તાંજય॥ચરણ ત્રાંણ ત-

जे पोते ऊघाडे पाया॥ धाया॥टेक॥ पज्या मीत्रसुद-
दामाने पाया॥ मारी जान पवित्र थई काया॥ जे पय
रो ग्रह पावन थाया॥ धाया॥१॥ पंधराव्या पूरण
प्रीत करी॥ जेसाख्या सुख सज्जन ऊपरी॥ नीज
हाथे पायु ढोळे हरी॥ धाया॥२॥ नाना विध साम-
ग्रीसारा॥ लेवरावी करी जकु मनुहारा॥ अंतर मांथी
त छे अपारा॥ धाया॥३॥ जकु पूर्व प्रसंगनी वात करी
॥ परस्पर प्रीति करी ऊच्चरी॥ संतोष्या मीत्र ग्रही
धर्म धरी॥ धाया॥४॥ घणुं हेत करे गिरधर लाला॥ऊ
लरी आवे अंतर वाला॥ करे यमर लालनो प्रतिपाळ
॥ धाया॥५॥ ॥पद॥५०॥ ॥राग सारंग॥ ॥
त्रिलोकी नाथ॥ ऊत्पत्ति स्थिति लय करता प्रभु सा
क्षात॥ साथे मित्रनी साथे॥ मन प्रति आपणी गु
रे छे परस्पर वात॥ त्रिलोकी॥टेक॥ जुवो आपणे ले
गा रह्या पाठशा॥ ऋषी संदीप गुरुने आवास॥ लेगा
ल्हणता करीने कुह्लास॥ त्रिलोकी॥१॥ लीक्षा माटे
लेगा फरता॥ सरवे लोकन साथे करता॥ मुज वेद
धुन्य जकु ऊचरता॥ त्रिलोकी॥२॥ गोराणीने आ
ज्ञा धरि मनमां॥ गया काष्ट लेवा सरवे वनमां॥ घ
णो सूर्यनो ताप तप्यो तनमां॥ त्रिलोकी॥३॥ आ
पण वाद्य वढि जकु दुर गया॥ घणा श्रम थी शरीर श्र
मित थया॥ बांधी काष्टना लारा शीरे वह्या॥ त्रिलो

डीश॥ ॥ तकरीतणवायु वायाघणाघणो मे-
घथयो रंग रहीन मण॥ ॥ प्रमकरा प्रेम केविनती
तणा॥ त्रिलोकी॥ पा॥ सकुने मारगनी गति विस
रीश॥ जोणि ज्ञादयागु रुम्रेकरी करी॥ खांप्या रुदीये
नयणेने हलशी॥ त्रिलोकी॥ ६॥ घेरतेडी लाव्याके
तकरी॥ गोरांणीयेकुणी मागी करी॥ ज्ञापी निरा
जेथी दुरप्रसरी॥ त्रिलोकी॥ ७॥ लण्यो विद्या तुम
पासे ज्ञात॥ प्रीत विसरतीनथी दीनरात॥ रसव
स थई रसालीकरे वात॥ त्रिलोकी॥ ८॥ कुरिवाल
यंधारीने वालघणी॥ कुंतोछुं लाहारो मित्रराणी
॥ वारंवार कहे लाल वीरलो घणी॥ त्रिलोकी॥ ९॥

॥ ॥ पदतीसा॥ ॥ रागसारंग॥ ॥ श्रीकृ-
ष्णकृपाल॥ दासतणुंदुःखहरवा येतुरसुलंण॥
वेगेंकरीवाल॥ मित्रसुदामानी साथे वदेवाण॥
टेक॥ मनवांछितफलपाम्यो ज्ञाज॥ भज्यामित्र
तमे सुजन॥ साम्याकहो लेटरी लाव्याहीलमा
ल॥ श्रीकृष्ण॥ १॥ ईत्यादिक मीष्टवदी वाणी॥ रुक
मित्रना मननीवात जाणी॥ दीनानाथे लीधातांदु
लतांणी॥ श्रीकृष्ण॥ २॥ ज्ञुक्तिथी छोडे लगडीबी
॥ वस्तु जेयाने ज्ञलधरी॥ पेहेलां मीधरां निहाल्यां
दसविरी॥ श्रीकृष्ण॥ ३॥ पछेतांदुलनलि धानित
दृथी॥ रुकुमणीये रह्यो ज्ञमति साथ॥ श्रीमुजेजो-

ल्यो लक्ष्मीनाथ॥ श्रीकृष्ण॥३॥ अेनो स्वाद कुंके
नाजेवो॥ नथी आरोग्यो जगमां अेवो॥ नथी पाम्यो
जेथी मीठो मेवो॥ श्रीकृष्ण॥४॥ पाथिया जयकर प्रीति
करी ध्यापी॥ लेई मुष्टि अेक मुखमां आपी॥ नाख्युं दा-
रनुं दुःख दाणीने कापी॥ श्रीकृष्ण॥५॥ गई छापरी
ऊडी आकारी॥ थया सप्त भूमिना आवास॥ जड-
त मणी ज्योत ना प्रकाश॥ श्रीकृष्ण॥६॥ थई रुक्म
णी सरखी विप्रनारी॥ थया राज सरीखा सहु मा-
र॥ श्रीकृष्णगृह सरख्युं घरबार॥ श्रीकृष्ण॥७॥
तहां अष्ट सिद्धि नव निधि थापी॥ सीखुं मां हरियें
हे ते आपी॥ लाल प्रभुये दुःख नाख्युं कापी॥ श्रीकृष्ण
॥८॥ ॥पद॥५४॥ ॥राग सारंग॥ ॥
सुदामा विप्र॥ विदाय थई आव्या वेगे निज गाम॥
त्यां लगे हरि हीता॥ मुखमां लेता निर्मल हरिनुं ना-
म॥ सुदामा विप्र॥टेक॥ वैभव जोई विस्मय थयुं मं-
न॥ तहां नारीनुं नीरख्युं तन॥ पछे जोकणीने थ-
या प्रसन्न॥ सुदामा विप्र॥१॥ रुं वैभव वरणुं तेह-
तणुं॥ सुख संपतीमां कांई छे नमणुं॥ इन्द्रासन-
थी छे अधिकु घणुं॥ सुदामा॥२॥ ऋषी ऋषीकेशनुं
भजन करे॥ हृदे ध्यान हरिनुं हरदे धरे॥ वीष सरी-
खुं विषय सुख परहरे॥ सुदामा विप्र॥३॥ जेम ज-
लमां जल रहे छे सदा॥ पण नथी जलनो संबंधक-

दा॥ गृहमां रहे गृहनी नथी आपदा॥ सूदामा विप्र
॥४॥ नीत गृहमां मुक्तपणेथी रहे॥ एनो महिमा
मूढमति शुं लहे॥ लाल संसेपे विस्तारिने कहे॥
सूदामा विप्र॥५॥ ॥पद ५२॥ ॥अथ
विनति विषेनां पद॥ ॥राग काफी॥ ॥
मायामोह निवारोरे, माधवदास हूं तारो॥ माया॥
दीनबंधु दुःख दमी दासनो॥ वेगे करोने लव पारो रे॥ मा
धवदास हूं तारो॥ टेक॥ अन्य नथी आश्रय श्रीहरि
मारे॥ तुज विना दीन दयाळ॥ माटे कृपा करीने कृपा
निधि॥ मुकावो जक्त जंजाळरे॥ माधव॥१॥ काम
क्रोध मद लोभ मोह लया॥ संशय शोक अहंकारे॥ मा
याकृत दुर्गुण हरि मुजने॥ गुप्त रीते मारे मारे रे॥
माधव॥२॥ सर्व संमति करीने परस्पर॥ रीति लज्ज
छि करे नारी॥ एकवेरा ज करे अंतरमां॥ रीति सुज
नी रीत आरीरे॥ माधव॥३॥ जाणो छो अंतरजामी
तो॥ अधिक कहे शुं थाय॥ पण दुर्गुणकृत दुःख दमी मा
रु॥ अंतर अति अकळायरे॥ माधव॥४॥ माटे म
धुसूदन आपो तमे॥ विचारी भक्ति विशाळ॥ रीत ल
स्तुष्टि अंतर थापीने॥ लालनी करो प्रतिपाळरे॥
माधव॥५॥ ॥पद ५३॥ ॥दासनुं दुःख नि
वारोरे॥ विठ्ठल जरद विचारो॥ दासनुं॥ त्रिगुणी
तुज माया नव छूटे॥ हठ करीने हूं हार्यो रे॥ विठ्ठल

जरद्धवीचारो ॥टेक॥ स्वप्न सृष्टि सरीखी मायाकृत
॥ सृष्टी मुनेसम आया ॥ पण कर्म जुगल्लीरगे हेन
च्छभू तेथी ॥ करो हेम करीने जगाय रे ॥ वीठ्ठला ॥१॥
यद्यपि स्वप्ननी सृष्टि असत्यपण ॥ स्वप्नमांही
तो पीरा ॥ क्षा कर्मगुण छे सीकृत दुःख ॥ अग्निमां
तपे छे शरीर रे ॥ वीठ्ठला ॥२॥ इत्यादिक दुःख दीर्घ स्व
प्नना ॥ हे पीन दीन धरे धीर ॥ जग्रतनी गति कर्मा
धीन छे ॥ कर्मनी गति गंभीर रे ॥ वीठ्ठला ॥३॥ कर्म ज
डीनुं विष व्याप्युं तेनो ॥ रुगे रगे उपन्यो रोग ॥ सं
तनो सज्जनो संग आपी हरि ॥ रोगनो करो ने वियो
गरे ॥ विठ्ठला ॥४॥ संतसंगे निजगुण अमृतनुं ॥
पान करावो नाथ ॥ जग्रत करि लालनुं दुःख दूर धरि ॥
हेते ग्रहो हरी हाथ रे ॥ वीठ्ठला ॥५॥ ॥पद ॥१०॥ ॥
॥ ॥श्रीपतीशरण मोआरे ॥ पडीने हुं कुं
कुं पोकार ॥ श्रीपतीशरणागतवत्सल सर्वोत्त
म ॥ उतारो भवपार रे ॥ पडीने ॥टेक॥ भवभय
भुजंग डस्यो ज्यारे तेनो ॥ व्याप्यो विषयविकार ॥
लेहेर अनर्थ उठे अंतरमां ॥ मृत्युमोह अंधकार
रे ॥ पडीने हुं ॥१॥ जेथी जुग जुग जन्म मरणनुं ॥
संकट सहु संसार ॥ जे दुःख अंतर अविलोकी थ
थी ॥ आतुर कउं हुं उच्चार रे ॥ पडीने हुं ॥२॥ माटे कर-
री कहुं छुं कृपानिधि ॥ वेगे करो हरि यार ॥३॥ निजनाद

अनुलव अमृतनो ॥ आपो मुजने आहार रे ॥ पडीने
हूं ॥३॥ तो मुज प्राण जये पुरुषोत्तम ॥ अन्य नथी उप
चार ॥ कृपा करी दास करो निज जनपर ॥ लाल अड्यो नि-
रधार रे ॥ पडीने हूं करुं छुं पोकार ॥४॥ ॥ पद ॥ ३॥
॥ ॥ जेयो तेयो लालदास रे ॥ पूरो प्रभु अंतर
आस ॥ जेवो तेवो ॥ मारे सुख संपति सुखकर ॥
वेगे करोने विनाश रे ॥ पूरो प्रभु ॥ टेक ॥ अ सुख नामा
ट संकट सहु ॥ जीव सदा दुःख पाया ॥ लख्यो लखवडि
ध्यमरणांतर ॥ कष्ट कहुं न वन्यथरे ॥ पूरो प्रभु ॥१॥
॥ भ्रांति सभय संकलेश सदा संरक्षण रोय अपा
र ॥ और अग्नि नृप विघ्न तथा तुर ॥ उर चिंता अं
गार रे ॥ पूरो प्रभु ॥२॥ वियोग सभय व्याकुल पे
र्ठ करूं ॥ रीशा रे निःश्वास ॥ नारी सुत जंघु सं
सारी ॥ अतिशय करे उपहास रे ॥ पूरो प्रभु ॥३॥
मारे निष्किंचन निश्चल पद ॥ आश्रय सुख तजउर
॥ निर्वेद आपो हरी अमने ॥ लालदास निरधार रे
॥ पूरो प्रभु ॥४॥ ॥ पद ॥४॥ ॥ समाप्तम् ॥ ॥

मननी प्रीत वीषे ॥ ॥ राग काफी ॥ ॥

धन्य मन तारी रीत रे ॥ पीयरीयुं पूरण प्रीत ॥ ध
न्यमन ॥ मन मीने प्रीतम जल साथे ॥ बांधी
प्रीत अजीत रे ॥ पीयरीयुं ॥ टेक ॥ शीतल सुख छाया
मां पण ॥ मन मीन न पामे सुख ॥ अधिक अधि

ऽ अंतर अरुणाईनो। हंसे हीन दीनहुः ओरे।पी
यरंगु।।१।। स्वर्गामृत जानंद पयमांपण।। येन
नलहे मन मीन।। प्रीतम लण साथे जांघ्योनि
ता प्राणरहे लवलीन रे।।पीयरंगु।।२।।केलि
नल कुरीझोई पण।।ऊपले नहि आनंद।। अने
ऊपाये छुटे नहि ऊद।। प्रीतमपाणीनो छंद रे।।पी
यरंगु।।३।।सती सूर सरिषी लगनी दृढ।।घरी
मनतें मन माया।। तन धन प्राण पीताल्याना
सूत।। दृष्टे न दे जे ऊंयरे।।पीयरंगु।।४।।केसरी
लांघण कोटी करे पण।। लूछ्यो जाय न घास।।
लाल अवी हरि लक्ति ऊलीला।। ऊदीनकरे तन आ
शरे।।पीयरंगु।।५।।   ।।पद।।७।।   ।।संत सं
गवीषे।।   ।।रागकाफी।।   ।।सायासंतनो
संगरे।। कर मन ऊपर तलने।।सायासंतनो।।टेक
।। कुल्मष कोटी जन्मनां ऊपी।।ऊर ऊपजवेऊमं
गरे।। कर मन ऊपरा।।१।। सेहेले रांक शुणावी
समावे।।तृष्णा रूपी तरंगरे।।करमन।।२।।अं
तरनु अज्ञान अण शुकरी।। अणगो करीं अनंग
रे।।करमन।।३।। लक्ति लावे लजनानंद ऊरमां।।
आपसे तुल ने अलंकारे।।करमन।।४।।लालप्रलु
पर ऊपजे अथी।। अनुरक्ति अंग अंगरे।।कर
मन।।५।।   ।।पद।।८।।   ।।सेवने संत

सुलणरे, दृढ मनभाव धरीने ॥ सेवने संत सुजा-
ण ॥ टेक ॥ वारवार नर तन नहि आवे ॥ मूर्ख चेत
अजाणरे ॥ दृढ मन ॥ १ ॥ जन्म मरणनो भयभागी
ने ॥ चूकावे चार खाणरे ॥ दृढ मन ॥ २ ॥ जम किंकरनो
मार मूकावे ॥ दाणी न मागे दाणरे ॥ दृढ मन ॥ ३ ॥
अंतरमां अज्ञान थावे ॥ भासे ज्ञाननो भाणरे ॥
दृढ मन ॥ ४ ॥ संतनी साथे स्नेह लाव तूं ॥ करने मन
कर्म वाणरे ॥ दृढ मन भाव धरीने ॥ ५ ॥ ॥ पद ॥ ७२ ॥
राग काफी ॥ ॥ नीत सत संग करोरे ॥ संतने शी
श समर्पी, नीत सतसंग करो ॥ टेक ॥ मन कर्म व-
चने मान मूकीने ॥ आज्ञामां अनुसरोरे ॥ संतने
शीश ॥ १ ॥ कीट भृंगी दृष्टांत देखी दिल ॥ दृढ मन
ध्यान धरोरे ॥ संतने शीश ॥ २ ॥ अंतर टाळी निरंत
र थई मन ॥ पक्षने परहरोरे ॥ संतने शीश ॥ ३ ॥ स्था
म स्वरूपी संतना शब्दो ॥ सुणी भवसिंधु तरोरे
॥ संतने शीश ॥ ४ ॥ लाल प्रभुनी साथे लगन धरो ॥
शीद जन्मो मरोरे ॥ संतने शीश ॥ ५ ॥ ॥ पद ॥ ७३
॥ ॥ राग काफी ॥ ॥ करदामां कर हेतरे ॥ हरी
जन हरी सरी जाणी ॥ करदामां कर हेत ॥ टेक ॥ ॥
ततक्षण मननी टेव मुकावी ॥ सेहेजे करशो स्वेतरे
हरिजन हरी ॥ १ ॥ स्वारथ रहीत सर्वना बंधु ॥ ओ
ळखीलेने अचेतरे ॥ हरीजन हरी ॥ २ ॥ शरणागत

ना उर अंतरमां ॥ अलख दान नीत देतरे ॥ हरीजन
हरी ॥३॥ अचळ बोध अंतरमां आपी ॥ सद्गु संशय
हरि लेतरे ॥ हरीजन हरी ॥४॥ कहे लाल अवसर न-
ही आवे ॥ चेती राखे तो चेतरे ॥ हरीजन हरीसरीखा
गणी ॥ पे ॥ ॥पद॥४॥ समाप्तम् ॥ ॥
डर विषे तथा बोधविषे ॥ ॥राग काफी॥ ॥
डरीये तो हरीथी डरीयेरे ॥ डरीने चालो ॥ ॥ डरीये
तो हरीथी डरीये ॥ डरीये तो दुःख देखी डरीये ॥ डरीये
तो पाप पेखी डरीयेरे ॥ डरीने चालो ॥ टेक ॥ ॥ ते तारे
मन मान्युं छानुं ॥ धर्मे खोळी काढ्यूं पानुं ॥ तेने देखी
ने थरथरीयेरे ॥ डरीने चालो ॥१॥ जेने तूं मानेछे सा-
रुं ॥ ते तो तन साथे जाशुं ॥ जेनो अंहकार शाने क-
रीयेरे ॥ डरीने चालो ॥२॥ मनने मानी लीधुं सुख ॥
वीचारी जोतां छे दुःख ॥ जेथाने रीद अनुसरीयेरे
॥ डरीने चालो ॥३॥ विषय सुख लागे सारुं ॥ तत्व
ज्ञान हरे तारुं ॥ तेनुं ध्यान नहि धरीयेरे ॥ डरीने
चालो ॥४॥ लाल नीत्य नाम लीजे ॥ सेवा घनश्या
म कीजे ॥ तेथी भवसागर तरीयेरे ॥ डरीने चालो ॥ पे ॥
॥ ॥पद॥ ॥राग काफी॥ ॥ भजीये तो
घनश्याम भजीयेरे ॥ भजन्यो भावे ॥ भजीये तो
घनश्याम भजीये ॥ भजीये तो नीत नाम भजीये
॥ भजीये तो जगराम भजीयेरे ॥ भजन्यो भावे ॥

टेकाने ने तूं देखे छे मोटो ॥ अरे हरु ते छे खोटो ॥ ने
वो पाणीनो परपोटोरे ॥ लख्यो लावो ॥ १ ॥ ते मा
टे हरीनाम लेवुं ॥ खरूं खोटुं नथी केहेवुं ॥ सुख दुःख
सहु सहेवुंरे ॥ लख्यो लावो ॥ २ ॥ स्नेह तो साचा
थी करीये ॥ देखी परनो दोष डरीये ॥ पोतानां दोष थ
रथरीयेरे ॥ लख्यो लावो ॥ ३ ॥ संसारमां सार
नथी ॥ वारे वारे कहुं कथी ॥ तेनें शीद मरे मथीरे ॥
लख्यो लावो ॥ ४ ॥ लाल प्रेमरस पीने ॥ दीनबंध
दास दीले ॥ ध्यान हरीनुं धरीनेरे ॥ लख्यो लावो ॥
५ ॥ पद ॥ २ ॥ राग काफी ॥ करिये तो
सुलकाम करीयेरे, करील्यो प्राणी ॥ करीये तो सुल
काम करीये ॥ करीये तो हरीधाम करीये ॥ करीये तो से
वा श्याम करीयेरे, करील्यो प्राणी ॥ टेक ॥ रत्न नर
देह खोयो ॥ वीषे मांही तें वगोयो ॥ अंते दुःख दे
खी रोयोरे ॥ करील्यो प्राणी ॥ १ ॥ रे हरी तारी ना
री प्यारी ॥ दुःखनी वेणाये न्यारी ॥ अरे जाणो ज
छे खारीरे ॥ करील्यो प्राणी ॥ २ ॥ सुत मात ता
त तारां ॥ सुखमां दीसे छे सारां ॥ अंते दुःखनां दे
नारांरे ॥ करील्यो प्राणी ॥ ३ ॥ हरतां फरतां हरी
नाम ॥ लेतां शुं बेसे छे दाम ॥ अेथी तारूं थाशे
कामरे ॥ करील्यो प्राणी ॥ ४ ॥ आछे शीखामण
सारी ॥ हृदेमां राखीले धारी ॥ भणशे लाल नो

जीहारीरे ॥ करीरन्यो प्राणी ॥ ५ ॥ ॥ पद ॥ ३ ॥
समाप्तम् ॥ ॥ अथ शिक्षा तथा ज्ञान सहीत वीनती विषे ॥ ॥ राग सोरठ ॥ ॥
तें तो घरमां घर कीधुं वालम ॥ ए राग ॥ ॥
रट रे रणछोड रंगीलो रंगे ॥ रणतोछोड वीसरीरे ॥ रट रणछोड ॥ टेक ॥ मंद मोह मती मरि जवा ॥ अलजेलो अंतरमां आवे ॥ संशय शोक समावे ॥ भक्ति दृढ लावरीरे ॥ रट रणछोड ॥ १ ॥ रवी रजनीने दूर करे जेम ॥ ओक्रम मणे तन तिमिर टण तेम ॥ अनुभव अनवाळुं एम ॥ उरदीप जलवरीरे ॥ रट रणछोड ॥ २ ॥ सोमे संग संतनो आपी ॥ कल्मष कोटी नाखरी कापी ॥ उ दृढव मूळ थापी ॥ ज्ञान समजवरीरे ॥ रट रणछोड ॥ ३ ॥ लोभ लवनी लालन्ति लुलावी ॥ तत्पद त्वंपद त्याग करावी ॥ असिपद आनंद आवी ॥ उर जीलशावरीरे ॥ रट रणछोड ॥ ४ ॥ सुद्ध बुध्याधिर्धींस जणा ॥ कपिन शोक कोई आतम निष्ठना ॥ लौतम पद निश्चल ॥ दिव्यदृष्टें देजावरीरे ॥ रट रणछोड ॥ ५ ॥ गुरु रूपे गुरु गती अगम अगाधा ॥ सेहेने समजावे श्रुति साधा ॥ अंतर पंथ अबाधा ॥ विवाद वहावरीरे ॥ रट रणछोड ॥ ६ ॥ मुक्ते श्रुतिसंमृति प्रतिपादनः ॥ शान्ति दांति धृति अयन

गम्जाराधना॥ लाल सकल साधना॥ प्रेमीजन
पावशो रे॥ २८ शरण छोडाव॥ ॥पद ४॥ ॥
राग सोरठ॥ ॥मोहन मधुराकृति मधुस्वद-
ननुं॥ दृढ ध्यान धरो रे॥ मोहन मधुराकृति॥ टेक॥
भारत कुत्सित कर्म करी करी॥ जगमां जन्म धर्यो
तें करी करी॥ जोग जाग साधना धरी धरि॥ जन्मनो
नाश करो रे॥ मोहन मधुरा॥१॥ मागरी रे मन
मायामां मोही॥ रत्न सरीखुं नरतन खोई॥ रे
फरी ओ अंते रोई॥ जे जोटो कर्यो रे॥ मोहन
मधुरा॥२॥ पोसें प्रीति नथी प्रभु साथे॥ हाण
घणी कीधी निज हाथे॥ नेहना तांते अनाथे॥ पे-
टमां पर हर्यो रे॥ मोहन मधुरा॥३॥ मोह माह
मांऊ करी रोयो॥ प्राण प्रपंच पापमां प्रोयो॥ जग
पति जुक्ते न जोयो॥ डग डरि नांही जर्यो रे॥ मो
हन मधुरा॥४॥ कागणे कूलिप ज्यो जयकंद॥ उ-
न्मत अज्ञानी मति मंद॥ आत्मानो आनंद विष-
यमां विसर्यो रे॥ मोहन मधुरा॥५॥ चेतरे चीत
चेतीने चालो॥ अट हरि मण यामा रंग ठालो॥
नेह नर करी न्याळो॥ कृति कूडी न करो रे॥ मोहन
मधुरा॥६॥ वैश क वेद वेदांतमां गावे॥ आत्मा
अजर अमर दरशावे॥ सहूमां श्रेष्ठ कहावे॥ क-
ल्पना दूर करो रे॥ मोहन मधुरा॥७॥ जेठज

ननीनठर नहिं आवे॥ध्यानमां तत्वरूपनितध्यावे॥परमानंदपदपावे॥अजेउ अे म अनुसरेरे॥मोहन मधुरा॥८॥ अेषाउ अध्यारोपअपवाद॥वरणे श्रुति स्मृति करी नाद॥आत्मा अपण अजाध॥ जीमंगे जीरमांहि धरोरे॥मोहन मधुरा॥९॥ आवणे समजी रीतिमां समधुं॥ारमणीक हरीपदमां रूपे रमधुं॥हरीकरी नन ने नमधुं॥ नेहेनित नेमधरोरे॥मोहन मधुरा॥१०॥ लादरयेलवनणनिधि लारी॥गोपद तुल्य तत्वने वीचारी॥संशय शोकविसारी॥ वीश्वमां वीचरोरे॥मोहन मधुरा॥११॥ आसोयें थई आनंदनी झेली॥कुमनी कीध्य गई सफुठेली॥ प्रेमेप्रभुसंगखेली॥ वेदमां वीसरोरे॥मोहन मधुरा॥१२॥ प्रतिमासे दीक्षा अतिसारी॥लगनधरी लाले जीध्यावी॥बेहेवैरागे वीचारी॥तापतननाहरोरे॥मोहन मधुरा॥१३॥ ॥पद॥२॥ ॥रागसोरठ॥ ॥ ॥दिलमां श्रीरणछोड रंगीला, दरीनदीजयेरे॥दिलमां श्रीरणछोड॥टेक॥ गदगद कंठे गानकरावो॥ परमानंदजीरमां जीलरावो॥विषयवेग विसरावो॥वांतिकरीजयेरे॥दिलमां॥१॥ निर्गुण सगुण स्वरूपतमारु॥अैक्यरूपे अंतरमां धारु॥वादवीवाद वीसारु॥ अेवुं मनकीजे

येरे॥ दिलमां॥२॥ शास्त्रनी सीधी समज सम
जावी॥ अपंथ पंथमां पाद धरावी॥ तेजनी टेक लु
लावी॥ जरी जोलीजी येरे॥ दिलमां॥३॥ चंचल चि
तनी चोरी मुकावी॥ चैतन रूपनुं ध्यान धरावी॥ ल
वनुं लान लुलावी॥ कुः जहदीजी येरे॥ दिलमां॥४
॥ जे योते वो श्रेलु छुं तारो॥ अलजेला अंतरमां प-
धारो॥ कुडीलासनें मारो॥ शरणे लीजी येरे॥ दि-
लमां॥५॥ ॥पद॥३॥ ॥राग सोरठ॥
सच्चिदानंद सर्वगत स्वामी॥ आनंद आपीयेरे
॥ सच्चिदानंद॥ टेक॥ सद्गुरु संगे शरीर सोधा
वी॥ पंचीकृत पर मन उतरावी॥ साधन चार
सजावी॥ स्थिर मन स्थापीयेरे॥ सच्चिदानंद॥
१॥ श्रुति सिद्धांतना शब्दो सुणावी॥ लागत्या
ग लक्षणा लजावी॥ आत्मरूप समजावी॥ कु-
ट माकु थापीयेरे॥ सच्चिदानंद॥२॥ तुज स्व
रूप नहि सूर्य प्रकाशे॥ नहि अग्नि नहि चंद्र उ-
जासे॥ अंतर दृष्टया ध्यासे॥ अखंड वीर व्यापी
येरे॥ सच्चिदानंद॥३॥ कुणि न शके छे दिगण
बुद्धि जणा॥ टकी न शके मन वृत्ति सएडुं पणा॥ नि
ष्प्रपंच पद निष्कल॥ लालदिल थापीयेरे॥ स
च्चिदानंद॥४॥ ॥पद॥४॥ ॥समाप्तम्
॥ ॥अथ बोध तथा प्रीति विषे॥ ॥प

रागपद॥ ॥अवाश्री हरीने शेना गाय॥अथ
सरवहीजय॥अराग॥ ॥टरे रे रणछोड रं
गीलोस्वामी॥ प्रभु अंतरजामी॥हरे हरे प्रभु अं-
तरजामी॥ जनतांजनसे जब संकट वामी॥आवे
नहिं जांमी॥टरे रे रणछोड॥टेक॥ अतो जोडणा
ने मन लाव्या॥ अणे लीधा लावा॥ हरीने कुण्णा
डाकोरमां आव्या॥ तन ताप समाव्या॥टरे रे र-
णछोड॥१॥ अनी अवी अलौकीक काया॥ सवा
वाले तोलाया॥ लावे गंगा आई जे मन लाया
॥गुण वेद गाया॥टरे रे रणछोड॥२॥ अतो जूत-
णमां नाय्यो सूर॥ लासे लर पूर॥ घूड सरीजा
ने दिल दूर॥ समजे शुं कूर॥टरे रे रणछोड॥३
॥ अनेनूं सुख जाणे विरलो योगी॥ मन जमरो
लोगी॥ पेरण अरविंद सुगंध संजोगी॥ राचे शुं
रोगी॥ टरे रे रणछोड॥४॥ नथि नथि रे अनी
जक्तमां कोई जोड॥ पुरे मन कोड॥ माटे मूकोतमे
मननी होड॥ जरे नावे जोड॥ टरे रे रणछोड॥५
॥ अने श्रुतिरे॥ अ संत नित गाया॥ वेरी रणे
जया॥ तेना सकु पाप संताप समाया॥ सेहे ने
सुख पाया॥ टरे रे रणछोड॥६॥ नथि नथि रे नर
तन नित वारंवार॥ जा अवसर सारा॥ समजी
करो लाल प्रीतम शुं प्यार॥ तज वीरीरनो लारा॥

रहरे रणछोड रंगीलो स्वामी॥७॥ ॥पद॥ ॥ ॥प्रभुरे प्रीतीनाछे प्रतिपाळ॥नटवर नंदलाल॥रीझे रसीयो लेई लाव्यो ज्याला॥ राजे संभाळ॥प्रभुरे प्रीतीना॥टेक॥सजने शुभ कर्म धर्म शुं कीधुं॥अने दान शुं दीधुं॥तेनुं अरपीत हरिहेत लीधुं॥सकु कारज सीधुं॥प्रभु रे॥१॥सबरीकहो वेद शास्त्र शुं जाणे॥जूठां बोर आणे॥तेनो हरि स्वाद श्रीमुखे वखाणे॥ खाधां ते टाणे॥प्रभुरे॥२॥ रहीदासनी भक्त जुवोने विच्यारी॥ध्यो मनमां धारी॥अनुं श्री रुण लीधुं श्रीमुरारी॥हेते हाथे पसारी॥प्रभुरे॥३॥करमांये आच्यार कहो शो साध्यो॥हार द नथि लाध्यो॥अनो हरि प्रीयउ थी हरि बाधो॥जाणे जग जाधो॥प्रभुरे॥४॥ गुणकाना धन नि गति मन न वीच्यारी॥ नीची अनारी॥सी धो मुक्त श्रीरंग मुरारी॥ शिर नीपूं धारी॥प्रभुरे॥५॥कुबजानी शरीराकृति नति कांई सारी॥ थई प्रभुने प्यारी॥रीझ्या रसीयो लेई श्री गि रिधारी॥अनी प्रीत्ति विच्यारी॥प्रभुरे॥६॥नथि नथिरे कस्युं तप तीरथ धाम॥ प्रीतीनुं काम॥सा ये दिल समरो श्री घनस्याम॥लाल प्रभुनुं ना म॥प्रभुरे प्रीतीनाछे प्रत्तिपाळ॥७॥ ॥पद॥

॥२॥ ॥भलुं रे पूरवनी प्रीते पमासे ॥ अंतरट-
ळीजसे ॥ मारे समरो तमो श्वासोश्वासे ॥ सेहेजे सु
ख थासे ॥ भलुं रे पूरवनी ॥३॥ भूपज तजि सुख संप
ति धनधाम ॥ पामीने विराम ॥ वनमां जई समऱ्या
श्रीघनश्याम ॥ मळ्युं अविचळ धाम ॥ भलुं रे पूरवनी
॥४॥ भर्तृ नृपने हति नारी प्यारी ॥ जेनी कृति नति
सारी ॥ तेने नेत्रे जोई मनमां विचारी ॥ थयो वैराग
भारी ॥ भलुं रे पूरवनी ॥५॥ तेने तज्युं राजपाट संसा
र ॥ कुटुंब परिवार ॥ पोते पोताने कऱ्यो धिक्कार ॥ कि
धो ग्रंथे उच्चार ॥ भलुं रे पूरवनी ॥६॥ पिंगळे कहरजनुं
थयुं घन नारी ॥ त्यारे उपज्यो त्रास ॥ दुःख देखी थ-
यो दिलमां उदास ॥ मळ्या श्री अविनाशी ॥ भलुं रे पू
रवनी ॥७॥ पोते लिखुं गीतामां जाण्युं ॥ हृदया-
मां राख्युं ॥ उघडी अंतरमां ज्ञाननी आंख्युं ॥ दुःख
दूरज नाख्युं ॥ भलुं रे पूरवनी ॥८॥ जेने जगमां नृ
पजाणंद जेवा ॥ दीठा नथि एवा ॥ तेने वैराग कीधा
कुया ॥ तज्या मीठा मेवा ॥ भलुं रे पूरव ॥९॥ उष्ट्रनुं
मृत्यु देखी थयो त्रास ॥ तज्यो राजविलास ॥ ग
॥ प्रगट्यो अंतरमां ज्ञानप्रकाश ॥ टळि अंतर
अंधारी ॥ भलुं रे पूरवना ॥१०॥ जे कोई पूरवनी प्रीते
जागे ॥ ते तो तनसुख त्यागे ॥ लालप्रीतम नारंगे
रागे ॥ भवसंकट भागे ॥ भलुं रे पूरवनी ॥११॥ ॥

पद ॥३॥ समाप्तं ॥ ॥ अथ वैराग तथा उपदेश लखि-
तवीनतिवीषे ॥ ॥ राग सामेरी ॥ ॥ जूठा ज-
गमांहीरे जीने जन्म बहु धर्‍यारे ॥ तीर्यनी योनीमां
अनेक प्रकार ॥ कर्म कूडां करीरे कठिक लंडार तलस्यारे ॥ हवे थ-
ई हवे करीने संसार ॥ जूठा जगमांहीरे ॥टेक॥ लक्ष
चोरासीरे फेरा फर्‍यो घणारे ॥ पामर पाम्यो पेरपेरनां
बहु दुःख ॥ वृक्ष थईनेरे वनवन अवतर्‍योरे ॥ सही
घणी शीत आतप वर्षा भूख ॥ जूठा जगमांहीरे ॥१॥
केटलीक वाररे कृमि थयो कूकडोरे ॥ जीव जई जन्म्यो कसा
ईने घेर ॥ तीक्षण शस्त्र थीरे छेद्युं तन ताहरुंरे ॥ पाम
र पापीने मन शेनी मेहेर ॥ जूठा जग ॥२॥ अजसं-
गे राच्योरे अजपती अवतर्‍योरे ॥ चढ्यो जीव घा-
ती यवनने हाथ ॥ ताहरुं तन देजीरे तेने तत्क्षण
हण्योरे ॥ बांधी ऊंध्या पगने नीसुं करी माथ ॥ जूठा
जगा ॥३॥ मूषक थईनेरे मंजारी मुखे पड्योरे ॥ कोई
ये न मुकाव्यो कर्‍यो बहु पोकार ॥ मरकट थईनेरे मूआ
ना हाथे चढ्योरे ॥ गामो गाम नचाव्यो मारीने बहु
मार ॥ जूठा जगा ॥४॥ जे दुःख सिंधु तरवारे तुजने कृ-
पा करीरे ॥ करीये आप्यो हे ते मनुष अवतार ॥ चेटप
रीसावीरे रूपे चितमां चेतनेरे ॥ लावे लालदास
प्रभुने धारंधा रा ॥ जूठा जगमांहीरे ॥५॥ ॥
पद ॥४॥ ॥ राग सामेरी ॥ ॥ जीवलने ल-

गीरे, मूरख शुं सूई रह्योरे॥ मांथे ज्वेनेमोटोरो मरणनो मार॥ आव्रहाल करतांरे आयुष जयवहीरे॥ जेमनदीनीर वहे नीरधार॥ जवन्नेने॥टेक॥ मनुषनोश्वासरे अत्यंत अमूल्यछेरे॥ जेनीकांईकीमत कोईथी नथाय॥ चौदलूवननारे मूल्यथी अधिक छेरे॥ नित छरोबेकयीरे सहस्र लराय॥ जव न्नेने॥१॥ शास्त्र वाकई श्वासरे प्रभुसमस्या विनारे॥ होगर जोया मूढ गमार॥ हजे दैयाहूरयारे रह्या ते संभाळनेरे॥ आवेनहीं फरी मनुषअवतार॥ जवन्नेने॥२॥ वनवनमांहीरे पंदनननीपजेरे॥ जीवन्नं अकु वनमां वृक्ष अपार॥ जेवी रीते नरतनरे हुल्लेल संसारमांरे॥ जन्मे छे जन्तुमां आवे वारवार॥ जवन्नेने॥३॥ परकाया प्रवेसनो मंत्रन्नेने जन्तुमांरे॥ जाणे कोई विरलायोगी जन॥ जीवजन्तु मंत्रेरे जन्तुमां जाणे सहूरे॥ तेपीरीते समजी लेतांइंतन॥ जवन्नेने॥४॥ सतगुरु संगेरे संसारनुं सुजतनजेरे॥ करवे सहासाव्यासंतनो संग॥ श्वासोश्वासेरे समरीले श्यामनेरे॥ दीये प्रगटे लाल प्रभुशुं रंग॥ जवन्नेनेजगीरे॥५॥ ॥ पद ४॥ ॥ राग सामेरी॥ ॥ समजीलेसाथुंरे सगपण श्यामनुंरे॥ जेतो आपे अतसमे विश्राम॥ जाणीजीव्नं सगांरे स्वारथसूधीस

हूरे।।कइ ठणवेणामांन जावेकोई ठाम।।सम जीलेसा
धूरे।।टेक।।मात तात भ्रातरे सुत चित सुंदरीरे।।स
हू मल्यां पूर्व कर्म संजोग।। मिथ्या मारुं मारुं रे मूरख
मानी मरेरे।।विचारी जोने थारो सहूनो वियोग।।स
मजीले।।१।। जेम नदी मांहीरे मारग मां नाव मलेरे
।।जेतो पाछां पलक मां अलगां थाय।। तेवीने रीते रे
सरव संसार मांरे।। जोतां जोतां जन्मि जन्मि ने मरी
जाय।। समजीले।।२।। जेम वृक्ष मांहीरे फुल फूल पत्र
सहूरे।।फुटीकु थाय फुटीकु त्रूटी जाय।।अेम वास नामां
रे विचित्र देहो रहेरे।।अनंत काळेथी अति जथा य
।।समजीले।।३।।वीवेक वीचारीरे ग्रहे वैराग धरी
रे।।मूकी दे ने मिथ्या देहनुं अभिमान।। ललित त्रि
लंगीरे लालनो प्रीतम प्रभुरे।। तेनुं सदा धरजे
हृदे मां ध्यान।। समजीले सांभुरे।।४।। ।।पद
।।३।। ।।राग सामेरी।। ।।कृष्ण कृपानिधि
रे कृपामुज पर करोरे।।वाला मारा ललित त्रिलंगी
लाल।।अंतरनां जमीरे अंतर पीडा हरोरे।।प्री
तम प्रीति तणा प्रतिपाल।। कृष्ण कृपानिधिरे।।
टेक।।मन रूपी गजनेरे लोल ग्राहे ग्रह्योरे।।तेनुं था
य अंतर मां दुःख अपार।। साधनना अणथिरे छू
ट्यानुं सामर्थ न थिरे।। मारे प्रभु पासे करूं छुं पोकार
कृष्ण कृपा।।१।।दयाळु पती ने रे स्नेह करीने हमेशां

जेनाशुलकर्मरूपीजेंयेछेकूरा॥ नाथिकुं अनाथरे
करगरीनेकुंरे॥दीनानाथ हरीलज्जापोअंतरेहे॥
॥कृष्णकृपा॥२॥प्रभुप्रीतीरूपीरे प्रह्लादने हुष्टम
तीरे॥हे छे क्रोधहैत हु सह प्रकु कुंज॥ थित जंल-
मांथीरे प्रगट्योनरसिंहप्रभुरे॥तोतोस्यामथाय
सघणुं स्नेहने सुज॥कृष्णकृपा॥३॥ जेयुंत्रीघाहु:
जेरे हीनरवनी रहेरे॥ तेनी आरा अंतरमां लागी
लाय॥ लालहीन दासरे हीनपणे हुःजकहेरे॥सेव
कनीवेगेकरोनेसहाय॥ कृष्णकृपानीथिरे॥४॥ ॥
पद॥४॥समाप्तम्॥ ॥अथप्रेमविषे॥ ॥
रागसोरठा॥ ॥माराहरिजीशुं हेतनहीसे
रे॥ एराग॥ ॥रंचक प्रेम विना नहिरिझेरे॥
रसीकरणछोडराय॥ कुर्जपसाधनकुंभतज्जिही
नेरे॥आयुषजलेजाय॥ रंचकप्रेमविना॥टेक॥ ॥
ऊपर प्रेमनो लावजणावे॥ पण अरी विषयनीऊं
डीरे॥सघवानां आलणगणे विधवा॥निजकरन
थिकुंकुण थूडीरे॥रसीकरणछोड॥१॥प्रेमीजनना
प्रेमलाव ने॥ मिथ्या प्रेमी शुं जाणेरे॥ प्रसूतीनी
पीडाते वंध्या॥ कहो केम करीने वखाणेरे॥रसीक
रणछोड॥२॥ साच्या प्रेमी सरजो सलामां॥ कहि
जूठो प्रेमी जणायरे॥ बगलो हंस सरीजो श्वेतप
ण॥ थित छे मछलि मांयरे॥रसिक रणछोड॥३॥

ઙ दि नेत्रमां किंचित नीरवहे पण, दृष्टि छे देहनीमां
यरे ॥ चतुरशीरोमणी दांभिक चितमां ॥ कहोकेम
हरि देखायरे ॥ रसीकरणछोडा ॥२॥ धूमरनी दशवृ
ष्टि थाय पण ॥ जीवन जावे ज्यारे ॥ प्रेम प्रेम
विना गुण गाय घणा पण, लाल न तरे संसाररे
॥ रसीक रणछोडराया ॥ पा ॥ ॥ पद ॥ ॥
राग सोरठ ॥ ॥ नटवर नेह विना नहि रीझेरे
॥ करो साधन कोटी ॥ कहो लाई मिथ्या श्रम शिदकी
जेरे ॥ तन्ने जरपट जोटी ॥ नटवर नेह विना ॥ टेक ॥
उपर आतम ज्ञान कथे पण ॥ चित चंचल चोदि
श धायरे ॥ आंख वाना त्रणथि अंतर ॥ अग्नि केम
ओलायरे ॥ करो साधन कोटी ॥१॥ स्वयं ब्रह्मनो वद
दवदे पण ॥ देह स्त्री नव लायरे ॥ प्रतिदिन दीप दीप
कीधि कहो ॥ केम तम दूर पणायरे ॥ करो साधन कोटी ॥
२ ॥ सुधा तीं जकु मनना महोटा ॥ मीठा मोदक खा
यरे ॥ एथी क्षुधा मटे नहि मननी ॥ मूरख छो मह
लायरे ॥ करो साधन कोटी ॥३॥ कहे साधन कोटी करो
पण ॥ किंचित प्रेम वण कूडरे ॥ चिंतन विविध चघा
स्यां लवण विना ॥ रंग क लागे न कूडरे ॥ करो साध
न कोटी ॥४॥ माटे प्रेमी संतना संगे ॥ प्रेम भक्ति प
मायरे ॥ प्रेमे लालनो प्रभु मणे पण मां ॥ अन्यन
थी जीपायरे ॥ करो साधन कोटी ॥ पा ॥ ॥ पद ॥

२॥ ॥रागसोरठ॥ ॥ललितत्रिलंगी
लालदयाळरे॥रहेछेरसीकजनमां॥कुंजमां
समरोगिरिधरलालरे॥लभोछोशिदवनवनमां
॥ललितत्रिलंगी॥टेक॥संतनासंगेश्यामकथासु
णी॥मननामेळपळायरे॥श्रद्धाकुनेशुद्धहृदय-
मां॥दीनप्रतिदरशनथायरे॥रहेछेरसीक॥१॥
रसीकनीसंगेरसीकरूपथई॥राधावरसंगरा-
च्योरे॥गदगदकंठेगोविंदगुणगाई॥नौतमनेह
थीनाच्योरे॥रहेछेरसीक॥२॥तुच्छविषयनी
आरीजाणगीकरी॥भजनानंदजधायरे॥निष्का
मीनिस्प्रहोजनना॥पूंठेप्रभुनितधायरे॥रहेछे
रसीक॥३॥माटेजपतपयोगयज्ञव्रत॥तीर्थाटन
तजदीनेरे॥साधनसहुमिथ्याभ्रमभ्रमतजि
॥प्रेमभक्तिरसपीनेरे॥रहेछेरसीक॥४॥हरी
जनसाथेहेतकरीकरो॥श्रवणकीर्तनध्यानरे॥ला
लनोप्रीतमप्रेमविलोकी॥आपेनिजानंददानरे
रहेछेरसीक॥५॥ ॥पद॥७॥समाप्तम्॥ ॥
राग॥पद॥ ॥विनतीविषे॥ ॥हरीहुंशुंकरूंरे
॥मारोमायानमूकेकेडो॥जेराग॥ ॥हरीहूंहुं
करीरे॥हाऱ्योपणमायानछूटे॥हरीहूंहुंकरीरे
॥पांचचोरपिंडमांहीवसे॥मारूंज्ञानध्यानधन
लूटे॥हरीहूं॥टेक॥चंचळचितचंचळतातजितु

नाम्चरणकमळनचछूटे ॥ क्षणेक्षणेश्यामदामचिंत
नकरि ॥ माउं आयुषजेणे छूटे ॥ हरीहूं ॥ ५ ॥ तनतू
टेपण तनमां तनमनधननी तृष्णा नत्रूटे ॥ तेमा
टे मुज तृष्णातुरने ॥ नेम किंकर घणुं कूटे ॥ हरीहूं ॥ ६ ॥
माटे विलाप करुं विठ्ठल रेओ ॥ प्रेमरस श्रवणना फूटे ॥
करो कृपाण प्रीतिपाण लालनी ॥ मोहमथनी शीरछूटे
॥ हरीहूं हठकरीरे ॥ ७ ॥ ॥ पद ॥ ५ ॥ ॥ श्रीहरी
रिंगुं करुंरे ॥ मारा मननी माया नजाय ॥ श्रीहरि ॥ ज
णगी नथी रेहेती अंतरथी ॥ जेम रूपछाया रूपमांय
॥ श्रीहरी ॥ टेक ॥ संकल्प विकल्प रूपे क्षणे क्षणे ॥ छेद
मारी काय ॥ जणगो रहुं तो पूंठे आवे ॥ जेम काया पूंठे
काया छाया ॥ श्रीहरीरिंगुं ॥ १ ॥ जे मन मायानी जन्नि
ये मारा ॥ अंगेअंगे लागी लाया ॥ छानो हुं जे छणछ
णे छाती ॥ कोठेनें नयकहेवाय ॥ श्रीहरीरिंगुं ॥ २ ॥ जेकु
जदास नुंहेणी उकरणीने ॥ दूरकरो व्रजराय ॥ नहि
तोलाल जिहाल थशे श्रेना ॥ निश्चे प्राण पजाय ॥
श्रीहरिरिंगुं ॥ ३ ॥ ॥ पद ॥ ६ ॥ ॥ कृपाळुं कुं क
रगऊंरे ॥ मांकुं छूं कृपाकरी कापो ॥ कृपाळुं ॥ व्हालकरो
विठ्ठलवर मुजपर ॥ वेगे स्तुणीने विलापो ॥ कृपाळु
कुं ॥ टेक ॥ चंचळ चित निज चरणकमळमां ॥ स्थि
रकरीने स्थापो ॥ मेहेरकरी मुजउपर माधव ॥ मा-
या शोपपणीने शापो ॥ कृपाळुं ॥ १ ॥ मायापतीतुं नमा

वानुंजण ॥ सुणअंतरमांनवव्यापो ॥ अंतरनाभी अंतरमां ॥ अयेण भक्तिसुजजापो ॥ कृपाळुकुं ॥१॥ हां न हांन मघं तहांमागुं ॥ महानुभावनामे णापो ॥ जेथीभक्तस्थ ब्रथीजगी ॥ लालनपे तुज लपो ॥ कृपाळुकुं ॥३॥ ॥पद॥२॥ ॥माधव मूजनेरे ॥ मायायेटथी मूकावो ॥ माधव ॥ आरत वचन सुणी श्रीहरि तमे ॥ मुज अंतरमां आवो ॥ माधव ॥ टेक ॥ भ्रांति भरेला भवना भोग भवमां ही भूलीन भटकावो ॥ प्रपंचनी प्रतिकूतरावी ॥ निजचरणकमणमां कथावो ॥ माधव मूजनेरे ॥१॥ लो-भनदीनी लेहेर निवारी ॥२॥ भक्तिसंतोषवसावो ॥ धर्म अर्थश्रेयकाम तजवी ॥ ऊर निजनंद ऊभ रावो ॥ माधव मूजनो ॥२॥ तूं स्वामीहूं सेवकतुंदी नबंधु कुंदीन माटे दयावो ॥ तेथी पोकार करुं परमेश्व रा ॥ प्रेम रस लालनने पावो ॥ माधवमूजनेरे ॥३॥ ॥ ॥पद॥४॥ समाप्तम् ॥ ॥ राग सारंग ॥ ॥ अथ ज्ञान ऊपदेश विषे ॥ ॥ हेमनु ष्यदेही ॥ हरीनवजाण्या तेणे सरवे खोयुं ॥ अ-टेक ॥ ॥ अंतरमां विचार ॥ मणरीनाहि हरिमनुषजन्म अवतार ॥ तजविषय विकार ॥ झोगट फेरो शीदने फरे संसार ॥ अंतरमां ॥ टेक ॥ तारा कामक्रोध सरी अचेत थया ॥ आज काल कस्तां दीनग-

हीगया॥ तारा मननां मनोरथ मनमां रह्या॥ अंतर
मां॥ १॥ तारी स्त्रीधणी रूपे थई आया॥ तोय चितवं-
मण विषे मां धाया॥ तारी रोन रखी वंझा माया॥ अं-
तरमां॥ २॥ तें कुडणपणाये कोल कर्यो॥ ते प्रभुने तें
केम परहर्यो॥ ताहरुं मुज कांकुं लेईनने पेरो॥ अंतर
मां॥ ३॥ हवे येत मुरज मन ज्ञाति मानी॥ तन पाप
कर्म कुलना कानी॥ भ्रेखीनं दननी नथि छानी॥ अं
तरमां॥ ४॥ आ संसारनां सुख स्वकुपर हरजो॥ हरिगु
रु संतनी सेवा करजो॥ तूं लालघणीनु ध्यान धरजो
॥ अंतरमां॥ ५॥ ॥ पद ॥ ५१॥ ॥ हरिनाम
लीधा रा॥ आव काल करतां ताहरुं तन छीजे॥ आ अ-
वसर सार॥ प्रभुनो प्रेम सुधारस प्रीते पीजे॥
हरिनाम॥ टेक॥ जेतां जेतांमां जेजन तो गयुं॥
ताहरुं तन तूटीने रूपे थयुं॥ ताहरुं घरमां कोई न थिक
रतुं कछुं॥ हरिनाम॥ १॥ तारांनेएनासीकासकुछ
जे॥ तारी काया कंपि थरथर धुजे॥ तोय हरि नवुत
ने नव सूझे॥ हरिनाम॥ २॥ भूरज तारी गती थई म
ठी॥ तें करमां लीधी छे लाठी॥ तारी मति केम गई वण
ईनाठी॥ हरिनाम॥ ३॥ मिथ्या मूके मननी माया
॥ जेणे कईऽ ध्यान सने वाडाया॥ ते ऽरे नहि जेणे
गोविंद गाया॥ हरिनाम॥ ४॥ काकर साख्या संत तणे
संगा॥ पाय लिंग वासना जो भंगा॥ तारे प्रभुसप

थी प्रगटे रंग॥ हरिनाम॥ ५॥ कर परमारथ सहु पाप
जणे॥ तारा तनना त्रिविधताप टळे॥ तने लाल प्रे-
लु अंतरमां मणे॥ हरिनाम॥ ६॥ ॥ पद ७२ ॥
॥ ॥ हरि साथे हेत॥ केम नथी करतो मूढ कुटिल
नर कामी॥ भूपे पितपेत॥ अंतरमां तूं लखने अंतर
जामी॥ हरि साथे॥ टेक॥ पडवानो पिंड रच्यो काम्यो॥
तेने देजी केम दिलमां राख्यो॥ तूं हरि गुरु संतथी रहे सा
च्यो॥ हरि साथे॥ १॥ जिने जणीयानुं तेने जानुं॥ ता
रा पाप तणुं कूटे पानुं॥ अेछुं पाव्युं नहि रे हछानुं॥ ह
रि साथे॥ २॥ त्रिने त्रैणगुणनी पडि जांटी॥ जीकने न
हि घूंघाणी घांटी॥ अेने मथि थाक्या मोहोटा मांटी॥
हरि साथे॥ ३॥ चोथे चतुर संतनो कर साथ॥ कृपा-
कातर एणी आपे हाथ॥ तेने कातरी लख दीनानाथ॥
हरि साथे॥ ४॥ पंचमीये पंच भूत पंड॥ अेवुं समजी
चेती ले चंड॥ तारे माथे रवि सुतनो दंड॥ हरि साथे
॥ ५॥ छेडुं छल जल तूं परहरजे॥ रामनाम रत्न कूंडी
ये धरजे॥ तूं हरिथी डरी डगलां भरजे॥ हरि साथे॥
६॥ केम सातमे सान गई तारी॥ दीठी जाम नथी
सुणतो मारी॥ हजी अंतरमां लेजे धारी॥ हरि सा
थे॥ ७॥ अष्टमीये अथडाणो प्राणी॥ नथी सम-
ज्यो विवेक तणी वाणी॥ कुडां कर्म तणी तजने कां-
णी॥ हरि साथे॥ ८॥ नौमे नवमास उदरमां रह्यो॥

॥તારો કુંબેરી કોણે નવ ન્યય કહ્યો॥ધારે ધારે ભવસા-
ગરમાં વહ્યો॥ હરિસાથે॥૯॥દૂરી મીથે દાન દયાક-
રીયે॥ પર નિંદા પરધન પરહરીયે॥ ગુણગોવિંદના
ગ્રહીયે ધરીયે॥હરિસાથે॥૧૦॥ પ્રેમદશી પ્રેમ ચિંત-
ની કરીયે॥ દ્રઢ ધ્યાન ધણીનું દિલધરીયે॥ કહે હેત
કરી હરિવર વરીયે॥ હરિસાથે॥૧૧॥ હાદરીયે હરી-
નો છે દેશ॥ તહાં કાળકર્મનો નથિ લેશ॥ કોઈ પ્રેમી
કરશે પરવેશ॥ હરિસાથે॥૧૨॥ તૂં તેરમે તારૂં તનશો-
ધ॥ માંહી અકળ સ્વરૂપી અક્રોધ॥ મહાવાયકનો
સમજેબોધ॥ હરિ સાથે॥૧૩॥ છે ચૌદમે ચતુરભુ-
વન સ્વામી॥ તારા અંતરમાં અંતરજામી॥ જોલે છે
ઘરઘર જકુ નામી॥ હરિસાથે॥૧૪॥ છે પુનમે પ્રે
ભુ પૂરણાનંદ॥ ચિતમાં વ્યાપક ચેતન ચંદ॥ શું સ-
મજે તેને મતિમંદ॥ હરિસાથે॥૧૫॥ આ સીક્ષા
ને સમજી ભરીશે॥ તે નર સેહેજે સુખીયો થાશે॥ કહે
તે ભાલ પ્રભુના ગુણગાશે॥ હરિસાથે હેત॥૧૬॥
॥ ॥પદ॥૭॥ ॥હે તેં હરિને સંભાર॥
સંકર તારૂં સઘળું કરશે સ્વામી॥ ગર્ધવ તું ગમાશ
કેમ હરિ નથિ ભજતો તૂં નરતન પામી॥ હે તેં હરિ
ને॥ટેક॥ કારતક કર હરિ સાથે હેત॥ ચીવટ રાખી
ચીતમાં ચેત॥ પછે અંતે મુજ પડશે રેત॥ હે તેં હરી
॥૧॥ માગશરે મારૂં મારૂં કરીને॥ ભવભટક્યો ભમિ

कन्निमरीनोधिकर्योलसमोरारीकृरीकृरीनोकतेक
शिारापोसे पज्युं मनपंजीनगल्नलो त्मेरीरूपर
सींयाणोकजोजेजयानकुपडीनाजेक्हाणाकतेक
रिाउा माके मात्यूंन्कृगनेसाग्याा तारे कर्मेलजीकृडी
कुर्याा तनेनारीनित नम्येनाय्याकतेकरिाथाकू-
गणेकूगटने परकरनो साधोस्नेक संतसाथिकुरने
ातूं विवेकनी वाणी चितधरनोकतेकरिापाचेतरे
योजीसमजण लेनोतनमनधन अरपणकरीदने
ासाचासतगुरुनें शरणे रेकनोकतेकरिाकावर्ण
शाकुरकेचितमांधरनोविषेसुखवांतिसरखुंकर-
नोपछे निरलेथई जगमांफरनोकतेकरिाजानेक
नक्तने जापे उपदेशा ा रूडो वैष्णवनो धारीवेषा
पणपोते पाळे नकि लेशाकतेकरिारा छे अषा
डे जाउजेन तारो हूं छुं मोकोटोअवुं मनधारोवह्या
वेकता साथे वार वारोकतेकरिाच्ााआवणेसकुसर
जाछेप्राणीातूंअंतरमांलेनेजाणीाअेमअ्नी मु-
जवेदवेदवाणीाकतेकरिाशा ताादरवेताजोल
रपूराातोपणमांप्रगटेज्ञान सूराा अज्ञान तिमि
र टळरीदूराकतेकरिनोशाआसोयेअसिप
दमांठरनोतत्पदत्वंपदने परकुडनो तूं जापो पुं
जणगुंकुरनोकतेकरिापराछे प्रतिमासे शीरपि
सारीादट अंतरमांलेने धारीाकहेलालविवेक

विस्तारी॥कहेतेकहरिनेसंभारा॥४॥ ॥पद॥
४॥ ॥मनमूरख जगमारा॥भावधरीतूंकेम
नभजे भगवान॥कांईकरने विसारा॥केम तारीषो
वाईगई रुधनेसान॥मनमूरख॥टेक॥तूंवार
वार भवमां भटक्यो॥तूं ओंधामस्तके बहुलटक्यो॥
तेनोकेम नथिचढतो चितखटको॥मनमूरख॥१॥
फरिफरि नरतन क्यांथी मळशे॥जेथिजन्ममरणनुंदु
खटळशे॥आविवेळा नित्य क्यांथि वळशे॥मन-
मूरख॥२॥तेंरत्नसरीखुंतनआपी॥लीधीजहले
कर्मकापकापी॥तूंकेम भूलेपामरपापी॥मनमूरख
॥३॥जेनाचितमां विषयसुखनितचडशे॥तेने
ज्ञानकळा क्यांथीजडशे॥अरे पापी नित नरके पडशे॥
मनमूरख॥४॥वेहेता साथेकेम वही जवे॥विषेसु
खतो प्रति योनी आवे॥लालदासप्रीतमने निरधा
वे॥मनमूरख॥५॥ ॥पद॥५॥ ॥
मनकरीले विचारा॥अंतरनी आंखे तूंजोनेनीत॥त
जिशिरनोभार॥मनक्रमवचनेकरप्रभुसाथेप्रीत॥
मनकरीले॥टेक॥तूंमाकुंमाकुंशीदनेकरे॥माथे पापपो
टलो सीदनेधरे॥तूंजगट करा शीदने फरे॥मनकरीले
॥१॥तने नारीवालकरेछे बहु॥सुतभ्रातमृत्यमा
नेछे कहुं॥अरेतो स्वारथनां संगीछे सहु॥मनकरीले
॥२॥ज्यारेजमकिंकर तनेलेईजशे॥दुःख जीदहये

स्थिरथारीो॥ तारे जे कोई नहि जावे पासे॥ मन करीले
॥३॥ माटे मन साथे ल्ने विचार करी॥ अवसर नहि
आवे आवो फरी॥ हरि भजिने विषय सुख परहरी॥
मन करीले॥४॥ साच्या साथे प्रीति करीये॥ कूडानी प्री
ति परिहरिये॥ लावे लाल प्रीतम भजि भवतरीये॥
मन करीले॥५॥ ॥पद॥६॥ ॥अंतरमां वि
चार॥ अवसर आव्यो ते क्यां वारंवार॥ मल्यो नर अ-
वतार॥ पूर्व जन्मनां पुण्ये तुजने गमार॥ अंतरमां॥
टेक॥ नर रत्न तें खोयुं मूढमती॥ हवे तारी ते रीथिए
शे गती॥ हजि करीले हरिपदमां तूं रती॥ अंतरमां
॥१॥ तने वारंवार कहुं छुं कथी॥ जूठा साथे रीद
मरे छे मथी॥ निश्चे जेमां सुख लेश नथी॥ अंतरमां
॥२॥ तारा हित माटे शीक्षा सारी॥ में करगरीने क-
ही वीस्तारी॥ चूप लेने तूं चितमां धारी॥ अंतरमां
॥३॥ हजि मूरख तूं शुं विचार करे॥ तारा शिरपर शत्रु
फाण करे॥ तने घडीपलमां लेईजरोजरे॥ अंतरमां
॥४॥ माटे विषयवासना दूर करो॥ दृढ ध्यान हरीनुं ह
रदे धरो॥ लाल प्रीतम भजि भवसिंधु तरो॥ अंतर
मां॥५॥ ॥पद॥७॥ ॥सांभळ साथी
॥ वात कहुं छुं तुजने वारंवार॥ काया काची॥ तेनो ग
र्व तुं शीद ने करे छे गमार॥ सांभळ साथी॥ टेक॥ ॥
जोता जोतामां वणसी जशे॥ पछे हाथ घसे थी शुं

थारो ॥ मांथे मार जेरे न मनो जारो ॥ सांभळ साथी ॥ ॥ माटे चित मां चेती ज्यो प्राणी ॥ मुज मां जो लो अमृतवाणी ॥ हरिहीरो जांघ करे हतांणी ॥ सांभळ साथी ॥ २ ॥ पर निंदा पर पंच पर स्त्रीये ॥ परमारथ मां प्रीती करीये ॥ नित ध्यान धणीनुं दिलधरीये ॥ सांभळ साथी ॥ ३ ॥ साथी सतगुरुनी संगत करजो ॥ विवेकनी वांणी जीरधरजो ॥ तारा मनना संकु संसय करजो ॥ सांभळ साथी ॥ ४ ॥ आपो अवसर नावे फरी फरी ॥ तेथी कहुं छुं तुजने करगरी ॥ लख बाल प्रीत मन ने लावघरी ॥ सांभळ साथी ॥ ५ ॥ ॥ पद ६० ॥ समाप्तम्‌ ॥ ॥ राग सारंग ॥ ॥ अथ विनति लि० ॥ ॥ ॥ उपर प्रमाणे राग मां ॥ ॥ ओ प्राणाधार ॥ श्री रणछोड रंगीला सुणो घनस्याम ॥ तमे जगदाधार ॥ जगजीवन जगपावन जग अभिराम ॥ टेक ॥ हुं जन्म मां पीडा जे हु पाम्यो ॥ कांण कुर्म तणुं हुं जन नथी वाम्यो ॥ मारे चरण कमळमां शिर नाम्यो ॥ ओ प्राणाधार ॥ १ ॥ हुं ये नियो निअवतरि लख क्यो ॥ तेनो चित मां नथि लाग्यो चटको ॥ हवे जे हुं जद णी दिल करक्यो ॥ जो प्राण ॥ २ ॥ हुं मरी मरी फरि फरि अवतरी यो ॥ कुडां कर्म करी लडथडीयो ॥ हवे केम करी तरुं जे हुं जदरीयो ॥ ओ प्राण ॥ ३ ॥ मारी वात तमे चित मां धरजो ॥ मारुं जन्म मरणनुं दुःख हरजो ॥ मने अंत समे आवी मळजो ॥ ओ प्राण ॥ ४ ॥

साधननुं जण नथीमनमारे॥ जेवोतेवोपणरीशरणेता रो॥ तमेलाजनेप्रभुलावोश्चारे॥ ओप्राणाधारे॥ ॥ पद॥ ॥ ओकृपाणुदेवा॥ श्रीरणछोडरंगीलाप्रभु जकुनामी॥ कुङ्नितसेवा॥ अंतरनुं दुःजदरोत मे अंतरजामी॥ जोकृपाणु॥टेक॥ कुपापी परुसरी जोप्राणी॥ मारोकृष्टतणीछेजकु ज्ञाधाणी॥ कुडांकर्म कर्यां मनक्रमवाणी॥ ओकृपाणु॥१॥ जेरे दृतमे जाणोजोटो॥ जेवो पाणीनो होय परपोटो॥ कुकुञ्च त्यनेकुं जाणुं मोटो॥ ओकृपाणु॥२॥ विषेविषय नुं मनमां घास्रुं पण तजेजनोछंदा॥ जेम नित पितवेछे मकोरचंदा॥ ओकृपाणु॥३॥ परनिंदाकरे जिह्वामारी॥ घणुंवाकुनथिरेहेतीवारी॥ पडीटेवन मूके वीसारी॥ जोकृपाणु॥४॥ मामाकुमनजेसेनेत्रनी जारी॥ तहांजरछनीरजे नितपरनारी॥ पछेसुज याहेछेसंसारी॥ जोकृपाणु॥५॥ पापगणे पारकहिंहुं के मजावे॥ कुंपापप्रतिदीनजेमकरावे॥ निरजनने लाजशेनी लावे॥ जोकृपाणु॥६॥ मपापकर्यांछे अकुलारी॥ दवेशरणगति थारी प्रभुमारी॥ जेवो तेवोलालशरणेतारी॥ ओकृपाणु॥७॥ ॥ पद॥ ॥ ओदयाणुदेवा॥ श्रीरणछोडरंगी ला अंतरजामी॥ सेतानथि लेवा॥ देवदनुजमुनिम नुज तमारो स्वामी॥ जोदयाणु॥टेक॥ तमेदीन

अंधु दुःखना करता॥ नगकवन प्रभु नगनालरता॥ त
मे दुःखमां हैं मनथि करता॥ जोद्याणु॥१॥ तमे लक्ष
घणा नगमां तार्या॥ दीन दुःखित देखीने उद्धार्या
॥ मनेक्षेम न तारो प्रीतम मारा॥ जोद्याणु॥२॥ तमे
द्या दान दीनने आप्यां॥ तमे अथीर मन थीर करी
थाप्यां॥ तमे कष्ट मारां कनिनथि काप्यां॥ जोद्याणु
॥३॥ मने दीन प्रति दरशन प्रभु आपो॥ मारा दूर करो
तनना तापो॥ मारा परले करो पांये पापो॥ जोद्याणु
॥४॥ नेवो तेवो पण हुं छुं तारो॥ तमे पोतानुं पण थी-
चारो॥ कहो मुखथी लाल तुं छे मारो॥ जोद्याणु॥५॥
॥ ॥पद॥३॥ ॥जोदीनानाथ॥ धिनजं
धु दुःखहरता श्री रणछोड॥ मने करो सनाथ॥ कर जोरि
कहु छु तमने बेउ कर जोड॥ जोदीनानाथ॥ टेक॥ प्रभु
तुलपे बीजो कोइ नथि मारो॥ कहो लवदुःख थी मने कोण
तारो॥ माटे करगरुं छुं वारे वारो॥ जोदीनानाथ॥१॥ करी
पुत्रनो माता दोष धरे॥ पछे रक्षण जेनूं अण करे॥ जेने
करोने विचार तमे दील परे॥ जोदीनानाथ॥२॥ पती
व्रता नारी कदी लूज मरे॥ जेनुं पालण पोषण पतीनक
रे॥ तारे पतीनो आश्रय शीद्दने धरे॥ जोदीनानाथ॥३
॥ तमे मात तात मारा स्वामी॥ तमे सजा त्रात जं
तरजामी॥ हवे मारे तेरी छे खामी॥ जोदीना॥४॥
हुं दीन तमे दीनदयाळ॥ हुं याचक तमे याचकपाळ॥ श्रे

वुंसमजीलालपरकरो वाला॥ जोदीनानाथ॥पे॥
॥ ॥पद॥४॥ ॥जोप्रभु प्रतिपाळ॥श्री
रणछोड रंगीला दीनदयाळ॥ मारा दुःखहरनार॥
कृष्ण कृपानिधि करुणा करुं तमने कृपाळ॥ जोप्रभु॥टेक
॥मारुं मन मायामां रहे भमतुं॥ हुं वाळुं छुं पण नथि
वळतुं॥ हरि लावसिंधुमां नथी ल्यतुं॥ जोप्रभु॥१
॥जेनुं दुःख मारा अंतर थाय॥ ते पीडा हेमकरीसे
हेवाय॥ तमपाजेहोनेनवकहेवाय॥ जोप्रभु॥२॥
जेनीतनीललछेनेव्हारलभ॥ लछेविषयतणारंग
मांहीरमे॥ जेनीटेव मनने क्षणएकुं पण नगमे॥ जोप्रभु
॥३॥ वारोवारो जे मनने वारो॥ तो आवशे प्रभुदु
खनो आरो॥ तमविना उपाय नथी मारो॥ जोप्र
भु॥४॥ मनेवशकरी निजपदमां थापो॥ जेनेलाल
प्रेमरसनो आपो॥ तेमतमकरी लालनुं दुःख कापो॥
जोप्रभु प्रतिपाळ॥पे॥ ॥पद॥५॥ समाप्तम्॥
॥ ॥रागसारंग॥ ॥नामविषे॥ ॥
रागउपरप्रमाणे॥ ॥हेते हरिनाम॥ अंतरमां
समरो तमे आठे जाम॥ कुडां तजी काम॥ विषयवेगथी
वेग पामी विराम॥ हेते हरि॥टेक॥ चितमां हरिहरि
चिंतन करजो॥ रसनाये हरि हरी उच्चरजो॥ जेम
रातदिवस हृदये धरजो॥ हेते हरि॥१॥ सघळां साधन
तमे दूर करो॥ नोतम नित नाममांने हदे धरो॥ तमेशे

गट हे सारी हरने हुवो॥ हे ते हरी॥२॥ साधन सरीता कळ
हूं हार्यो॥ हरि नाम स्वाति बिंदु आव्यो॥ अेथी टेक
अहं निश उर राख्यो॥ हे ते हरि नाम॥३॥ जाति
मननी नाख्यो त्यागी॥ जूवो जूठ जक्त थकी जगी॥
थई रसीक नाम रसमां रागी॥ हे ते हरि॥४॥ जेअ
तमनुं हित उर धरजे॥ तो अनातम सुख अण-
गुं करजे॥ जन दास प्रीतम भवनिधि तरजे॥ हे-
ते हरी॥५॥ ॥पद॥६॥ ॥ने हरी नाम॥
नित्य निरंतर उर अंतरमां राख्यो॥ तत्व नाम नेह
मां चेतन थई पीद नाम सुधारस चाख्यो॥ ने हरी
॥टेक॥ नाम समरे शंकर सुख रासी॥ आपे मंत्र जेथी
य स समीप थासी॥ पामे मुक्ति ते मरण समे काशी॥ ने
हे हरी॥१॥ जपी नाम गजानन गणेश पूज्य थया री
रणांगतने सुखदाय॥ नाम महीमाये पेहेला पूज
या॥ ने हे हरी॥२॥ जप्या नाम वालमीक जाणे
॥ थई मुक्त महा पद सुख माणे॥ अेवुं वेद हरी श्रुत मांय
खाणे॥ ने हे हरी॥३॥ जुवो अधम अजामेळ अ-
ति पापी॥ अेने नामे महा मुक्ति आपी॥ अेनुं सं-
कट सहु नाख्युं कापी॥ ने हे हरी॥४॥ अेम अनेक गया
जगमां उधरि॥ अंतरमां नाम नो आश्रे करी॥ अे-
वुं समज दास प्रभु ल्यो समरी॥ ने हे हरी॥५॥ ॥
पद॥७॥ ॥ निरमळ हरी नाम॥ रात दीवस

रुदीयामां समरीश जो ॥ जेथी थशे कामा ॥ जी भजंस
कुसाधन जण गांठरीनाखजो ॥ निरमळ ॥ टेक ॥ धूम-
रनी वृष्टि घणी थाय ॥ जेथी जनाघृष्टि दुःख केम जाय
॥ ए घांटां साधन करी कई जय डाया ॥ निरमळ ॥ १ ॥ ए
द्योत कोटी लेगा थाय ॥ ओथी केम निशि अणगी भ
या ॥ लोण मन वाळा भरमाया ॥ निरमळ ॥ २ ॥ मन
ना मोहोटा मोह कराया ॥ दुःख सुं घात एवुं केम दूरजा
या ॥ छे मूरख मन मां मकलाय ॥ निरमळ ॥ ३ ॥ जो
रां साधनथी आयुष खूटे ॥ सुजलेरा नहि श्वासा छूटे ॥
करु केम साधे कुकस कूटे ॥ निरमळ ॥ ४ ॥ एवुं समजी
साधन परहरजो ॥ हरि नाम चिंतामणि चित धर
जो ॥ भजनानंद प्रभु भव दुःख तरजो ॥ निरमळ ॥ ५
॥ ॥ पद ॥ ७ ॥ ॥ भज श्री रणछोड राम
नक्रम वचने प्रभु साथे करी प्रीत ॥ पूरे मन कोड ॥ भ
क्तवच्छळ निज भक्त तणा नीत नीत ॥ भज श्री ॥ टे
क ॥ जेने भजतां भव दुःख दूर थाशे ॥ तारे काण कर्मनो
भय जाशे ॥ ऊर परमानंद सुख ऊभराशे ॥ भज-
श्री ॥ १ ॥ हरतां फरतां हरी हरी उचरो ॥ क्षण पण
हरी नाम पड न करो ॥ आम रात दीवस कई ध्यान
धरो ॥ भज श्री ॥ २ ॥ अजामेळ पापी थीर मुक्त भ-
णी ॥ एनी कथा भागवत मांहे छे घणी ॥ रट्यो नाम
मुक्ति पद लीधे ते हृत तणी ॥ भज श्री ॥ ३ ॥ नामे गुणक

नेमुक्ती आपी॥ नामे गज अंधनाध्युं कापी॥ अेना नामे
तरयाकोटी पापी॥ जन श्री॥ ३॥ त्रण लोकना छे प्रभु सुंदर
मणी॥ जेनी लीलानो तम घणी घणी॥ अेतो ब्रालतणा
शीरनो छे धणी॥ जन श्री॥ ४॥ पद ५ मुं॥ राग समा
वेमु॥ राग ओपर प्रमाणे॥ संतसंग पि-
षे॥ कर संतनी सेवा॥ मन क्रम वचने पूरण
आंधी प्रीत॥ तुजने तत जेवा॥ हरे हरीनी साथे फराये
हीत॥ कर संतनी॥ टेक॥ अे शरणागतने सुख आपे॥
कल्मष हरीरस पाईने कापे॥ चित थिर करी हरी चरणे
थापे॥ कर संतनी॥ १॥ जह्णु गंगामां स्नान करे॥
तारे तनना पातक जय परे॥ हरि जनतो दरशन मा
त्र हरे॥ कर संतनी॥ २॥ जह्णु जल प्रतिमा पूजया॥
॥ तारे पूजकनुं मन शुद्ध थाया॥ संत सरणमां मेण वेल
हुराया॥ कर संत॥ ३॥ अेवो महीमा संततणो मोहोटो
॥ तमे संत चरणमां लोटो॥ मिथ्या शीद मूको हरो
हीरा होटो॥ कर संत॥ ४॥ अेवुं समजी अंतर मांधर-
जो॥ ॥ अंतरथी अंतर परहरजो॥ कहे लाल सं
तसंग नित करजो॥ कर संतनी सेवा॥ ५॥ पद ६
ठीं॥ ॥ दुर्लभ नर देह॥ तुजने हरीये आप्यो
आणी हीत॥ संत साथे स्नेह॥ नित्य निरंतर करीने
चितमांये ता॥ दुर्लभ॥ टेक॥ पन्नग पशु पंखि दइ ध
रीया॥ नाना योनीमां नाट करीया॥ लख चोराशी फे

राखीया॥दुर्लभ॥१॥गाढी करी झालो एवुं नथि करीयो॥म
या ज्ञाण कर्म ने अनुसरीयो॥पाम्यो नरतन तरीने कुंज
हरीयो॥दुर्लभ॥२॥माटे मूरख तूं मन मांये ता॥करयह
रिजन संग आणी हेता॥अद्वाये थशो तां उंचित स्चेता॥
दुर्लभ॥३॥ने संतना शब्दो सांभलशो॥तेहेनां पा
पे पातक जणशो॥हरि अंतरमां हेते मलशो॥दुर्ल
भ॥४॥छे निर्भय हरिजननो हेशो॥जणे जल
डी मयापती शोषा रुं जणे लालसरीखा लेशो॥दुर्ल
भ॥५॥ ॥पद॥१॥ ॥मूरख मन मांना॥
साधन सकु नथि संतना संग समाना॥तजि तन अ
भिमाना॥संत संग कर कहुं करीने ज्ञाना॥मूरखा॥टेक
॥तूं संतनी आज्ञा अनुसरजे॥नित संतनुं रूप हृदे
धरजे॥पछे निर्भय थईने ठीक करजे॥मूरखा॥१॥सं
त अंतर ज्यां पीयुडी घाले॥अंतरमां आत्मा देखाडे
॥संशयने सम्मूलो उडाडे॥मूरखा॥२॥माटे लग
त्क चरणमां करलावा॥तने मलशे नर तननो लाव
॥तारो सघलो फेरो सफल थावा॥मूरखा॥३॥हरीना
म नावमां जे सारे॥ऊतारे दुःख दरीया पारे॥तारे
संतजन सघलां सारे॥मूरखा॥४॥जेवुं समजी
साधन पर करजे॥साचा संततणी सेवा करजे॥ला
ल संतनी शरणमां रहे करजे॥मूरखा॥५॥ ॥पद
॥७॥ ॥कर संतनो संग॥अंतर ज्ञारत आ

एणी आठे जमा ॥ जागे दृढीये रंगा ॥ ते हेने मळी तुजने
श्रीघनस्याम ॥ कर संत ॥ टेक ॥ अगनी संगीनी रीत
करे ॥ वीरी संगीनो ताप न दूर करे ॥ सतसंगे सघळां
कारज सरे ॥ कर संत ॥ १ ॥ अंतरनो दोष परो करे ॥
अंतर देजाशे ज्ञान सूर ॥ अंतर उतरशे प्रेमपूर
॥ कर संत ॥ २ ॥ अंतरनो संशय शोक टळशे ॥ अंतर
नी वासना वेली जसे ॥ अंतरमां व्रजपती वेगे वसे
॥ कर संत ॥ ३ ॥ अंतरनो अंतर दूर जसे ॥ अंतरनो
आशय जेह थरो ॥ अंतरमां हरीनुं ध्यान धसे ॥ कर सं
त ॥ ४ ॥ अंतरनी वेणा वेली वणे ॥ अंतरनां पाप प-
णमां भ्रमणे ॥ अंतरमां लाल प्रभु प्रीते मळे ॥ कर सं
तनी ॥ ५ ॥ ॥ पद ॥ ४ ॥ ॥ पूरण कर प्रीत
॥ श्याम स्वरूपी साथे ॥ संतनी साथ ॥ ये जुं करी प्रीत
ता ॥ कुंज हरीये तारे तुजने ग्रही हाथ ॥ पूरण कर ॥ टेक
॥ अंतरमां ज्ञान नेत्रो संत ॥ अंतर उघाडे अनंत ॥
अंतर ले ठाडे भगवंत ॥ पूरण कर ॥ १ ॥ अंतरना त्रि
वि धी ताप रणे ॥ अंतरनी संशय गांठ गणे ॥ अंतरमां
आनंद मळे ॥ पूरण कर ॥ २ ॥ अंतरनी आरी कुरा
री जरी ॥ अंतर आपो पु जग गुजसे ॥ अंतर रपी
अंतर जेह थरी ॥ पूरण कर ॥ ३ ॥ अंतर अंहकारनी
सृष्टि जसे ॥ अंतरमां शीलनी सृष्टि वसे ॥ अंतर
मां आतम दृष्टि थरी ॥ पूरण ॥ ४ ॥ ते नीतनीत संत-

नो संग करे ॥ तेना अंतर गुण लंडा रलरे ॥ कहे लाल
ते न ही जन्मेने मरे ॥ पूरण करा ॥ ५ ॥ ॥ पद ॥ ५
समाप्तम् ॥ ॥ राग ओपर प्रमाणे ॥ ॥
अथ विनति विषे ॥ ॥ ओ कृपा निधान ॥ कृपाक
रो तमे केशव कृष्ण कृपाळ ॥ आपो अविचळ दान ॥
पोतानो जाणी करो व्रजपति पाळ ॥ ओ कृपा ॥ टेक ॥
सोमे अंतर प्रगटी सुज आपो ॥ मन नगरी थीर
करीने थापो ॥ क्रोध कंस कुटिलनो लय करापो ॥ ओ कृपा ॥
१ ॥ लोभ मति मांजकु थयो लाश ॥ मोह दि दैत्य दाढ
श ॥ हूं गरीब गाय करूं पोकार ॥ ओ कृपा ॥ २ ॥ बुधे
जुकृयां दिकु जण नव मारो ॥ सकु क्रोध कुसंग माले
॥ अ माड सत्या नारी वाणे ॥ ओ कृपा ॥ ३ ॥ गुरु ज्ञा
न ध्यान सकु देखी डरे ॥ भाव भक्ति ब्राह्मण जकु
थरथरे ॥ जे अंतर देशीमां राज्य करे ॥ ओ कृपा ॥ ४ ॥
शुके जकु असुलनुं थयुं जोर ॥ शुल कर्म नो कंस करे ठो
र ॥ दिवसे न ही रात दिवस लोर ॥ ओ कृपा ॥ ५ ॥ मंदप
ण जेनुं थाशे मंद ॥ तमे चितमां प्रगटो व्रजचंद ॥
धरी अमने अंतर आनंद ॥ ओ कृपा ॥ ६ ॥ रवीओ
गे नेम कांई रजनी पळे ॥ तेम प्रभु प्रगटे क्रोध कष्ट
टळे ॥ गई लालनी पाछी वेणा वळे ॥ ओ कृपा ॥ ७ ॥ ॥
समाप्तम् ॥ ॥ राग ओपर प्रमाणे ॥ ॥
नाम विषे ॥ ॥ अरे ज्ञान घटा ॥ जमा नकम

रात्रीअंतरमांपहीआवी॥ तन ताप मट्या॥नीरखी नित मारा मन मोरने लावी ॥ अेक ज्ञान॥दे शावी येक नी वादणी वरस्से छे ॥सुजबुद्धि बुद्धिमां परस्से छे॥ते तो मारा दिलमां हरस्से छे॥अेक ज्ञान॥२॥ तहां अजंड चैतन धार पडे॥ते मारा चितमां आवी चडे॥शुध्ध वाद अवासनी जड ऊपडे॥अेक ज्ञान॥३॥ तहां प्रेमप्रवाहनुं पूर थयुं॥ तेथी कर्म कीचनुं दुःख गयुं॥हरिप्राप्त मार्गनुं सूख रह्युं॥ अेक ज्ञान॥४॥ थई शीतलता मारा तनमां॥ ॥ गा रतनी आंच मटी मनमां॥ हवे नहि जोणुं हूं वन वनमां॥ अेक ज्ञान ॥५॥ अेवी धरा जेना चीतमां चडशे॥ तेने ताप त्रिविधीना केम नडशे॥ जे नी कृष्ण कोई अेमीने पडशे॥ जेकज्ञान॥६॥ अेनो महीमा शुक योगी जाणे॥ अेने वेदव्यास नीत वखाणे॥ अेनुं लालकोई वीरला सुजमाणे॥ अेक ज्ञान॥७॥

॥ ॥समाप्तम्॥ ॥राग पद॥ ॥अथ जघ विषे॥ ॥मोहोले पधारो मारा लाल माणीगर मोहोले पधारो॥जे रा गमां॥ ॥तूं तो लालजीने श्रीघनश्याम॥मानरीजामण मारी॥तजकू डांक्क नां काम॥ मानरीजामण मारी॥टेक॥ मारु मारुं रीद नेकरे छे॥ तूं मन मूढ गमार॥अंते तन ताउं नथी तेनो, केम नथी करतो वीच्यार॥ मानरीजामण मारी॥१॥ तारी प्यारी नारी तुजने॥ वांरवार करे यार॥अंते

ते थई जशे अणगी॥ ज्यारे तुजने गळशे काळ॥ म
नशीखामण मारी॥२॥ सुजार्थी सुज श्रेष्ठ समय
मां॥ संगी सहु संसार॥ तेना माटे शीद ने लहे छे॥
पाप घोर शीर भार॥ मानशीखामण मारी॥३॥
जे तारुं हीत तुं इच्छे तो॥ तजने विषय विकार॥ मन
क्रम वचनने भाव धरीर॥ लाल प्रभु शुं प्यार॥ मा
नशीखामण मारी॥४॥ ॥पद ६१॥ ॥जेने
हरी विना कांण घणी होय॥ रंगेरणछोड करीले॥ जं
ते काई कोई हुं नथी होय॥ रंगेरणछोड करीले॥ टेक॥
मूरख माया ना संगे तुं॥ भटक्यो भव मोझार॥
काळ कर्म गुण मां घेरा ईने॥ आपदा पाम्यो अपार
॥ रंगेरणछोड करीले॥१॥ नाना योनी जन्म धरी धरी
॥ तप्यो त्रिविधीने तापा॥ विषय वासना वस तेंकीक
ध थई॥ पूरण कीधां पाप॥ रंगेरणछोड करीले॥२॥
एम कोटीक कल्प थी कर्म करि करि॥ अनेक धर्या अव
तार॥ झाड पहाड पन्नग पशु पंखी थई॥ वह्यो घोर
शीर भार॥ रंगेरणछोड करीले॥३॥ अमूल्य अवसर
आप्यो हरिये॥ हेत करी आ वार॥ ते माटे हवे लाल प्र
भुना॥ गुण गाई लेने गमार॥ रंगेरणछोड करीले
॥४॥ ॥पद ६२॥ ॥राग पद॥ ॥वि
रह विषे॥ ॥घरमां नव रेहेवाय॥ नटवर तम
विना॥ अमने॥ मारुं दरद कोने न कहेवाय॥ नटवर तम

विना॥ जमने॥ टेक॥ वीरहअग्नीनीज्वाळा उठे॥ अं
तरमांहि अपार॥ तेनुं दुःसह दुःख थयुं दीलमां॥ सहुं
नथीजतुं लगार॥ नटवर॥ १॥ अतिशेआतुर नेनम
नावे॥ घडीपण नींद्रा सूज॥ हृदयथी वीरह ज रहे दीनर
जनी॥ अमने छे एवुं दुःख॥ नटवर॥ २॥ व्यलिख्यारी
नारीजेम निराहीन॥ अंतर रहे उदास॥ घरनो धंधो
नथी गमतो॥ जेनुं मन रहे प्रीतम पास॥ नटवर॥
३॥ जमने जेवी छानी पीड॥ ते कहो केम सेहेवा
य॥ अन्य नथी उपचार लालने॥ स्याम मळे सुख
थाय॥ नटवर तम विना अमने॥ ४॥ ॥ पद ४
॥ ॥ तम विना केम रेहे वाय॥ छबीला छेल
वीलारो॥ माहरुं मन मळवा अकळाय॥ छबीला छे-
लवीलारो॥ टेक॥ पूर्व जन्मनी प्रीते तमपर॥ अम
ने उपन्युं वाल॥ तेथी नथि गमतुं मने घरमां॥ वन
वन फरुं हूं जेहाल॥ छबीला छेलवीलारो॥ १॥ ग्र-
हवैरागनी ज्वाळ उठे उर॥ तनमाहरुं तपी जय॥ वी
षय सुखोनी वात रुचे नहीं॥ क्षणे क्षणे शरीर सु
काय॥ छबीला छेल॥ २॥ प्रीतम मळवाने माटे म-
ना आतुरता छे अपार॥ चीतमां चींतवन रहे
तमारुं॥ नेत्रमां आंसुनी धार॥ छबीला॥ ३॥ पी
न मीन पयमांहिथी मूको पण॥ नीरविना नहीं सुख॥
एम सकळ पदार्थ प्राप्त लालने पण॥ तम विना छे

अकुळुंआ॥छजीला छेला॥४॥ ॥पद॥२॥ ॥
दीलमां आपोने देदार॥रणछोड रंगीला जमने॥
सुख नथी आ संसार॥रणछोड रंगीला जमने॥टेक॥
॥जदपी अमतम वच्चे नथि अंतर॥तदपी रहूं छुं दूर॥
मायापडदो पड्यो मन रूपी॥केम थई ठरीए कुं हूं हजूर॥र
णछोड रंगीला॥१॥क्रोटी उपायथी पड्यो व पूरो॥अम
सांजणुं गुरु मूंझ॥ तेदीवसथी कण नथी यळती॥दी
न दीन थाय अकुळुं॥रणछोड रंगीला॥२॥तृषातु
रना उपर जणनी॥धार करे रे कुं थाय॥तेथी पीपा-
सा टळे नहीं तेनी॥जळपीधे थी जाय॥रणछोड रं
गीला॥३॥तेम मारी पीडा मटाडवाने॥वैदरुं करे
वीचार॥ प्रेमसुधारस पाईने लालनो॥आपे करो
उपचार॥रणछोड रंगीला जमने॥४॥ ॥
पद॥३॥ ॥समाप्तम्॥ ॥रागपद॥ ॥
विरह तथा विनति विषे॥ ॥सुख नथि जमने
लगार॥छजीला सुख नथि अमने॥ अंतर दुःख
छे अपार॥छजीला सुख नथि अमने॥ सुखनथि ज
मने॥टेक॥ श्याम वियोगे छण छणे छाती॥मनमा
हुं अकुळाय॥ जळवियोगी मीननी पेरे मारो॥त
ल्फि तल्फि जीव जाय॥छजीला॥१॥ जेम सजळ सरोव-
र नी लोभी॥ तपि तपि कुटी जाय॥ तेम तम विना
मायव मारी॥ छाती कीरी दुःख थाय॥छजीला॥२॥

॥जेम बळता पर्वतनी मंजारी॥ अग्निदाझी अमु-
झाया॥ तेम आरत आंच अविलोकी माझां॥ अंतर अ-
ति अकळाया॥ छबीला छेला॥३॥ जेम दीपक सीखा-
मां पतंगना॥ पिंड ने पीड थाया॥ तेम विरहाग्निमां
पडि माझां॥ मन पण पणमां पीडाया॥ छबीला॥४॥
जेम जळ विनानुं पाण वृसतना॥ प्रतिदीन सूक-
ईजाय॥ तेम प्रीतम पाणी विना माझां॥ क्षणे क्ष-
णे शरीर सूकाया॥ छबीला॥५॥ जेम दुष्टाचारी
व्यभिचारीजनना॥ रूडी पदवी वेंचाया॥ तेम संक-
ल्प विकल्प शस्त्रे करी॥ मारूं मूरख मन छेदाया॥
छबीला॥६॥ प्रत्यु मळवानी आशाये करी॥ कष्ट
कप्यो काया॥ पण हवे हरि प्राण जाये नहि तम वि-
ना॥ मारे लाजनी लेजे संभाळ॥ छबीला॥७॥

॥ ॥पदहारी॥ ॥मन मारूं अकळाया॥ माध-
व मन अकळाया॥ सीणुं पण शांति न थाया॥
माधव मन अकळाया॥ टेक॥ वेद पुराण वेदांत
कहे करी॥ व्यापक सकळ जगमांया॥ पण हरि दृष्टिनो
दोष टळ्या विना॥ कहो केम दृष्टि देखाय॥ माधव मन
॥१॥ जक्तमां लगतां हरतां फरतां॥ सुख नथि
स्वप्ना मांया॥ मुजने मननो मोह मट्या विना॥ कहो
केम करी सुख थाया॥ माधव मन॥२॥ ज्हां ज्हां से-
हिये तहां तहां॥ देखुं छुं दुःख रूपा॥ लौकिक ल-

वनो जाव गया विना ॥ क्लेश नईनो छे रूपा ॥ माधवम
ना ॥ ३ ॥ जूठा जक्तनां साधन साध्ये करी ॥ जक्तनो
जेद न जाय ॥ मोहोटा मनना मोह कुंजाय पण ॥ तृष्णी
कदी नव थाय ॥ माधव मना ॥ ४ ॥ अनेक जन्मना पुण्ये म
ळ्युं ॥ पूरण प्रगटे प्रीत ॥ प्रीते पाप प्रपंच तजे मन
॥ समजे संतनी रीत ॥ माधव मना ॥ ५ ॥ संत तणा सं
गे संशय टल्यो ॥ संसार समूळो जया ॥ चिद जड ग्रं-
थि दूरी तमाकु ॥ दिव्य स्वरूप देखाया ॥ माधव मना ॥
६ ॥ ओ अधिकारे हूं नथि श्री हरी ॥ जेवो तेवो तुज दास
॥ रडतो देखी रंक लालनी ॥ पूरो अंतरनी आश ॥ मा
धव मना ॥ ७ ॥ ॥ पद ७५ ॥ ॥ शरणे पडीने
पोकार ॥ करुं हरी शरणे पडीने ॥ मारा मनमां
पीडा छे अपार ॥ करुं हरी शरणे पडीने ॥ शरणे ॥ ॥
॥ टेक ॥ क्यारेक मन पतंग पडे जई ॥ नारी दीपक मां
या ॥ प्रजळे अंतर अंग तथापी ॥ जाय छे त्यांय जनु
त्यांय ॥ करुं हरी ॥ १ ॥ क्यारेक मन पतंग पडे जई ॥ जु-
वति अजजडी मांय ॥ नर्क कुशानो प्रहार करी करि ॥
कहो केम करीने सेहेवाय ॥ करुं हरी ॥ २ ॥ क्यारेक मा
रु मन मांछलडुं ॥ जिव्हा रस वश पडे जाण ॥ तीक्ष्-
ण राग द्वेष शस्त्र करी छेदाय तहां ततकाळ ॥ करुं ह
री ॥ ३ ॥ क्यारेक मन मृग जुवति गीतः घंटा वज सु
णे निजकाना ॥ ज्ञान ध्यान धीरज रूपी जे ॥ पण मां

आपे प्राणदान ॥ कंकुहरी ॥ ४ ॥ अेवा अेवा अनेक अ-
नर्थ अे ॥ प्रतिदीन करे निरधार ॥ संकल्प रोग अे छेदी
ने मने ॥ आपे छे दुःख अपार ॥ कंकुहरी ॥ ५ ॥ संकल्पे
विषयनुं ध्यान धरे ॥ जेथी ऊपजे विषयनो संग ॥
संगे काम कामथकी प्रगटे ॥ क्रोध अग्नि अंगअंग
॥ कंकुहरी ॥ ६ ॥ क्रोधथी मोह मोहथकी थायछे ॥ श
स्म संभृतिनो नाश ॥ संभृति नाशथी बुद्धि ना-
श ॥ बुद्धिनाशे विनाशनी आश ॥ कंकुहरी ॥ ७ ॥ इ
त्यादिक बहु दुःख देखी हूं ॥ करगरुं कृपा निधान ॥ प्रे
मरस पई लोलावी लालना ॥ मनने आपो स्थिर
स्थान ॥ कंकुहरी ॥ ८ ॥ ॥ पद ॥ ७ ॥ ॥
सुणजे कृपा निधि कान ॥ केशव सुणजे कृपानिधि
॥ माया मनने करे छे हेरान ॥ केशव सुणजे कृपानि
धि ॥ सुणजो ॥ टेक ॥ क्यारेक संतनो संगकरी ॥ स
मजावुं मनने ज्ञान ॥ तो अंतर आवी जलावक-
रावी ॥ संत साथे धरावे मान ॥ केशव ॥ १ ॥ क्यारेक
मनने हरीरसनो हूं ॥ लोभजतावुं तान ॥ तो अ
ज्ञानक आवी रस मां रमावी ॥ त्यां ने भूलावे सा-
क्षात ॥ केशव ॥ २ ॥ क्यारेक तुज स्वरूप तणुं हूं ॥ मन
ने धरावुं ध्यान ॥ तो संकल्प करावी स्वरूप भूला-
वी ॥ लगावे तन मन प्राण ॥ केशव ॥ केशव ॥ ३ ॥
क्यारेक मनने नक्क मो हनो ॥ अंतरमां करावुं अ-

लाधा॥ तो वि षयवेगमां रति ऊपजावी॥५॥ आवे
नरतन नाव॥ केरीय॥६॥ क्यारेक संतनुं शील
सुणावी॥ ऊपजावुं संत रीं स्नेह॥ तो देह दृष्टि
ये नेह निवारी॥ दरशावे दोष गुण देह॥ केरीया॥
७॥ क्यारेक मननें तीरथ व्रतनो॥ नेह धरावुं
नेम॥ अे थकी अंतःकरण विमळ थइ॥ तने मळ
री शान्ति सुखक्षेम॥ केरीया॥८॥ तो तहां अवि
द्या अंतर आवी॥ ऊपजावे व्यतिभार॥ आकार
धर्म अकु कुखे आचरे पण॥ रीं त्रे थ कीतरे संसा
रा॥ केरीया॥९॥ त्यारे हूं समजावुं मनने॥ छो जे
थकी मोक्ष न थाय॥ पण यज्ञ धर्म तप तीर्थादिक क-
री॥ स्वर्गनां सुख तो पमाय॥ केरीया॥१०॥ नर्क दुः
खथी तो अक श्रेष्ठ छे॥ स्वर्गनां सुख अपार॥
माटे मन कर्म वचनने तुं लने॥ शुभ कर्म तणो अ
धिकार॥ केरीया॥११॥ तारे तहां माया आवी॥ म
नने ऊपजावे भर्म॥ अेवो आग्रह तुं लने छे तो॥ क
रने सुखे शुभ कर्म॥ केरीया॥१२॥ पण मारा अंतरनो
आरीयल॥ सुण ने मन तूं गमार॥ स्वर्ग थकी
मनुष्य लोकनां॥ सुख छे श्रेष्ठ अपार॥ केरीया॥१३॥
प्रत्यक्ष प्राप्त थयुं ते सुखनो॥ पामर करी परित्या-
ग॥ अदृष्ट सुखनी वात सुणी मन॥ मूरख करे क-
मलाग॥ केरीया॥१४॥ अेवी रीते अनेक प्रकारे॥ म-

नने उपन्न वैराग॥ अंतरंग अहि रंग कर्मनो॥ मुक्त-
ने करावे छे त्याग॥ कीर्तन॥ १०॥ अे अणवंती मायाए
त मारी॥ तमे माया पती भगवान॥ माटे वारो वारो
अेने वारो वारो॥ वेगे वारोने करुणा निधान॥ कीर्त-
न॥ ११॥ अे मायानुं अण अणगुं करी तमे॥ कृष्ण कृ-
पा मुक्त करो॥ संशय शोक समावी लाजने॥ आपो
अभय भक्त सुख रास॥ कीर्तन॥ १२॥ ॥
पद॥ ३॥ ॥ कुं करगरी कहुं वारवार॥ वेला हरी
वार करोने॥ दुःख दरीयो अंतरमां अपार॥ वेला
हरी वार करोने॥ टेक॥ नग आस्था नण भरसूं परि
पूरण॥ उठे तृष्णा रूपी तरंग॥ तेनी मुक्त मूरखने
थाय नित॥ आपद जलि अंग अंग॥ वेला हरी
॥१॥ मद मोह मकर मछ मुक्तने॥ खेंचे नित निर-
धार॥ विषय वेगमां वहावीने मने॥ दुःख आपे छे
अपार॥ वेला हरी॥ २॥ नाना विधि आशा रूपी म-
छी॥ आवर्त उठे छे अनंत॥ तेथी मुक्त पापी प्राणी
उंच्या नीच्य योनीमां भ्रमंत॥ वेला हरी॥ ३॥ काम
क्रोध मद लोभादिक मही॥ नणनंतु छे अपार॥
तेना दुसह दुःख तणो कहो॥ केम करी कहुं उच्चार॥
वेला हरी॥ ४॥ महानरक चिंताग्नि रूपी॥ वडवा
नल रहे मांय॥ जेनी आंच्य उठे अंतरमां॥ ते-
नी ग्रुसे पीड मने थाय॥ वेला हरी॥ ५॥ छप्पदार

थयं मोहयजोरे ॥ ऊमंगीऊठे छे आपरा॥ तेथी
उपजे अंतर तटना॥ वृक्षो विवेक विचारा॥ वेला
करी॥१॥ क्यारे पण जे हुं जकरीयानो॥ आवे नहि
अवसांना॥ माटे नामनायमां लाजनेथीपी॥ पा
रऊतारो लगयाना॥ वेलाकरी॥७॥ ॥पदापे
॥ ॥तपे तनतरूपरजकु तापा॥ विठ्ठलजीवि
लापकरीकहुं॥ माटे वेगे जोलावोने जापा॥ विठ्ठलजी
विलापकरीकहुं॥टेक॥ जेम तरू त्रयणे समयमांसा
हे॥ शीतवृष्टा तपघामा॥ तेम तनतरू तपे त्रिवि-
धितापमां॥ नथि रातदिवस विश्रामा॥ विठ्ठलजी
॥१॥ जेमतरूमां घण जंतुपडीने॥ लीतरकरेलं
गारा॥ तेम तनमां चिंताजंतुनुं॥ अंतर कुं अपो-
लारा॥ विठ्ठलजी॥२॥ जेम तरूमां तनमय थई पं-
खी॥ करे कूण लक्षण उद्योग॥ तेम तनमां तन्मय
थईने कूं॥ लोगवुं विषयना लोग॥ विठ्ठलजी॥३॥
॥ जेम तरू छेदे पक्षी पणघणा॥ छेदे मनथी छेदाय
॥ तेम मोहने नारी निजनारी सरीखुं॥ कुं जदहीने
धाय॥ विठ्ठलजी॥ ४॥ जीवनुं प्रौढी मतीनुं पक्षी॥
तरू मांहीरहे नले पाया॥ साक्षी रूपे रहीतरू नांकूण
॥ कुदिखाय नहीन दुजाय॥ विठ्ठलजी॥५॥ तेमज
तरूमां साक्षी लूते॥ रहो अंतरजामी आपा॥ कू-
ण निस्त्रेही निर्लेपि माटे॥ पसे नहि तन तापा॥

विठ्ठलजी॥ढा॥हुं तुज सहचारी तुजसंगी॥तुजसम
सनेही तात॥तोपण दुःख पासोछुं माटा॥करग्रहु
साक्षात॥विठ्ठलजी॥१॥अेकस्थण वासीनी जंत
जनमीधर जोतेसाक॥निजसंगीने दुषीयो देषी॥
तमे आपो जनभक्ति सुखसाज॥विठलजी॥२॥जन-
भक्ति सुख आपीने हरायो॥ईशर गुणनो त्याग॥जन
जनुनो जलत्यास छोडावी॥आपो आपविषे अनु
राग॥विठ्ठलजी॥३॥ले वोते यो पण तुजशरणे
॥आव्यो श्री रणछोड॥माटे कहे लालने रडतो दे
षी॥कृपासिंधु पूरो मारा कोड॥विठ्ठलजी॥४॥
पद॥७॥ ॥समाप्तम्॥ ॥रागकाफी॥
अेकता विषे॥ ॥मणीया तमे घटमांय॥जड
जअविनाशी गीरिधर॥जेम तंतुमणे पटमांय॥अ
कण अविनाशी गीरिधर॥टेक॥घणा दीवसथी अ
ति आतुरता॥मळवाने हती मन॥ते तमे पूरीपा
डी प्रभुजी॥कहे शीदने कहुं धनधन॥अकण अवि॥
॥अकण कृपाकर णि जनयन करेर्ठथी॥चैतननी ग
ती गूढ॥ते अंतर अविलोकीने मान्युं॥मन थई ग
युं दृगमूढ॥अकण अवि॥२॥ते दीवसथी जनकसं
गाथे॥मननेनथी जकूर॥जड चैतन ग्रंथी गई छू-
टी॥लाणुं ब्रह्मभरपूर॥अकण अविनाशी॥३॥
॥देहनणा गुणदोष नथी लहुं॥कैवल्य ब्रह्म प्रकाश

સા॥ લાલ કહે ગુરુકૃપા કરે તારે ॥ એ પદમાં હોયવા
સ॥ અક્ષણ અવિનાશી ગિરિધર ॥૪॥ સમાપ્તમ્
॥ ॥રાગ ગરબો॥ ॥બોધતથાજ્ઞાન
વિષે॥ ॥કે ગરબો ગુરુગમથી ગહીયે ॥કે શર-
ણે સતગુરુને રહીયે ॥કે જગતની ત્યાગી નીત લઈ
યે ॥કે ગરબો॥ટેક॥કે કારતકે કર્મ કૂડાં ન કીજે ॥કે
તનમનધન ગુરુને દીજે ॥કે પ્રેમરસ પ્રીત કરી પીજે
॥કે ગરબો॥૧॥કે માગશરે માન મોહ ટાળો ॥કે જ
ગતનો ઠાઠ તજી ઠાળો ॥કે ગાંડું સંશયની ગાળો॥
કે ગરબો॥૨॥કે પોષે પ્રભુ પ્રીત્યે મળશે ॥કે તનના
ત્રિવિધિ તાપ ટળશે ॥કે વૃત્તિ તારી અંતરમાં વળ
શે ॥કે ગરબો॥૩॥કે માહે મોહોટાને ભજીયે ॥કે
ભાવ ધરી અંતર ભણીયે ॥કે અંતરગતી આતમ-
ની કણિયે ॥કે ગરબો॥૪॥કે ફાગણે ફેરા શીદ ફરી
યે ॥કે પરપંચ મનના પરહરીયે ॥કે તત્વજ્ઞાન સમજી
તરીયે ॥કે ગરબો॥૫॥કે ચઈતરે ચૈતન થઈ ચાલો
॥કે મારગ મોહોટાનો ઝાલો ॥કે જ્ઞાનદીપક ઘટ
અજવાળો ॥કે ગરબો॥૬॥કે વઈશાખે વેદ તણી
વાણી ॥કે ગુરુવચને લેજો જાણી ॥કે ભિન્ન નથી પ
રપોટે પાણી ॥કે ગરબો॥૭॥કે જેઠે જૂઠો જગ જ-
ણો ॥કે સ્વપ્ન સરીખો પરમાણો ॥કે આતમ અનુ-
ભવ ઉર આણો ॥કે ગરબો॥૮॥કે અશાડે અંતરમાં

लेयुं॥रे अलखनुं दुःख सहु खोयुं॥रे चित मारुं चैत
न मां प्रोयुं॥रे गरजो॥३॥रे आवणे सुजनी भूंडे-
ली॥रे थई उर आनंदनी घेली॥रे कर्मनी डीयग
ई ठेली॥रे गरजो॥४॥रे लाहवे भ्रान्ति मारी
त्यागी॥रे रह्युं मन ज्ञानमरंग रागी॥रे वासनावि
षयतणी त्यागी॥रे गरजो॥५॥रे आस्यो आव्यो
ऊनरमां॥रे गोविंद मळीया घटमां॥रे नेमडां
ई तंतु मळ्या पटमां॥रे गरजो॥६॥रे रच्या सदू
मास पियारी॥रे प्रतिपद शिक्षा छे सारी॥रे जो-
ल्यो छे नानदनो भीखारी॥रे गरजो॥७॥ ॥
गरजो॥१॥ ॥रे गरजे गोविंदने रमीये॥रे तन
वमां लूल्यां शीद तमीये॥रे अलख दुःख मिथ्या
शीद अमीये॥रे गरजो॥टेक॥रे शरतके कृष्ण कृष्णक
रीये॥रे करतां करतां उभरीये॥रे जातां पीतां चीत
धरीये॥रे गरजो॥१॥रे मागरीरे मान मोह मूको॥
रे चतुराई लोकतणी चूको॥रे नक्क छे रूपातणो
भूको॥रे गरजो॥२॥रे पोसे प्रभु रुं प्रीत करीये॥रे
दोष पोताना देखी डरीये॥रे परना दोषो परहरीये॥रे ग
रजो॥३॥रे माह मोह छोडाने मणीये॥रे वीवेकनी वाणी सां
भळीये॥रे लक्षन मारगमां नीत भळीये॥रे गरजो॥४॥रे
भूगणे फूल्या न वकरीये॥रे डगलां डीडीने भरीये॥रे
देह अतिमानना हिलघरीये॥रे गरजो॥५॥रे अघ्छे-

तने चिंतारीझीकर्या ।। छे ।। करीजलजलवसागर त-
रीये ।। छे ।। भोगटकेराशीयक्षुरीये ।। छे ।। गरजो ।। ३ ।। छे ।। धर्ठ
शी ।। छे ।। वातकरुंसाथी ।। छे ।। रह्योतमेरामरंगराची
।। छे ।। कर्मनी कथा तजेनाथी ।। छे ।। गरजो ।। ४ ।। छे ।। जेठ
जगतजीवनजनजीये ।। छे ।। जक्तनोजूठोसंगतजीये
।। छे ।। श्यामसमणवासाधनसजीये ।। छे ।। गरजो ।। ५ ।।
छे ।। जरी ।। ऽ ।। अंतरमां जाणो ।। छे ।। तजोतमे चतुराई
नोचाळो ।। छे ।। विषयथीमनपाछुवाळो ।। छे ।। गरजो
।। ६ ।। छे ।। श्रावणेसृष्टीतणास्वामी ।। छे ।। सहुघटना
अंतरजामी ।। छे ।। रह्यो नित चरणेशीशनामी ।। छे ।।
गरजो ।। ७ ।। छे ।। भादरवे जक्ततणाछोडा ।। छे ।। पुरे प्रे
मे श्रीरणछोडा ।। छे ।। जगतमां नथीजेनीजोडा ।। छे ।। ग
रजो ।। ८ ।। छे ।। आसोये आरतजेथारी ।। छे ।। दयाळु
दीलमां देजोधारी ।। छे ।। प्रेमजणप्रीतकरी पासो ।। छे ।। ग
रजो ।। ९ ।। छे ।। रच्या पूरा जारे मासा ।। छे ।। अंतरमां
आणी उलासा ।। छे ।। कहे कर जोडी सालमदासा ।। छे ।।
गरजो ।। १० ।। छे ।। कर ।। ।। २ ।। ।। समास
म् ।। ।। विनतिविषे ।। ।। छे ।। सुणोश्रीरण
छोड रंगीला ।। छे ।। सदासंकटमां संगीला ।। छे ।। सुणो
श्रीरण ।। टेक ।। छे ।। हारतके कहुं शुं घणुंकुं कृपाळ ।। छे ।।
तमे छो जक्ततणा प्रतीपाळ ।। छे ।। श्याम मारी वे
गेकरोने संभाळ ।। छे ।। सुणोश्रीरणछोडा ।। १ ।। छे ।।

मागशरे मारा मननी वात ॥ के कहुं छुं तमने मारा तात ॥ के मुजने थाजो तमे साक्षात ॥ के सुणो श्री ॥२॥ के पोषे प्रीतम मळवा मन ॥ के चितमां थाय छे अकुचितपन ॥ के तपे मारुं विरह तापमां तन ॥ के सुणो श्री ॥३॥ के माहे मन केम रहे मोई ॥ के जगतनी जाळ जुठी जोई ॥ के अंते न थि कोई कोईनुं कोई ॥ के सुणो श्री ॥४॥ के फागणे शुं कहुं मनमां ॥ के त्रिविधिना ताप तपे तनमां ॥ के सरखुं नथि सुखरजनी दनमां ॥ के सुणो श्री ॥५॥ के चईतरे चीतमां चई चटकी ॥ के अलकनी पीगरिल अटकी ॥ के लाजमें लोकतणी पटकी ॥ के सुणो श्री ॥६॥ के वईशी ॥ के वरदान आपो ॥ के काणकर्मनो लय कापो ॥ के अथीर मनथी करी थापो ॥ के सुणो श्री ॥७॥ के जेठे जक्तमां नथि कोई ॥ के जेरे मारुं कुजनां जे जोई ॥ के मारे तमने कहुं छुं रोई ॥ के सुणो श्री ॥८॥ के अषाडे अंतरनाजामी ॥ के कहुं दीन तमे दीनबंधु स्वामि ॥ जेरे तेथी नहिं आंधे जामी ॥ के सुणो श्री ॥९॥ के श्रावणे सुणो तमे सर्वाधारा ॥ के दयानिधि दीनी परम उदारा ॥ के हुं पाय करगरुं तुज द्वार ॥ के सुणो श्री ॥१०॥ के भादरवे भावठ भेलु भागो ॥ के जक्तथी मनमां हुं जागो ॥ के लगन मारुं तम साथे लागो ॥ के सुणो ॥११॥ के आसोये अर्थ जेज मारो ॥ के सदा हुं शरणे रहुं ताहारो ॥ के लय संकट न लहुं क्यारे ॥ के ॥ सुणो श्री ॥१२॥

करव्याछे मासकडा आजार ॥ के सुणे ने कोई नरनेनार
॥ के करे तेने लाल प्रीतम प्यार ॥ के सुणोश्री॥४३॥

॥ ॥गरबो॥४॥ ॥ के रटोश्री रणछोड
रूपाळा ॥ के ठाकोरना ठाकोर दयाळा ॥ रटोश्री॥टेक
॥ के कारतक कोईये नथी ताहरुं ॥ के मूरख कहुं कहे माहरुं मा
हरुं ॥ के रेहेशे संकटमां सहु न्याहरुं ॥ के रटोश्री॥१॥ के
मागशरे मूक्य मननुं आशा ॥ के वारेवारे तुजनेयाउं
॥ के कह्युं के मनथि करतो माहरुं ॥ के रटोश्री ॥२॥ के पो
षे परपंच परहरजो ॥ के सेवा तुं सत गुरुनी करजो ॥
के तेथी तुं भवसागर तरजो ॥ के रटो श्री ॥३॥ के मा
हे मान्य मूरख पापी ॥ के अमूल्य तने मनुष्या देह
आपी ॥ के कष्ट ताहरुं नाख्युं छे कापी ॥ के रटोश्री ॥४॥ के
फागणे डोंगर करया केरा ॥ के लक्ष चोरासी जन्मकेरा
॥ के हवे प्रभु भजवानी वेळा ॥ के रटो श्री ॥५॥ के च
ईतरे धामधाम चूक्यो ॥ के मारगतमे पापतणो मू-
क्यो ॥ विषयनो थाट तजने सूक्यो ॥ के रटोश्री॥६॥ के
वईशाखे वीवेकतणी वात ॥ के सुणो गुरुमुखथी
साक्षात ॥ के करो कुडो विचार अहोरात ॥ के रटोश्री॥
७॥ के जेठे नगर नक्क तरजो ॥ के हरी हरी मुखमां उच्चा
रजो ॥ के ध्यान धणीनुं उरमां धरजो ॥ के रटो० ॥८॥ के
अषाडे अर्थ सरे तारो ॥ के तत्पद त्वंपद विचारो
॥ के असिपद अंतर मां धारो ॥ के रटोश्री ॥९॥

के आवणे जडु संशय टळशे ॥ के माधवजी मनमां
मण शो ॥ के भाव देखी अंतर भणशो ॥ के रटो श्री ॥२॥
के भादरवे भेद थशे दूर ॥ ऊगे अंतरमां ज्ञान सूर ॥
भासे भवमां ब्रह्म भरपूर ॥ के रटो श्री ॥४॥ के
आसो ये आनंदनो चंद ॥ के प्रगटे परमानंद कंद ॥ के
टुटे भवनो भारे फंद ॥ के रटो श्री ॥५॥ के रख्या कूडा
जारे मास ॥ के ठाकोरना ठाकोरनी पास ॥ के करजो
डी लालदास ॥ के रटो श्री रणछोड रूपाळा ॥३॥

॥ ॥ गरबा ॥२॥ ॥ स्नमाहीम् ॥ ॥

अथ गरबा रागना महिना लिख्यते ॥ ॥

विनति विषे ॥ ॥ कारतके कूडां कर्म, कर्यां भवभ
रमीरे ॥ तेना दुःखनो समजी मर्म, जागी चित्त च
कीरे ॥१॥ मागशरे मूरख मन्न, भवमां भमियुं रे
॥ तप्युं त्रिविध थी तापमां तन्न, दुःखनथी समीयुं रे
॥२॥ पोषे प्रभु शुं प्रीत, थई नथि मनमां रे ॥
तेनी चिंता मारे चीत, थाय निश दिनमां रे ॥३॥
माहे मारुं मंन, जडु जडणाय रे ॥ प्रभु मण चावे
चिंतवंन, दीन दीन थाय रे ॥४॥ फागणे मूढ गमार,
विषयमां करे छे रे ॥ अे पापतणो भंडार, भारे भरे
छे रे ॥५॥ आ चइतरे चीतमां अपार, चिंता थाय
रे ॥ आ दुःख दरीयो संसार, तरयो केम जाय रे ॥६
॥ आ वईशाखे वारवार, जोवुं वनमां रे ॥ वईशाख

वेलीअपार॥मारातनमांरे॥७॥आ जेठे जगदा
धार, मुजने मळजोरे॥आरतनी आंम अपार, हरी
तमे हरजोरे॥८॥आ अषाडे आंसुधार॥वहे लो
मनमांरे॥ अंतरना दुःख हरनार, मळो हरीमन
मांरे॥९॥आ श्रावणे सर्वाधार, शुं कहुं तमनेरे॥
आपो अंतरमां हेतार, सुख थाय अमनेरे॥१०॥
आ भादरवे भगवान, मुजने मळियारे, मने आप्युं
अपियण दान, अढळक ढळियारे॥११॥आ आ
सोये आनंद, उरमां अपाररे॥ मने घरमां मळ्या
गोविंद, अजिताधाररे॥१२॥आ रसियाजीरेमा
स, उलट आणीरे॥ अंतरनी पूरो आस॥लाल
वदे वाणीरे॥१३॥ ॥समाप्तम्॥ ॥रागग
रबो॥ ॥उपदेश विषे॥ ॥आकारतक क
रसुलक्षम, हेतकरीनेरे॥ तूं राख्य ह्रदामां राम, ध्या
न धरीनेरे॥१॥आ मागशरे मूरख मूढ्य, मननुं
जाडूरे॥ तुं चितनुं चेटक थूड्य, तरे तन ताढूरे॥२
॥आ पोसे करने प्रीत, प्रभुनी साथेरे॥ सूपीदे
तनमन जीत, हरीने हाथेरे॥३॥ आ माहे मोटम
मान, मूकी देजेरे,॥ समजी सतगुरुनी सान, शर
णे रहेजेरे॥४॥आ फागणे मायाफंद, मनथी तज
जेरे॥ जे मोह उपजावे मंद, सुर मुनी अजनेरे॥
५॥आ चइतरे प्रीतमां चेत, तापजरणारे॥

तुं कर हरीसाथे हेत, मनमां मळशे रे ॥३॥ आ वर्षा ऋतुमां सुखसान तुजने आपे रे ॥ भूलावे भवनुं भान, दुःख कापे रे ॥७॥ आ जेठे जीवतुं जग, अवसर छे भलो रे ॥ तारां प्रगट्यां पूरण भाग, भावे था भेळो रे ॥८॥ आ अषाढे अंतर रंग, भूल्यो शुं भमे छे रे ॥ घरघर रसियो गोपाळ, रंगे रमे छे रे ॥९॥ आ श्रावणे नीत सतसंग, जे जन करशे रे ॥ तेने प्रगट प्रभुशुं रंग, स्नेही रंगशे रे ॥१०॥ आ भादरवे शुद्ध भेद, मुजने मळियो रे ॥ मल्यो मिथ्या जगदनो खेद, तापज टळियो रे ॥११॥ आ आसोये रणीआळ, अंतर अमने रे ॥ थई आतम दृष्टि उघाड, शुं कहुं तमने रे ॥१२॥ आ अंतर आणी उल्लास, जे जन गासे रे ॥ तेनां नीश्चे कहे लालदास, पाप पळासे रे ॥१३॥ ॥ अथ गरबो ॥ ॥ बोधविषे ॥ ॥ आ कारतके कर सतसंग, संशय टळशे रे ॥ थाय लिंग वासना भंग, पाप प्रजळशे रे ॥१॥ आ मागशरे मल्यो अवतार, मनुष्यनो मूंघो रे ॥ केम आणस आणी अपार अंतर ऊंघ्यो रे ॥२॥ आ पोषे प्रीत विचार, भूठा जगनी रे ॥ हरि श्वासोश्वास संभार, लागे लगनी रे ॥३॥ आ माहे माया मेल, तारा मनथी रे, छे खोटो जगदनो खेल, तुजने तनथी रे ॥४॥ आ फागणे नाख्यो फंद, दर्सनो फाजे रे ॥ हुं ज हीयामां आनंद, भूलीभाजे रे

॥१॥ आ चर्चतरे चीतमां चाम, तणी चर्च्य चरकीरे॥
तेथी दील चाहे छे दाम, लोलमां लटकीरे॥३॥ आ व-
र्धशा के वैराग, वीच्यमां करनेरे॥ तुं विषयतणो करी
त्याग, निरले करनेरे॥४॥ आ जेठे जूठ निवार, सा
मुं जोलेरे, तूं तन मन धन शिरधार, हरीने जाणेरे॥
५॥ आ आषाडे अखिलाधार, गुरुगमे गासेरे॥ ते-
ना जन्म मरण अवतार, जगदीश जसेरे॥६॥ आ
श्रावणे साधन च्यार, साचे सजनेरे॥ गुरु गोविंदना
अवतार, लावेलजनेरे॥७॥ आ भादरवे जगजीं
न, जूली जनेरे,॥ तूं समजी गुरुनी सान, सुखी
यो थानेरे॥८॥ आ आसोये अविनाश, अंतर मण-
शेरे, घटघरमां ज्ञानप्रकाश, तापत्र टळशेरे॥९॥ आ
रचीया जारे मास, शीखामण सारीरे, जोज्यारं-
गीलानो दास, लालजी हारीरे॥१०॥ ॥समा
प्तम्॥ ॥अथ गरबा रागनो कक्को लिख्यते
॥ ॥करकेशवकीरतनं, तापत्र टळशेरे॥शीत
ळ थाशे तनमन, मोहन मळशेरे॥१॥ खाखरे खरी
अे वात, कहुं छुं तुजनेरे,॥ तूं हरीजन मारा तात, त
जो तमरजनेरे॥२॥ आ गोविंद गुणनुं गान, प्रीते
करनेरे॥ साच्ये दील धणी ध्यान, दृढ तूं धरनेरे॥३
आ घणुं कहे छे थाय, हरीनव लूणोरे.॥ जे चित-
मां सारुं सूझाय, तो जय समूळोरे॥४॥ आनथि

स्वारथ कांई लेश, कहुं छुं सामुंरे ॥ तज्यो घरनो वेष, ग
वनो वेष, अंतर कायूंरे ॥ ५ ॥ आये तीरोडे तो चेत,
आणस, मूकीरे ॥ तूं हरी साथे कर हेत, चेटक चूकीरे
॥ ६ ॥ आ छेल छबिला लाल, प्रभुनी साथेरे ॥ तूं
कर अंतरमां वाल, थई सनाथरे ॥ ७ ॥ आ जीवननुं
हूण ओह, विषय सुख तजीयेरे ॥ हरि भजवो नथि न
रहेह, त्यांवे लजीयेरे ॥ ८ ॥ आ जरपर नेह निवार
तारा तनमांरे ॥ तूं अंतरमां हरि धार, सुख थाय म-
नमांरे ॥ ९ ॥ आ नरनो धरीने देह, कृती करे कूडीरे ॥
तारा तनपर ऊडशे खेह, गती थशे भूंडीरे ॥ १० ॥
आ टोपी रीर धरी जाल, खेल कर्यो खोटोरे ॥ तने
रूपे न संत समाज, मनथी थयो मोटोरे ॥ ११ ॥
आठरी नथि जेठेठाम, जन्म धरीनेरे ॥ तें कीधां कूडां
काम, हरी वीसरीनेरे ॥ १२ ॥ डाह्यो दुनीया मांय, थ-
यो तूं मनथीरे ॥ तूं डाह्यो तो कहेवाय, तजे सुख त-
नथीरे ॥ १३ ॥ आ ढांक्युं केम रहे पाप, जमपुर जासो
रे ॥ अति कीधा असत्य आलाप, मार जखासोरे ॥
१४ ॥ आ रण तारुं रणि जाय, वेणा वणसेरे ॥ जेथी हरी
मारग भक्ति माय, जयदुःख रणशोरे ॥ १५ ॥ आ तारुं
तो नथि तंन, पामर पापीरे ॥ तूं तज तेनुं चिंतवंन,
कष्ट जाय कापीरे ॥ १६ ॥ आ थिर नहीं रहे शरीर, जे
तामां जसेरे ॥ जे जेम नदीयुंनां नीर, जाण गां

थाशोरे ॥१७॥ आ देह छे तूं दष्ट, शिरपर काणरे ॥ केम
थाय छे सुख स्पष्ट, श्यांम संताणरे ॥१८॥ आ धन
जोबन तन रंग, जणगो थाशोरे ॥ जे नेम कांइ रंग
पतंग, ऊडी जशोरे ॥१९॥ आ नयणे निरखी देख,
गया जकु जणियारे ॥ जे तारी नजरे अनेक, काणे
छणीयारे ॥२०॥ आ पाप पोटनो जार, मांथे तें मे
ल्योरे ॥ तूं तारे हाथे ऊतार, अवसर छे लोरे ॥२१
आ देरा तें जकुधार, जवमां करीयारे ॥ लख चोरा
सी अवतार, फेरीक धरीयारे ॥२२॥ जा जकु पाम्यो
तुं दुःख, नर्क नीवासेरे ॥ घणां लोगव्यां छे तें सुख
स्वर्ग वासेरे ॥२३॥ आ जरक्यो तूं जकुधार, जं
ग जवमांरे ॥ तें जोयो देरा अपार, भज्यो दुःखद
मांरे ॥२४॥ आ माया काणने कर्म, वगे वहेछेरे ॥
नाना विध देहना धर्म, तुजने देहछेरे ॥२५॥ आ जी
व देपे तूं जग, देख थईछेरे ॥ तूं करने विषयनो त्या
ग, गति केम गईछेरे ॥२६॥ आ राख्यने दृढ विश्वा
स, लाचक कणशेरे ॥ समरण कर श्वासो श्वास, हरि
दुःख दरशेरे ॥२७॥ आ लेने हरीनुं नाम, लगन धरी
नेरे ॥ कर अंतरमां आराम, डीक गीनेरे ॥२८॥ आ
वचन गुरुनुं धार, संशय टणशेरे ॥ मननां पेड दाने
नीवार, अंतर मणशेरे ॥२९॥ आ समशे शोक सं-
ताप, पुण्यने पापेरे ॥ छे तेनो कर्मने ऊत्थाप, टणशे

जापेरे॥३०॥ जाणेरसेंनहिंनिजधर्म, जपेंड
नंदरे॥ समजेनहींजेनोमर्म, मूरखमंदरे॥३१॥
आसमजेसतगुरुसान, ज्ञेनात्म धीउरीरे॥ तेल
लेलक्कनुंलान, वीवेकीचारीरे॥३२॥ आहरीगु-
णअनंतअपार, नीतनीतगानेरे॥ हरीलालमी
तमरीं प्यार, खुशीयोथानेरे॥३३॥ ॥समाप्त
म्॥ ॥अथतिथीयोलिख्यते॥ ॥जोधवि
षे॥ ॥आ पडवानोछे देह, तारोपापीरे॥ कुर
नारायणशुंनेह, अंतर आपीरे॥१॥ आबीजे
बीजीवात, मूकीदेजेरे॥ ललिप्रीते भजुदीनरात,
शरणेरहेजेरे॥२॥ आ त्रीजे नरतन नाव, तुजने
आप्युंरे॥ तारोपाप्यो सघणोदाव, दुःखकाप्युंरे॥
३॥ आ चोथे चितमांधार, हेतेहरिनेरे॥ आपेअ
नुंपायापुअपार॥ करुणाकरीनेरे॥४॥ आ पांच
मेकरनें प्यार, गुरुमांजपाररे॥ तारानावनीएस
लाण, करणाधाररे॥५॥ आ छठे छांड जधर्म, ल
रातनथीरे,॥ कृयायुकृडांकर्म, मूकमनथीरे॥६॥
आसातमेसत्याधार, अंतरधरजेरे॥ मर्छपापप्रपं-
चनो लार, लूणिनलरजेरे॥७॥ आ आठमेनहि
जपेडाय, ताउंनावरे॥ शोध्यलेहदरीयामांय,
लक्कि लावरे॥८॥ आ नौमे नारीजाउ, तेनेशरणे
रा आज्ञो पड्योमारगमांपाडाउ, लोईनेपालारे॥९॥

आदरामीये हरी देरा, पेले पार रे॥ उतरीने करो भव
रो, टळे संसार रे॥१०॥ जो जेवा दरशीये जेह रूप,
हरीनुं देखोरे॥ तमे तेमां थई तद्रूप, प्रेमे पेखो रे
॥११॥ जो द्वार दरशीये दुःख दूर, ताहरुं पारोरे॥ परम
नंद प्रेमनुं पूर, उर उलसावोरे॥१२॥ जातेररो
त्रिगुणाकार, मायारळ रोरे॥ धरो वृत्ति अखाका
र, पाप प्रक्षळ रोरे॥१३॥ चोदशे चित चेतन,
परस्पर मळ रोरे॥ तूं लू लिखीताहुं तन, संशय ट-
ळ रोरे॥१४॥ आ पूनमे पूरण प्रीत, प्रभु रंग करजे
रे॥ तमे लाल प्रीत मनुं नीत, ध्यान दृढ धरजेरे॥
१५॥ ॥समाप्तम्॥ ॥अथ कक्को लिख्यते॥
॥ ॥उपदेश विषे॥ ॥करी ये श्रीकृष्ण उ-
पासना॥ ओ राग॥ ॥करीये सेवा घनश्यामनी
॥ अंतर आणीने हेत॥ काचीकायानपिंडमनी॥
चूपे चीतमां तूं चेत॥ करीये सेवा घनश्यामनी॥१
॥ खरपर खाली थीइने करे॥ खलकनो खोटो छे
खेल॥ मूरख रीझीने मथी मरे॥ तारा मनथी तूं मे
ल॥ करीये०॥२॥ गति तारी तूं वीचारने॥ ननी
नठर नीवास॥ खेदुःख अंतर संभारने॥ समरण
कर श्वासोश्वास॥ करीये सेवा०॥३॥ घडी पळला-
खेणी जायछे॥ मूंघो मनुष्य अवतार॥ दाय
चढ्यो हीरो जाय छे॥ कोडी जह्ले गमार॥ करीये से

वा॥४॥ नथि नथि भक्तमां भजन कीधुं॥ तारुं हुं जहर
नारा॥ मीथ्या शीदने मरे रोई॥ हेते हरीने संभारा
करीये सेवा॥०॥५॥ प्रीतमां चटको नथी लागतो॥ हे-
जीन रहना हूज॥ कहवतुं के मन नथी लगतो॥ सूतो
रेहे हेजी सूजा॥ करीये॥६॥ छलजाज मनना भू
कवे॥ सांचे रायरीराम॥ चतुराई भक्तनी चूके
॥ नीरमल लेने हरीनाम॥ करीये सेवा॥७॥ जेतां
जेतां जोजन गयुं॥ शीरपर शत्रु छे काळ॥ जायुं घन
ण जाय छे वखु॥ प्रीतीनी बांधने पाळ॥ करीये से-
वा॥८॥ अरपेर अंतर संभारने॥ चैतन रतन भंडार
॥ अंतर द्रष्टे तूं न्याळने॥ ताहूं टळरी अंधकार॥ करी
ये सेवा॥९॥ नीश्चे करीये हरीनामनो॥ धरीये घ-
णीनुं दीलध्यान॥ मारग साच्यो घनश्यामनो॥ से
वे भूलाय भगवान॥ करीये सेवा॥१०॥ टळशे अं-
तरनी आपदा॥ भजीये भावे भगवान॥ हरीने शे
रणे रहीये सदा॥ तजीये तननुं अभिमान॥ करीये
सेवा॥११॥ ठगनी जाळ अंतर जनी॥ काम क्रोध
महालोभ॥ संगत तजने तूं तेहनी॥ क्षणे क्षणे कर
रे अक्षोभ॥ करीये सेवा॥१२॥ डसीयो सरप संस
रनो॥ तेनुं चढीयुं तने झेर॥ वाध्युं वीषयी वीषय वीका
रनुं॥ आवे अंतरमां लेहेर॥ करीये सेवा॥१३॥ हरण
कुं ढोर मन वनवनमां॥ कूदां करे छे अेकला॥ तत्पर

रहे तरुणीना तनमां ॥ तेने देखी तूं लाज ॥ करीये से
वा ॥ १४ ॥ रण तारे मांथे वाध्युं घणुं ॥ लक्ष चोराशी
अवतार ॥ करने साधन तूं ते तणुं ॥ हेते हरिने संभा
र ॥ करीये सेवा ॥ १५ ॥ तजये विषयनी वासना ॥ स
जये साधन सार ॥ दासन थइये जगआसना ॥ स
मज तूं सारअसार ॥ करीये सेवा ॥ १६ ॥ धीरज नता
इं रेहेसे नहीं ॥ जेतां जेतां मां जया ॥ जमकींकर कुंज
देशे सही ॥ तेनो कर ने उपाय ॥ करीये सेवा ॥ १७ ॥
दोष न देजीये दासना ॥ हरीजन हरीने हजूर ॥ अ
तो आद्य अनादना ॥ दीलनी दुबधाथी दूर ॥ करीये
सेवा ॥ १८ ॥ धीरज धरीने नीहाळजे ॥ चितमां चेत
नचंद ॥ प्रेमसुधारस धारजे ॥ अंतर थाशे आनंद ॥
करीये सेवा ॥ १९ ॥ नारदमुनी उपदेशनुं जने ॥ दुर्जन जन
रनो अवतार ॥ ते तो प्रगट थयो तुजने ॥ समरण क
रने तूं सार ॥ करीये सेवा ॥ २० ॥ पर पंथ मननां तुं मुक
जे ॥ साध्यो कर ने सतसंग ॥ तन मन धन गुरुने तूं प
जे ॥ प्रगटे पूरण रंग ॥ करीये सेवा ॥ २१ ॥ कृतार कूश
करीया घणा ॥ जूठा जक्त मोजार ॥ तारे माथे नथी
र कीमणा ॥ मूरख मनमां वीचार ॥ करीये सेवा ॥ २
२ ॥ जोसे तेने तूं जाणजे ॥ अनुं अकळ स्वरूप ॥
मननो धोखो दूर ताणजे ॥ अंतर लासे अनूप ॥
करीये सेवा ॥ २३ ॥ लमना मननी परीक्षो ॥ कमळ

धायक वीचारा॥ तत्पद त्वंपद दूरथयो॥ असीपद अं-
तरमां धारा॥ करीयेसेवा॥२०॥ माया जण तो तहां छे
तदा॥ त्यां पडी जातमनी लूणा॥ स्वपनानी अनरथ
आपदा॥ लगे लयसमूल॥ करीयेसेवा॥२१॥ ल-
गेकुचपणुं नशे॥ टळशे मनना प्रपंच॥ तत्वने स-
मजेथी सुज थशे॥ संशय रेहेशे नहीं रंच॥ करीयेसे
वा॥२२॥ रहीये गुरूने शरणे सदा॥ राखीने दृढ वी
श्वास॥ माया क्लेश नथी तहां कदा॥ ओतो अणजड अ
विनाश॥ करीयेसेवा॥२३॥ लगन धरीने तूं ज्याणले
॥ अंतर आतम सूर॥ मनने पाछुं तूं वाळले॥ ताकु
धारी तम दूर॥ करीयेसेवा॥२४॥ वेद वेदांत वदे सदा॥
हरीनी लीला अनंत॥ शेषमहेश अनसारदा॥
जेनो पामे नही अंत॥ करीयेसेवा॥२५॥ सांख्यी शी
जामण सार छे॥ दीनने आपीये दान॥ गुणगोविंद
ना अपार छे॥ तेने सुणीये नीतकान॥ करीयेसेवा
॥२६॥ जोणे जनक जोगथई नशे॥ तनने आपो पु
आप॥ तनमनताकुं शीतळ थशे॥ टळशे त्रीवीधी
ना ताप॥ करीयेसेवा॥२७॥ अज्ञानुनो संशय करी
॥ लाणे ब्रह्मस्वरूप॥ समजीने अंतर सुजीयो थ-
शे॥ दीलमां देखे तद्रूप॥ करीयेसेवा॥२८॥ हरीहर-
दामांनीतराजीया॥ मूकीये मननुं नीतमान॥ दीलनी
दुख्या दुरनाजीये॥ समजीये सतगुरूनी सान॥२

रीयेसेवा॥७३॥प्रेमलक्षितये देखीये॥ अंतरज्जात
मल्योता॥ नीतनीतलालप्रभुपेखीये॥ आखंडनं
दउद्योत॥ करीयेसेवा घनश्यामनी॥७४॥ ॥प
अथकक्को लिख्यते॥ ॥रागउपरप्रमाणे॥ प
केशवहीरतन करीये साद॥ लैयेहरीनुंनीतनाम॥
पामीये सेहेजे सुखसंपद॥ तजीयेकूडांजगकाम॥
केशवहीरतनकरीये साद॥१॥ खेलखलकनो खो
टो खरे॥ तेथी ईन्द्रनीलणा॥ मूरखदेखीरीजुंमोही
रह्यो॥ रखीलनशीतलक्षाण॥ केशव॥२॥ गुणगण
गैये गोपालना॥ तनमन शीतल थाय॥ संचीत
कर्मकुर्छ क्षणमां॥ पांचे दूर पलाय॥ केशव॥३॥ घ
रघंधामां अंध थयो॥ बांध्योस्नेहनेबंधालोल
नहीनी धारे वह्यो॥ मीथ्या मान्यो आनंद॥ केश र
॥४॥ नरतन नौका तुजने मळी॥ लय चलणतरवा
ने तेह॥ क्षणक्षण लेशो गणी॥ कर हरीनाम शुंने
ह॥ केशव॥५॥ चीत चौटामां तुंबेसीने॥ करजे
वस्तुवीचार॥ प्रेमनी पेढीमां पेसीने॥ करजे साचो
व्यवहार॥ केशव॥६॥ छणकांई छानो रेहेशे नहीं
॥ अेतो अंतरना लणा॥ साचोसोदो करजे सही॥
पहेले वीवेकनी वाण॥ केशव॥७॥ लेतां लेतां लग
लयछे॥ काई आलसोई काला॥ हरीवीनाहाणआ
कुथायछे॥ माटे स्यांम संभाळ॥ केशव॥८॥ खे

सरपेसंसारनो ॥ जावी लाग्यो तुज अंगा ॥ गारूडी
मंत्र प्रभु प्यारनो ॥ तेथी थाशे नेलंगा ॥ फेरीवा० ॥ जा
नरतन तुजने मळशे नही ॥ अेतो दुर्लभ संसार
॥ अवसर अेणे जायवही ॥ मूरख मनमांथी प्यार
॥ फेरीवा० ॥ १० ॥ टाळ्युं कोई न तुं टळशे नही ॥ अंते मरण
नीदान ॥ सुरमुनि देवदनुज जही ॥ सहुने मांथे
समान ॥ फेरीवा० ॥ ११ ॥ ठेकाणुं ठीक ठरवा सदा ॥ स
तगुरु शरणनी छांय ॥ कर्णकर्मनो जाय नथी कदा
॥ तारा तापटणी जाय ॥ फेरीवा० ॥ १२ ॥ ठाकेणी तुज
ने आवी भणी ॥ माया रूपी जेनार ॥ ज्ञानध्यानने
जरी गणी ॥ जेनो नेहनी धार ॥ फेरीवा० ॥ १३ ॥ ठी-
लकुरीने रे तुं सुई रह्यो ॥ प्राण सत्र प्राणीने जंगा ॥
उंकाफाणशी रदेई रह्यो ॥ ताउं करशे तन जंगा ॥ फेरी-
वा० ॥ १४ ॥ रण घोर शरीरनुं केम छूटशे ॥ वधतुं जाय छे
व्याज ॥ पाप लेणी दार लूंटशे ॥ कूडां करीयां तें काज
॥ फेरीवा० ॥ १५ ॥ तेथी तुजने कुकर गरी ॥ हवे तुं क
नेरे तुं लज्जा ॥ करीने तेहर दे बरी ॥ सजन ने साधन
साज ॥ फेरीवा० ॥ १६ ॥ थी रतन ताउं रेहेशे नही ॥ मा
टे जन ने लगयान ॥ मूरख तुजने थाक्यो कही ॥ ता
रीहेम गई सुंपसान ॥ फेरीवा० ॥ १७ ॥ दुष्ट आशय तुं द
रदेयुं ॥ ओषध लागे नही जंगा ॥ मननुं धार्यूं म
नमां रह्युं ॥ करज तन पाप प्रसंगा ॥ फेरीवा० ॥ १८ ॥ धा

ननुं ध्यान तुं मने सदा॥ जे मोहोटो अंतराय॥ अंतर मांथी थाय आपदा॥ हरीनुं लगन लूंटाय॥ हेरी॥ याणना नेह नीरंतर कीजीये॥ अवसर आव्यो छे सारा॥ तनमनधन गुरुने दीजीये॥ स्नेहे लेपामीये पार॥ हेरीय॥ २०॥ प्रेमे परब्रह्म लागने॥ अंतर आणीजी ल्नासा॥ मनने पाछुं तुं वाणने॥ नहीं तो छुरी वीनारी॥ हेरीय॥ २१॥ हुसीये प्रेमना कुंडमां॥ प्रीतें प्रभुने पमाय॥ वसीये रसिक जनवृंदमां॥ तनना ताप टळी जाय॥ हेरीव॥ २२॥ बोले छे तेजी ले नहीं॥ अे छे सारुं सिद्धांत॥ वेद वेदांत कहे छे थी॥ समजे मोहोटा महांत॥ हेरीय॥ २३॥ लूलवणीमां लूलीगयो॥ हरीनी जाणने लेय॥ जोहेर हवे मोही रह्यो॥ लणे बिरखान नहोय॥ हेरीय॥ २४॥ मायामोहना कुंडमां॥ हुसीयो तुं मन मूढ॥ रमीयो विषेना आनंदमां॥ केम करी समजे गती गूढ॥ हेरीय॥ २५॥ लगीरी के तो तूं लगने॥ आपस तजने अयेन॥ लूंटी जास लगत्याग ने॥ अंते पेरी हुलेन॥ हेरीव॥ २६॥ रच्युं भीत मायारंगमां॥ अेनो करने जीपाय॥ नीत नाहने संतसंगगंगमां॥ तो तुं मन नीरमण थाय॥ हेरीव॥ २७॥ जोलनी लेहेरनी वारने॥ दीन दीन वाधे अपार॥ येन न पेर्छ नेवीयारने॥ सकलने साधन ध्यार॥ हेरीय॥ २८॥

वारेवारेकहुंछुंजथी॥ चीतचेतनमांतुंधारा॥ तेवि
नातारीगतीनथी॥ मननी मायानीधारा॥ केशव॥
स्त्रासांनेसमजे संत स्त्ररा॥ तननी तजजेने
आसा॥ पोतानेदेजे प्रेमी पूरा॥ जीवन थायनीरा
रा॥ केशव॥ ३०॥ ऐरे वात कहुंछुं खरी॥ तुजनेत्ता
रोअंतराया॥ तुंवयमांथी जनने टणी॥ तो हरी दी-
लमांदेखाय॥ केशव॥ ३१॥ साधननुं मूल जेहछे
॥ मननो संदायटणी जाय॥ देहछतां तेवीदेहछो॥
वेदवेदांतमां गाया॥ केशव॥ ३२॥ हरिजन हरीगुरु
अरूछे॥ अवो जेने विश्वास॥ नीत्य नीरंतर दीवे
छुछे॥ तेनांपाय हुंमनारा॥ केशव॥ ३३॥ छेहरीस
कुनाशीरोमणी॥ जेनीलीलाअपार॥ नीतनीत
लालकहे वरणवी॥ अंतरमतीअनुसार॥ केशव
॥ ३४॥ ॥ समाप्तम्॥ ॥ अथ महिना लि
ख्यते॥ ॥ कारतके केशव कीरतनकरो॥ नीर
मल्योने हरीनाम॥ हरीनां चरीत्र चित्त मांधरो
॥ देह दमणनुं नथी काम॥ प्रेमसुधारस पीजीये
॥१॥ मागशरे माझुं माझुं करे॥ जे लख्खी जोगमा
रा॥ संसार संकट मांथी घरे॥ लयों कुळ कर्मनो ला
रा॥ प्रेमसुधारस सारा॥ पोसे पढीने पंडित थियो॥
अन्यने आपे उपदेश॥ लवसागरमां जय वह्यो
॥ पोते पाणे नहीं लेश॥ प्रेम॥ ३॥ माहे मोहपंता

रेप०॥ मन पंखी मती मूढ ॥ ये मनो भूंगो ची-
तमां घढयो ॥ जेथुं समजे गती गूढ ॥ प्रेमसुधा॥
३॥ गुणएे कृप्यो रीध ने हरे ॥ रीस रेपर रीख छे फुण॥
दंप द्नुज मुनीनेथीअरे ॥ सांखण तांमां पडे हुण॥
प्रेमसुधा॥ ४॥ चैतरे चैतनना चोकमां ॥ जरो त
मेणे लोने पेज ॥ लाग तन्ने हरीना लोकमां ॥ त्त्रं
तर थी रीरंगरेज॥ प्रेमसुधा॥ ५॥ वर्ष शाक भायाने
वाहणे ॥ ढांकयो छे ब्रह्मसूर ॥ अेनो अंतर ज्यारेय
णे ॥ त्यारे त्यां से लरपूर॥ प्रेमसुधा॥ ६॥ नेह क
वहशाटणे ॥ संशय गांठ गणी जय॥ अनुभव
औषध तेने मणे ॥ तेने शांती सुख थाय॥ प्रेम-
सुधा॥ ७॥ अषाढे अंतर रीनो रहे ॥ तेने वीवेक वी
चार ॥ तुरीयातीत तनुं सुखलहे ॥ दंभ नदेरीआ
रा॥ प्रेमसुधा॥ ८॥ श्रावणे सुख दुख सरखुंथयुं
॥ टणी गयुं तननुं अलिमान ॥ गुरुनाज्ञाने जण-
गुंगयुं ॥ भूठाजगतनुं लान॥ प्रेमसुधारस॥
९॥ लादरवे लरपूर छे ॥ सतरतभुं भ्रलसो
या॥ हरदरशीने दीन दूरछे ॥ जणे वीरला जनको-
या॥ प्रेमसुधारस ॥१०॥ आसोये आखंड विलास
नो॥ आनंद उरमां न समाय॥ साचो स्वामी
भोलदासनो॥ पूरण प्रेमे पमाय॥ प्रेमसुधार
स पीजीये॥ ११॥ ॥ इतिमहीना समाप्त

॥ ॥भक्तिज्ञान वैराग्यविषे॥ ॥स
कृपी समरथ राधावरनो आशरो॥ आरागमां॥
भाव धरीने गुण गाईये गोविंदना॥ सुणीये श्र
वणे मूकी मान गुमान जे॥ मन क्रम वचने उरअं
तरमां आणीये॥ धरीये हृदये धरणीधरनुं ध्यान
जे॥ भाव धरीने॥ टेक॥ कोटी जनेरा करी शुभक
र्म करे कोई॥ तो ते भोगवे स्वर्ग लोकनां सुख जे
॥पण अंते अमर लोक तजी आवनिमां अवतरे॥
पुण्य परवारी पामे पाछां दुःख जे॥ भाव धरीने॥ प
मोटो मरो पण श्री हरीनो थईने सदा॥ भजे भ
क्ति लावे श्री भगवान जे॥ भक्त वत्सल निजभ
क्त तणा कांई दोषने॥ कृपा कृपाळु सुणता नथि क
दि कान जे॥ भाव धरीने॥२॥ गुणसागर गोपाळ
श्री गिरिधरलालजी॥ श्यामसुंदर राधावर चतुर
सुजाण जे॥ प्रिय सेवकनी रंचक सेवाने सदा॥
माधवजी माने छे मेरु समान जे॥ भाव धरीने॥३
॥ घणा घणा भक्तोनी श्री घनश्यामजी॥ पूरन
चिंते ताप्यारे चितमांय जे॥ ते माटे तुं तत्पर थई
रेहेने सदा॥ शीतळ श्यामना चरण शरणनी
छांय जे॥ भाव धरीने॥४॥ नीचजन तो कहि नारा
यणना नामनो॥ जे उचार करे अंतरमांथि उच्चार
के॥ भक्त करी सोमणी थईने ते पण भवतरे॥

॥अर्थमणीधारणनामनाथ छे सारजो॥ भावधरीने
॥पा॥ चारजाणनी चिंता चितमांथी मरो॥ मारे मूर-
ख मूरख घरी तूं चेतजो॥ आश्रय अन्यनो अंतरथी
अणगो करी॥ हरदमांहश्री हरीसाथे हेतजो॥ भा-
वधरीने ॥६॥ छेलछबीलाश्री हरिसहु शीरोमणी
॥ परमसनेही भक्ततणा प्रतिपाळजो॥ तेनो दृढ आ-
श्रय लेना उरमां धरो॥ कहो तेने कमकरीं कृपाले कृपाळ-
जो॥ भावधरीने॥७॥ लक्षचैतन सहु भक्तपदारथमां
सदा॥ अज श्रीहरीनी वरतेछे आणजो॥ रचा भी
मा हरी सहु घरमां री ली रह्यो॥ जनन्य भक्त भ-
तेछे प्रेमभगवानजो॥ भावधरीने॥८॥ ऊरपेट
तेमारे नगरस्वप्नथी भगतेगा वेगे तुच्छ विषयसु ख
नो करीत्याग जो॥ संसारी सरवे साधन अणगां क-
री॥ करजे साचो कृष्ण चरणमां रागजो॥ भावधरी
ने॥ ना नौतम पद नारायणनुं निर्भय सदा॥ तेऊद
पूरण प्रेम विना न पमाय जो॥ जीव नं कोटिक साधन
करी संकट सही॥ जेपां बडकरमी करे ब ग अपमाय
जो॥ भावधरीने॥१०॥ टजरो भारी ततक्षण अंत
र जापदा॥ गणशो नहिं तने भवमां भयंकर कृपाळजे
वेगे वेणा वचणशी पापजणरी सहु॥ श्वासो श्वासेरियां
मनमुंदर सं भाणजो॥ भावधरीने॥११॥ ठीक नथि छे-
कणगु भवाने कांपीया लोतिक भवचन पमु ईरा भवनी

मांयलो ॥ ४ ॥ अज्ञलोक सुधी पण कोई निर्लेय नथी ॥ ल
कुने काळ भयंकर क्षणे क्षणे खायलो ॥ लाव घरीनो ॥
५ ॥ डरे सुरेश सुर दश दीगपाळ डरे सघा ॥ डरे जन
कीपती ऊमी या पती डरे आपलो ॥ श्री हरीनी आ
ज्ञामां सरवे जनु सरे ॥ कोई पण क्यारे कुदीन रेकुडु
ल्यापलो ॥ लाव घरीने ॥ ६ ॥ आदी लक्ष्मी रे नही अक्ष्माह
रीनाकु मथी ॥ रमणीक स्रष्टी रच्ये छे वारंवार लो ॥
मांयपनी मर्याद कोई लोपे नही ॥ जेम समज करी
सेवन करने गमारलो ॥ लाव घरीने ॥ ७ ॥ रात दीव
सरीरी स्त्र्ये शान्ति न घरके ॥ जे पण आकरी मां
अतिशय अथडायलो ॥ प्रलुनी आज्ञा मांनीने रे
राकुरे ॥ मूरख मन पापी समज से मन मांयलो ॥ लाव
घरीने ॥ ८ ॥ तेवा महा मोहोटा सामर्थ लेने सकु
॥ डर धरी फरि फरि रहे नित हरिने हजूर लो ॥ जेवा
सर्वाधिपती प्रलुना रारणथी ॥ कुत्सित कूल घनी
तूं केम रहे छे दूर लो ॥ लाव घरीने ॥ ९ ॥ थान कुल
छूपियो तेपी मूरखमती ॥ वारवार लव करयो तूं लव
मोझार लो ॥ ऊंचनीच योनीमां जनम धरी धरी ॥
कृषि कृषि कूडां कर्म कर्यां तें अपार लो ॥ लाव घरीने ॥ १
० ॥ हुं पशु पशी पिशाचि पिशाच थयां कूण अहनां ॥ तेहने ग
णतां आवे नहिं कांई अंत लो ॥ तेकूण नोलो त्क्कायपै
लटक्यो लव विषे ॥ जेम तूं जप डयो छे काण अनंत

ले॥ लाव धरीने॥ ८॥ धीरज परवतने ऊर अंतरन
धरको॥ ले ते पण है जे कहितां दुःख ले॥ चूर चूर पै
छे लयते चिंता चितधरी॥ मूरख तूं सूतो रे जु ले छे
सुख ले॥ लाव धरीने॥ ९॥ लोचने अछतां केम अंध
थई है जे नही॥ अज्ञानी अभिमानी तूं मतीमंद ले॥
पामर दुःख सहीयो तुज ऊपर ऊलटयो॥ पण तें मनथी
मानी लीधो आनंद ले॥ लाव धरीने॥ १०॥ पैहेलुं अ
त्यंत सुख ले छे पापकरणे कुं॥ पण अंते अतिशय
थासे ऊतपात ले॥ जेम सुख सजन सूं लीजे पणतां तो
मीठी जरी॥ पण शाय अधिक दुःख अंते नहि कुशल
ल ले॥ लाव धरीने॥ ११॥ कूड कलंक अलव दुजना कुल
र लस्या॥ विविध भांतिना तुज अंतर लंगार ले॥
ते ऊपर तूं अज्ञानी तत्पर थई॥ अहो निश कूडां कृत्य
करे छे अपार ले॥ लाव धरीने॥ १२॥ अणपैहेलुं पोहो
चे नहि कूडां कर्ममां॥ पण अंते निश्चे नई दूर निरधा
र ले॥ जेम धतूरा ना गणधातो सैहेज्ञां सही॥ पाछां
चणतां पीड पाय अपार ले॥ लाव धरीने॥ १३॥
लयसागरमां कूरि करिने लटक्यो जकु॥ ते केनी लंप
टना गीन हि तने लाज ले॥ पण कुशील मनुष्य के
धरीने लय पर करी॥ अंध तूं अतिशय केम करे छे अ
कज ले॥ लाव धरीने॥ १४॥ माटे मूरख समजी म
न थकी मूक ले॥ क्रोध द्रोह मद माया मोह अनंग ले॥

निर्वेद नित नीयम धरी साधन सहु॥ साध्या संतने प
रखे तूं सतसंग ले॥ लावधरीने॥२॥ पा भक्तपतीनी
जती तुल्य गृहीये गणी॥ पूरणप्रीते पळे पळे करने प्रस
न्न ले॥ आश्रय धरि सेवा करि अंतर परहरि॥ रूपीये
ने तादृ तन धन मन ले॥ लावधरीने॥३॥ शारंग्यकु
जे राणी रीरा पळे छोकांठिये कहां॥ तो थाशे आत्माना
सुखनो असंग ले॥ जेम श्री व्यास देवना वचने प-
येनहीं॥ शुक मुनीना मनना संशयनो लंग ले॥
लावधरीने॥४॥ सोल दुखा से देव रूपे थईने तहां
॥ हरिमाया तहां आवी विविध प्रकार ले॥ स्वर्गा
दिक सुख श्रवण करावी तू ले ने॥ अंतर मांहि आग्रह
करी अपार ले॥ लावधरीने॥५॥ विठलवरनुं सु
ख ले तूं वालुं करे॥ तो स्वप्ने लल्याथी नाहीं जग
र ले॥ अच्युत थई रहे ले संतना संगमां॥ छो जे
माया कुल्ल करती हजार ले॥ लावधरीने॥६॥
॥ संत सनेही शरणागत ने सेवकमां॥ जपेऽजापे
जातमहीत उपदेश ले॥ ते सुणी तत्व समजी त
रजे तूं लवनिधि॥ रेहेशो नहीं पछे माया संशय ले-
श ले॥ लावधरीने॥७॥ गाणो तो भक्तनो मेळ ते
मन थी भरी जरो॥ दिनदीन सुकृत गया थई जशे दू
र ले॥ परमानंद सागर उलटशे उरमां॥ पळे पळे
थाशे प्रेम प्रवाह सुं पूर ले॥ लावधरीने॥८॥

शांति दांति धृति योगधारणा॥ दृढमति॥ अंतरंगज
हिंगना अध्यणछीपायजे॥ शास्त्रविचार विवेकने
धैरे वैराग्य आ॥ सरवे प्रेमीजनने स्नेहे नेपमायजे॥
लावधरीने॥ ३॥ हरीगुण सुखसागरना तो छे
गुणघणा॥ शेष सहस्त्रमुखे पामे नही पारजे॥ श्री
रणछोडरंगीलाने शरणे रही॥ करजेडीकहे लाल म
तीअनुसारजे॥ लावधरीने॥ ३॥ ॥पद८१॥
॥ ॥राग छीपरनो॥ ॥हेरायजी कहुंएणनि
धिरकुंछुं करगरी॥ मुजने कर्म तणुं छे कष्ट अपारजे॥
अलजेलाजआपविना कोने कहुं॥ मारे प्रभुजी पासे
कहुंछु पोकारजे॥ हेरायजी॥ टेक॥ कर्मवासनाये करी-
ने कोरीकर्डी॥ विविधप्रकारे लीधा छे अवतारजे॥
पशु पंखी पन्नग ने प्रेतपीशाचनी॥ ऊर्ध्वपजेजनी
देहधरी वारंवारजे॥ हेरायजी॥ १॥ जलचरथलचर
नभचर मांहीमें भम्यु॥ अनेकवार अवतार धर्या
छे असारजे॥ कुरकट कृमी अनंत जही योनीमां अ
वतरी॥ अंतर मांकुं पीड पाम्यो अपारजे॥ हेराय
जी॥ २॥ झाड पहाडनो देह धरीधरीने सघारी
तमघातप सह्यो ठमोठामजे॥ ज्यांज्यांजन्म
धर्या तहांतमने वीसरी॥ वीठुलजी में साणुं नलह्यो
वीश्रामजे॥ हेरायजी॥ ३॥ अत्रअनेकजन्मचोराशी
फेरा फरी फरी॥ में कृतघनीये पापकर्यां छे अपारजे॥

येरीसफळथमुज पणपारलहेनहीं॥कहोहूं केईपेरे
करीशकूं उच्चार रे॥केशवजी॥२॥जेवां दुःखनां
रूपा करीतमे कृष्णजी॥मुजने आप्यो अमूल्य नर
अवतार रे॥पणमारुं बीधुं अतिशय कर्म अना-
दिनुं॥सुखमां में समस्या नहि संसार असार रे॥
केशवजी॥३॥जेवा जेवा नौत्तम नरना देह ते॥अ
नेकवार धर्या में आ संसार रे॥पण अेवो योग म
ळ्यो नथि माधव मुजने॥तेथी हूं पाम्यं भवदुःखनो
पार रे॥केशवजी॥४॥मारे मधुसूदन मुज भूरुं अ
परसदा॥दुःखीयो जाणी मनमां आणी मेहर रे॥
संतनोजननो संग अभंगठीय आप रे॥अणशुकर
ने कर्म अहीनुं केहेर रे॥केशवजी॥५॥पळे पळे
प्रेमसुधारस पान करावजे॥अंतरजामी आण-
ने दुःखनो अंत जे॥करजोडीने कहे रंकलालरुडीकर
री॥ भक्ति लावे भेटे श्री भगवंत रे॥केशवजी
॥६॥ ॥पद॥२॥ ॥रागढीपरप्रमाणे
॥ ॥विठ्ठलजी हूं वारवार शरणे पडी॥ गद
गदकंठे करुणा करीकडुं छुं उच्चार रे॥मारे मेटो मा
रा मनना विकार रे॥आपविना मारे अवर नथि
आधार रे॥विठ्ठलजी पटेक॥ त्रिगुणी तुजमाया
मां मोह पामी प्रभु॥तत्व भूलि तस्कूप पथोत नमां
य रे॥दश्यामास रुंपहदीथामां रूज्योसदा॥

हूं अज्ञानी कर्मे न समज्यो कांय रे॥ विठ्ठलजी॥५॥ जाण
पणामां बुध्धि रहीत थई मूढ हूं॥ लालीत मर्यो लोलीक
लव ढुंष मांय रे॥ उर अंतरमां ऊंडी विषयनी आशा
जडी॥ पण कोई ने निज मुख ने न वदे वाय रे॥ विठ्ठलजी
॥६॥ प्रेम सन मज रहीत अतिशय संकलेश॥ सही स
ही॥ कृष्ण कृपानिधि कष्ट कांइयो काळ रे॥ पछे जोवज-
नमां उन्मत्त थई भूपति साथमां॥ विषय सुख मा-
टे कीधुं आकुवाळ रे॥ विठ्ठलजी॥७॥ एना संगे उर
अंतरमां ऊपन्यो॥ क्रोधी कुळ शत धाम रूपी प्रेकाम
रे॥ कामार्थी थई कर्म करी करी हूं सदा॥ नाव स्वरूपी
ल्हि गयो तुज नाम रे॥ विठ्ठलजी॥८॥ प्रेम कर्म क-
री करी पामर हूं कई वार पड्यो॥ महा भयंकर नर्क नाकुं-
डी मांय रे॥ वारवार एवुं दुःख अतिशय दीन प्रति
॥ हे श्रीपती प्रेमुख थी केम सहेवाय रे॥ विठ्ठलजी
॥९॥ तेथी दीन दिलगीर थईने दयानिधि॥ पछे पणे
प्रभु तुज पासे कंइ छुं पोकार रे॥ आ लख लाल जो अंत
समे आवी तमे॥ लालजनी लेजो वेगे हरी संभाळ
रे॥ विठ्ठलजी॥१०॥ ॥समाप्त॥ ॥

राग गरबी॥ ॥भक्ति विषे॥ ॥धारि या
शिरे सुंदर स्यामा॥ ताराल रज्जनो॥ ए राग॥ ॥
कोई समजे रे॥ एणा संत, भक्ति कठण लयमां॥ जी
वन अर्पण यत्न अनंता॥ हाके दुःख दपमां॥ कोई सम

ओटेरा॥ सद्गुथी सूक्ष्मदेह रया मनो॥ कोई विरला
जन तहां जायरे॥ पग नखे पग कीडीनो कहो॥ कुंजरे
केम पेसाय॥ भक्ति करणी॥४॥ सघणां शास्त्रमां कही
रयां भजनेम, वेणु मीजनरी मांयजो॥ जड बुद्धिने जु
क्ति जडे नही॥ प्रेमी पीपी लहु आया॥ भक्ति करणी॥
५॥ प्रेम मंदिरमां मन मोहन वसे॥ जगमग ज्योत
अपार रे॥ प्रेमीनुं मन पतंग थई भमे॥ अन्यने न-
थि अधीकार॥ भक्ति करणी॥६॥ प्रभुप्रीतीजण नाम
हीमा कहो॥ दादुर दृष्टे शुं जाणेरे॥ मोहोरा माहानु
लावण्यनुं सुख॥ मीन थई मन माणे॥ भक्ति करण
॥७॥ चैतन चीदानंदरूपनुं सुख॥ कहो केम चीतव्यु
जायरे॥ संत पुकार निरंतर चीतवो॥ चैतन थई
चीत मांय॥ भक्ति करणी॥८॥ कोई चरण कमळ
मां गोमय॥ जंतु सरीखा शुं जायरे॥ कोई कयोगी-
नो मन भमरो॥ जोगी थई भपराया॥ भक्ति करण
॥९॥ सिंहना मुखमां पेसीने, पांछुं नीकळवुं महार
रा॥ मेण अश्वपर करी असवारी, चालवुं अग्नी मो
झार॥ भक्ति करण॥१०॥ मणीधरने छंछेडीने, म-
णी लेवो छे नितरुपे रे॥ मृग पणग तीये चालवुं छे
जेने वेगे गरुडनी साथ॥ भक्ति करणी॥११॥ चेंचु
थई पेदी जेस्स घुं छे॥ कोई मेरु शीखरनी छांयरे॥
तेम अमितविना थई भणधुं, कई व्यद घननी मांय॥

भक्ति कठण॥ ला॥ अंतरंगभेद एक हरीनाले
भक्ति सुख माणे रे॥ अति अज्ञानी कुत्सितकर्मी,
लालकहे केम जाणे॥ भक्ति कठण भवमां॥५०॥
समाप्त॥ ॥राग गरबी॥ ॥उपदेशविषे
॥ ॥तज जूठा जक्तनो संग, पामर मनपा-
पी॥ भज भाव धरी भगवंत, कृष्णनां जे कृपी॥ तज
जूठा॥टेक॥ ॥जहां जहां जन्म धरे तहां तहां त-
न, धन सुत स्त्री संग थाय रे॥ तेने साचां मानीने
तूं, भूल कर्यो भवमांय॥ पामरमनपापी॥१॥
जेम कांई अल्प घणां आकरी, थई थईने थराय रे॥
तेम जकर्मसंजोगे तारां, कुटुंब थायने जाय॥ पाम-
रमन॥२॥ जेम तिल काष्टयंत्रमां पीलीनीत, यंत्री
हाथे पीलाय रे॥ जन्मजन्म तुं जक्तजंत्र मां॥ कर्म
करी कचराय॥ पामरमन॥३॥ काणकर्म मायाना सं-
जोग नुं, कहो केम करी थाय रे॥ अंजयाना नीर जंतर
अग्नी केम ओलाय॥ पामरमन॥४॥ आहार नींद्रा
भय मैथुन जेने, सहु योनीमां पमाय रे॥ तत्वसार
हरीनुं समरण, ते तो मनुष देहमां थाय॥ पामरम-
न॥५॥ साचा संतनी सघी समजण, समजी स-
ज अभिमान रे॥ सहुमां सरखो स्याम अंरे॥ जेथ
दीनने आपीये दान॥ पामरमन॥६॥ सर्वस्व श्रीह-
रीने अर्पण करी, तजने नाखुं जा परे॥ लालना प्रभु-

रणछोडरंगीलाने ॥ चरणे चीत धरी पापा पामर मन
पापी॥७॥ ॥गरजी॥१॥ ॥रे शुं समजे संत
नी सांन, मूढमति संसारी॥ मीथ्या देह तुं न धरी अ
भिमान, भवदुःख सहे भारी॥ रे शुं समजे॥टेक॥ ॥
मारां मात तात सुत बांधव, मारी स्त्री धन धानरे
॥ देह अध्यासी थई अेम जाणे, भूली स्वरूपनुं भान
॥ मूढमति संसारी॥१॥ सघणी तत्व सार वस्तुत
ज, अंतर राजे असाररे॥ चीत चारणी सर पुंथ-
ई गयुं अेने, लागे न अेके डीप प्याररे॥ मूढमति॥२॥
अतिशय विषय वासनानो ज्वर, अंतर रोग अपाररे
॥ अपथ्य रहे नारी संगे नथी, औषधनो अधिकाररे॥
मूढमति॥३॥ साच्ची वात रुचे नहीं रंच्य ह, भूठी भूरे सा
सरे॥ ज्वर रोगी जेतु ने जेम कडुं, कडवी लागे द्राक्षरे॥
मूढमति॥४॥ अये तत्व अज्ञानी ने सायो, लागेन
हीस्तत संगरे॥ ठींकरा पाणीमां पथ्थर रहे, अंतर भे
दन अंग॥ मूढमति॥५॥ पूर्वकर्म अनुसार सरल्यो
रीठनो स्वभाव अभंगरे॥ हरी गुरु संत विमुखने
स्पर्शे॥ लालन करीये संग॥ मूढमति॥६॥ ॥
गरजी॥२॥ ॥नथि नरतन वारंवार, चेती
लेप्राणी॥ वेगे चणसी अय गमार, हारी विनापाय
हाणी॥ नथि नरतनारेक॥ ॥आव्या आवकरतां
गयातारा, अेणे हीथ सअपांररे॥ अयान कआग

गुंधैर्यधरीये, शी जोसनीरत्तो छे तजारशो॥ येतीले
भाणी॥१॥ मृदमीनमनरूरे मकरलालुं॥ जणे आ-
युषनीरनीरधारी रे॥ क्षणे क्षणे शरीर रसलीनरूरे
तेने॥ समजेनगाफलगमारे रे॥ येतीले भाणी॥२
॥ मूषकमनुषरीं रूरे मदमातो, लमे माथे ज्ञाण मंजा
रशे॥ अेकदीव सच आधीने अध्यानकु, लेई धरीरो नीर
धारी रे॥ येतीले भाणी॥३॥ ध्यासतणो वीस्वास
नकुरयो, रोक्यो हेम रोजायरे॥ अेकपलकमां अणजो
थायते मां, ध्याले जक्कार्ई नो उपायरे॥ येतीले भाणी॥
४॥ जाणपएंगयुं जसकुनां ध्याले, गयूं नेजनकू
वतीसंगरे॥ अेक पणे सकुंई दीवीक्रण धर्यं, तोयतु
कतेन लाग्यो फरी संगरे॥ येतीले भाणी॥५॥ अेम
समजीतनिविषयनीतृष्णा, सूंपीदे गुरूजने शी
शरे॥ प्रेमलक्ति येलासप्रलुलन, लडूर मजशील
गहीशरे॥ येतीले भाणी॥६॥ ॥राग॥ ॥३
॥ ॥तूं जकुलरक्यो लवमांय, मनमायासं-
गे॥ दुष्टसहद्केदीनरात, अतिशय तुनजंगे॥
तूं जकुलरक्यो॥ टेक॥ छेसुंड मांकीट थई कयरायो
तूं केई धारे॥ मीन धई जगयं मां, सूंपायो येतग
मारे॥ मनमायासंगे॥१॥ क्राष्टमांहीतूं कीट बन्म लेई
ध्ही यो करवत धारे॥ अेवुंकप अंतर अविलोकी,
कुपे अंग अपारे॥ मनमाया॥२॥ मूढतमे निलकु

में मेरू, समल्योडीय मोजाररे॥ स्यल्यकाणमांस
पैं ग्रहण करी, आप्युं कष्ट अपाररे॥ मन माया॥३॥
लभर थई ऊंघायो रातें॥ कमण करीनी मांयरे॥ ज-
णार्थी गले लगल सहीत तने, बांधो तत क्षण तां
यरे॥ मन माया॥४॥ मूषक थई मंजारी मुख लई, प
डीयो अयान अनंतरे॥ शरणी थकी संकट पाम्यो करी,
दुष्ट कर्म तूं अनंतरे॥ मन माया॥५॥ मंजारी लनेनी
मां लन्म्यो, जिव तुं जक्त मोजाररे॥ तकांत ने ऊरप
रें बांधो स्वाने, पीडा पाम्यो अपाररे॥ मन माया॥६
॥ स्वान शरीरमां क्षुधार्त थई, लटकुं पो ग्रह गणीमां
यरे॥ यवन लती ये आपी अयान कं, तन छेद्युं तां तां
यरे॥ मन माया॥७॥ कपोत कर्मे थई तूं पापी, लय
लीन रह्यो दीन रात्ररे॥ रात्रु सीं याणो जाणी जेपा
लकुं॥ ग्रहण कर्युं तां गात्र॥ मन माया॥८॥ डींटनी
देह धरी जल लानी, पीडा पाम्यो अपाररे॥ हाथीने हण
स्ये कठण तें, तो ज्यां छे कई ध्वाररे॥ मन माया॥९॥
गर्धव थई तें गमार घणो, ज्यारे पह्यो गूणो नो ज्यारे
॥ पाछळ ण डंडनो मार धडाधड, पां मर सह्यो अपाररे
॥ मन माया॥१०॥ ईत्यादिक दुःख जन्म मरणनां, ग
णतां नावे अंतरे॥ मूरख मनुष्य देह मल्यो दुर्ल
भ, सेवन ले सत गुरु अंतरे॥ मन माया॥११॥ विष
य तणो वैराग करीने, लग लांवे लग अंतरे॥ सा

पेरायेलालनोस्वामी,जाणेदुःजनोअंतरोमन
मायासंगो।पद्॥ ॥गरबी॥८॥ ॥तेंकीधां
पापअपार ।पामरपेरपापी॥तेनोमूरजकरने
वीच्यार ।अंतरदीसन्नापी॥तेंकीधांपापाटेक॥ ॥
कामरूपीयेनीतनीतनयणे॥नीरखीतेंपरनाररे॥
तेनादोषतणोउरअंतर,मांदीलस्योलंगररे॥पा
मरपेरद्॥१॥ध्यंयणथीतनितयामदामनुं॥थोडुं
सुणअसाररे॥तेनासंगेसघणांकुडां॥कर्मकस्यां
तेंगमाररे॥पामरपेरगु॥२॥वाणीवीकुणथईवयण
वनीत,परनिंदाकरीप्यारेरे॥पोतानापापोनोअं-
तर,पडदोराखिजपाररे॥पामरपेरगु॥३॥क्रोधावेरो
थईउरअंतरमां,लूल्योसकुसंलाणरे॥गुणअवर
कर्तुंगुणदातरकगुणनिधी,गुरुनेदीधीगाळरे॥पा
मरपेरगु॥४॥वीप्रवेदवेत्तावैषणवनी,स्रावेराजी
रोषरे॥रातदीवसअंतरमांतेना,दुष्टतेंदाख्या
दोषरे॥पामरपेरगु॥५॥कृतघनीकृतकीधांकुडां,
गणतांनावेपाररे॥दोषनोदरीयोअंतरलरीयो,
लरम्योलवमोजाररे॥पामरपेरगु॥६॥अलमेण
आख्यानश्रवणेसुणी,थैतनथईथीतथेतरे॥
लालनोप्रलुपातकसकुदरी,करदरीसाथेहेतरे
॥पामरपेरपापी॥७॥ ॥गरबी॥५॥ ॥
नपिकीधुंपुण्यलगार,कामोंनम्मघरी॥केमकरी

थाशे उद्धार, ब्रह्मपतीगयोवीसरी॥ नथि किधुं॥
टेक॥ चितनी चंचळता तजिने कांएउं, धर्युं नथि
धणीनुं ध्यानरे॥ श्री भागवत कथा अमृतरस, कर्युं
नथि श्रवणपुनपानरे॥ जगमां जन्म॥१॥ साध्यास
तगुरु संतना शब्दनो, स्वप्ने कर्यो न विचाररे॥
चामचामनुं चेतन थई, चिंतन तें कर्युं छे चमाररे॥
जगमां जन्म॥२॥ कर्मज्ञान भक्ति प्रतिपादक, श्री
गीता श्रुतिनुं साररे॥ तेनो पाठ कर्यो नथि प्रीते, पर
निंदामां प्याररे॥ जगमां जन्म॥३॥ नीतनीत ने-
ह धरी नथि लीधुं, नारायणनुं नामरे॥ जगधंधा-
मां अंध थई सएउं, जेठो नथी ठरीठामरे॥ जगमां
जन्म॥४॥ संतने नम्र थई नथी नमीयो, मूकी म-
ननुं मानरे॥ अंतर दयाद्रष्टी आणी नथि, आप्युं
दिनने दानरे॥ जगमां जन्म॥५॥ मन क्रम वचने
किंचित पुण्य, कर्युं नथी कांई नीरधाररे॥ लाल ज-
नान कृपाण शरणमां, प्रीतेकरे छे पोकाररे॥ जग-
मां जन्म धरी॥६॥ ॥गरबी॥७॥ ॥
समाप्त॥ ॥राग गरबी॥ ॥मनने
प्रबोध विषे॥ ॥मन समजने शीखसार
सेहेने सुख थाय॥ उर अंतर मांही वीचार, ज-
न्म अएळे जाय॥ मन समज॥टेक॥ रे मन मान
गुमान मूकीदे॥ तजिदे लोकनी लाजरे॥ दुर्लभ

मनुष्यादेहपरी,डाई करीलेने रुलझानरे॥सेहेने
सुखा॥४॥रे मन मूरख विषय मन नतज, लावण्य
रीनिशिलोररे॥छोडीकुमति उर सुमती ग्रहण
करी, भजसे नंदकीशोररे॥सेहेने सुखा॥ २॥
जगीमेंताकुंदीधूं, मान्यूं मृदगमाररे॥ रुपे मन
मांडे रह्युं करीने॥ कृष्ण चरण प्रीत धाररे॥सेहे
ने सुखा॥३॥ रे मन कर्म कुमारगतजतूं, अंतर
आरत आणरे॥ श्रीहरीने शरणे सूपीदे, तारुं
तनधन प्राणरे॥ सेहेने सुख थाय॥४॥ जूठा
जक्तमांही नथी कोई, ताहरीत करनाररे॥ जेथूं स
मजीने उर अंतर, कर प्रभु साथे प्याररे॥सेहेने सु
खा॥५॥ रे मन मधुप तूं प्रपंच पूष्पतज, सुणने
शीक्षा कानरे॥ लाल प्रभुना चरणकमल मकरं
दनुं कर नीतपानरे॥ सेहेने सुखा॥६॥ ॥
गरबीस॥ ॥ मन सांभल मारीवात, शी
क्षादऊं सांची॥ प्रीते भज प्रभु दीन रात॥ कूडीया
मांराची॥ मनसांभल॥ टेक॥ रे मन पंखी जेते
पडतो, मोह मायानी जाळरे॥ अंते पस्तावो थात
शे तने, वेहना थाशे विशाळरे॥ शीक्षा दऊं॥१॥ या
जीश॥ नहीं मन पंखी विषय चूगाने काई येलगा
रशा पाछळ फांसीमां पडी पामीश॥ अंतर पीडा
अपाररे॥शीक्षा दऊं॥२॥ रे मन रखे जतो तुंडी

विषयना वनमोझाररे॥मनमथकाळनेमाररे,
अनेरुई माख्या संसाररे॥ शीखाकहुंछाडा॥कडवां
लगीमनपंखीमूकेनही॥ विषयवृक्षनोसंगरे॥तनडां
लगीरंचक लागेनहींकदी, हदियेहरीनो रंगरे॥शी
खाकहुं॥१॥अनंतपापसंतापकरेनीता॥अकलो
लनीरधाररे॥ते माटे कहूंछुं मनतूजने॥तेनी
प्रीतीनीवाररे॥शीखाकहुं॥२॥ सेहेजेसकलसंप-
तीसुखसघळुं॥संतोषीनेथायरे॥तेतो नीतनी
त नेह धरीगुण, लालदासनागायरे॥शीखांकहुं सां
भीळ॥३॥ ॥रागजी॥२॥ ॥मनसांभळ
मूरखमार, साचीकहुंवात॥मूकीदे विषयविकार,
तजिस्वतम तात॥मनसांभळ॥टेक॥ कामकाम
नाविषयवासना, मनथीमूकीदूररे॥ नीतनीत
नौतमनेहधरीहेते, हरीने लेजमन लूररे॥साची
कहुं॥१॥अंतरमां निर्वेद धरीविषे, चिंतनमनतुं
विसाररे॥ऊपर तजे अंतरमां लेनेहुःख, दीनदीन
नथाय अपाररे॥साचीकहुं॥२॥ माटे माहुं कह्युं करी
मूकीदे, विषय दुःख भूपरे॥क्षण सुख माटे वीदेने
सहे मन, त्रिविधतापनुं रूपरे॥साचीकहुं॥३॥
आयुष विषय मांहीवीतीगयुं, नृपतिनथई मन
कांयरे॥ हेमत लोचन अंध थई पड्यो, मोह कूपा
नीमांयरे॥साची कहुं॥४॥ गतीतननी करुणा

थई जेने, विकल थई मृग्य याणेरे ॥ लालप्रभुने ल
ज अंते, ठेकाणे थाशे मशाणरे ॥ साची कहुं वातापे
॥ ॥ गरबी ॥ ७ ॥ ॥ समाप्त ॥ ॥
राग गरबी ॥ ॥ सतसंग विषे ॥ ॥
राख्य कहीये करीरीत, चेतीने चीते ॥ जनमनक्रम
वचने जीत, प्रभूने तूं प्रीते ॥ राख्य कहीये ॥ टेक ॥
सेहेजे मन चंचल सहु नुं भूये, रातदिवस विषय
रंगरे ॥ अन्य नथी साधन जेनुं कर, साच्यो जीत
सतसंगरे ॥ चेतीने चीते ॥ १ ॥ सेहेजे सहु दुख
पारो ताकुं, दुःख सहु जशे दूररे ॥ हेते हरीहरदामां
भजाशे, जाशे जव जरफूररे ॥ चेतीने चीते ॥ २ ॥
नीचनीर सहु नब्न गणीनुं, गंगमणी थायगंगरे
॥ संतनासंगे संत थईतने, लागे कहीयामां रंगरे
॥ चेतीने चीते ॥ ३ ॥ पारसना संगे पारस थाय ॥
रंचक रहे नहीं लेहरे ॥ हरीजन संगे हरीजन थाय
सहु, मटे जक्तनो जेहरे ॥ चेतीने चीते ॥ ४ ॥ सघ
ळी शीत अग्नीना संगे, सेहेजे दूर पळायरे ॥ स
तसंगे सघळां मनतारां, पळमां पातक जायरे ॥ चे
तीने चीते ॥ ५ ॥ अेवो महीमा संतसंगनो, सम
जीभूपे चेतरे ॥ लाल तूं सहु साधन मुकीकर, ह
रीजन साथे हेतरे ॥ चेतीने चीते ॥ ६ ॥ ॥
गरबी ॥ ८ ॥ ॥ जन लाधे जक्त जगवंत,

रूप रूदामां धरी।। नथी अंतर संत अनंत, भूलुं भम न भ्रांति परी।। भजन भावे।। टेक।। संतरूदामां अनं त रहे छे, अनंत रूदामां संतरे।। असाणुं सीद्धांत समजमन, कहे श्रुती शास्त्र अनंतरे।। रूपरूदामां।। १।। जेने संतनी संगत तेने, अनंतनी संगत थाय रे।। अेवो वीवेक धरी मनमां रहो, संत वृक्षनी छांयरे ।। रूपरूदामां।। २।। जेने जेवो भाव सदा, तेने तेवुं रूप होयरे।। कर्म धर्मनो टंटो तजी करे, रसीकनी संग तहोय रे।। रूपरूदामां।। ३।। विविध भक्तभवमां हीरहे मन, समजने तेहनो भेदरे।। अंतरनो आ शय न मणे तेना, संगे थाय अती खेदरे।। रूपरूदा मां।। ४।। सहुनी साथे सरखुं मळवुं।। जे ज्ञानी नी रीतरे।। भजनी भक्ते वीचार करीकरे, प्रेमीभ क्त शुं प्रीतरे।। रूपरूदामां।। ५।। कृष्णचंद्र नुं रूपरहे, जेना रूदिया मोझाररे।। तेना चरणशरणमां र हीये, बाल कहे नीरधाररे।। रूपरूदामां धरी।। ६

।। ।। रागरजी।। २।। ।। कर श्याम भ क्तनो संग, आरत अंग धरी।। धरो भक्ति अंग अं जण अंग।। विषयभ सेवीसरी।। करश्याम।। टेक ।। प्रेमी भक्तनी भूठण तुं मन, पांते मुखमां पावरे।। अंतरनुं अभिमान तजी, सतसंगगं गमां नावरे।। आरतअंग।। १।। ठीछमळे मन

भणे भजन भणे, भणे सकुण रस रीत रे॥ तेनी-
साथे मन कर्म वचने, करीये साची प्रीत रे॥ आर
त अंग॥२॥ प्रेम भक्तिरसमां तेनुं मन, मग्न रहे
दिनरात रे॥ तेवा रसिक संगाथे रतीतूं, करजे म
न वात रे॥ आरत अंग॥३॥ संगत संगत सहु
कहे पण, संगतमां जकु फेर रे॥ तेने संगत जाणो
तेथी॥ दीपे भक्तिरस लेहेर रे॥ आरत अंग॥
४॥ तेना संगे भक्त पदारथ, स्वप्ने न सरीजां लण
ये रे॥ अतीनिर्वेद नेह धरीनीत, गोविंदना गुण गाय रे
॥ आरत अंग॥५॥ तेना संगे गुजरीत थाये, लेहेर
सर्व शरीर रे॥ तेना शब्द सुणीनीत लासनाना
नेत्रमां आवे नीर रे॥ आरत अंग॥६॥ प
गरजी॥३॥ ॥ तक अंतर संतनी साथे
निरंतर नेह धरी॥ तारो हते आलसी हाय, पूरण प्री
त करी॥ तन अंतर॥टेक॥ सदा स्वत्तावीक कृष्णक
थानी, तेना मुखमां वात रे॥ सुख नगमे संसारनुं
स्वप्ने, रंगमां रहे दीन रात रे॥ निरंतर नेह॥१॥ जे
वा संतने नयणे नीरखी, तनमन शीतळ थाय रे॥
ध्रेद वैरागनां वचन सुणी तने, भक्तनुं लान लूला-
य रे॥ निरंतर॥२॥ प्रेम दोरीना जांध्या तेना, चि-
तमां वसे व्रजचंद रे॥ तेहनी कृपाकटाक्षे सेहेजे, छूटे
भक्तनो फंद रे॥ निरंतर नेह॥३॥ आवु प्रकार मनक

चितभ्रत, कुब्धी रचे न ग्रंथरे॥ साचा संतनो संग
करीमन, तजने तेहनो पंथरे॥ निरंतर नेह॥४॥ भ
क्त संगविना लग्न नहीने, लग्नविना नहीं प्रेम
रे॥ एणुं पण हरीनुं लग्न नलूणीये, नेह धरीये
नेमरे॥ निरंतर नेह॥५॥ एवा अनन्य भक्त भ
गवंतना, दुर्लभ आ संसाररे॥ अधिकारीने मळे
आव्यानरु, बाळकहे निरधाररे॥ निरंतर नेह धरी॥
६॥ ॥ गरबी॥४॥ ॥ छे दुर्लभ आ
संसार, भक्त रसीक भवमां॥ भवजळतारे नीर
धार, सेहेने एणुं भवमां॥ छे दुर्लभ॥ टेक॥ भ
जनानंद रसीक रंगराता॥ नथी तननुं अभिमा
नरे॥ शरणागत संगीने सेहेने, आपे अभयपद
दानरे॥ भक्तरसीक॥१॥ नीतनीतनीरखे नीज
अंतरमां, नारायणनो रासरे॥ ग्रेहे वैरागनी वातडु
थेर रहे, आठ प्रहर उदासनरे॥ भक्तरसीक॥२॥
माततात सुत भ्रात ज्ञातितजी, सहुथी रहे निर
संगरे॥ अंतरमां आनंद रहे भरे, आतमगती
अभंगरे॥ भक्तरसीक॥३॥ सदाधीर सुधीरीती
रे रहे नहीं, नेम साच्यो रणसूररे॥ पिंडपडे न धरे
पगपाछो, प्रेम सरूर भरपूररे॥ भक्तरसिक॥४॥
क्यारे किंचित दोष जधरनो, देखे नहिं मनमांयरे
॥ धीरज धर्म तजे नहीं रहे सदा, शांति दसनी छांयरे

लक्करसीकुं॥५॥ सर्वकल्पनापरीहरीरीर, संतच
रणरलेघारेरे॥ अपीअद्वाअंतरजाणी॥ नालवुंत
रने संसाररे॥ लक्करसिकुं॥६॥ ॥गरबी॥
५॥ ॥समाप्तम्॥ ॥रागगरबी॥
॥ ॥ज्ञानविषे॥ ॥कुरसाया गुरुनो सं
ग, रंगरुडीयेलागे॥ आवेअंतरमां आनंदलव
नोलयलागे॥ कुरसाया॥टेक॥ अकळकळाअंत
रजातमनी, ओळखायेअविनाशीरे॥ दृष्टादरशा-
नदृश्यरहीतहेजे, नारायणनोरासरे॥ रंगरुडीये
॥१॥ मनवाणीईंद्रीनो विषयनथी, नथीतहांनक्ष
त्रपंचरे॥ त्रिगुणतत्वरचितनतनरंचित, रचना
नथितहांरंचरे॥ रंगरुडीये॥२॥ अग्नीअर्कनथी
तारागण, नथीसूर्यनेचंदरे॥ साक्षी सकळप्रका
शकपोते, सच चंसच्चिदानंदरे॥ रंगरुडीये॥३॥
जाग्रत स्वप्न सुषोपती नथितहां, तुरीयातीतज
रूपरे॥ अजंअलौकिकजातमजणगो, सदा
अेकरसरूपरे॥ रंगरुडीये॥४॥ अजिनाधारजणि
तआनंदप्रद, पोतेपूर्ण प्रकाशरे॥ चिदाकाशच्यं-
पणचितचरनित, सकुमांसरजोवासरे॥ रंगरूडी
ये॥५॥ सद्गुरुकृपाथकी सकुसुलल॥ सेतेसरे
सकुशालरे॥ लालप्रभुअंतरमां भळेनीत, जावे
जगजनीलडानरे॥ रंगरुडीयेलागो॥६॥ समाप्त

॥रागगरबी॥ ॥विनति विषे॥ ॥सुणोश्री
मणा हुं तम मारे घेली थई छुं रे॥ए राग॥ ॥सुणोश्री
पती कृपा करुं करुं करगरीने॥ आपो दरशन दयाळु हेते
मने करीने॥सुणोश्रीपती॥टेक॥ प्रीतम पळे पळे
प्राण अकुळाय छे रे॥ आकुळ व्याकुळ थई अंतर अमु
ळाय छे रे॥सुणो॥१॥ मारे नयणे ते नीर नेहनां वहे-
रे॥ वाणी विलोपणां वेदना कोई परे कहे रे॥सुणो॥२
॥ आरत आंखनी शीखाय माहुं उर जळे रे॥ तेमां
प्रीत पडी मन पतंग परजळे रे॥सुणो॥३॥ सुखदासरोव
रनी लोभी झुरी रह्य छे रे॥ त्रिविध तापे तेम तम वि
नात पाय छे रे॥सुणो॥४॥ चेतन रूपे थवाने चिंता
चित्त करे रे॥ एहु वेदनाये विषय लोगवी सरे रे॥सु-
णो॥५॥ कृपादृष्टे लालनुं ते कष्ट कापजे रे॥ अनाअं-
तरमां निजनंद आपजे रे॥सुणोश्रीपती॥६॥ ॥
गरबी॥२॥ ॥कृपाळु कृष्ण कहुं रे धणुं करगरी
ने॥ अंतर टाळीने अंतरमां आवो हरीने॥ कृपाळु
॥टेक॥ कृष्ण वण ति नथि क्षण जंकपाय छे रे॥ छाती
छणाछणी ने छानी पीड्या थाय छे रे॥ कृपाळु॥१
॥ लव लोकनो लोयंगड श्यो अंगमां रे॥ विषय
जेहेरनी लेहेरो ऊठे अनंगमां रे॥कृपाळु॥२॥ अनी
अंतरमां आपे दाझ अपार छे रे॥ प्रभु पासे मारो पळे प-
ळे पोकार छे रे॥कृपाळु॥३॥ कहुं केटलुं दुःख ते मुजे क-

थी रे ॥ अंतर रमी आपनुं जाण्युं कंई छे नथी रे ॥
कृपाळु ॥ ४ ॥ संतनो लाला प्रसंगे आपो प्रीतडी रे ॥ कृ
पाळो प्रेम पीयूषनी रीतडी रे ॥ कृपाळु ॥ पा ॥ पंथ लोलि-
कनो पडछो करो परो रे ॥ करी वाल प्रतिपाळ लालनी करो
रे ॥ कृपाळु कृष्ण कहुं रे ॥ ६ ॥ ॥ गरबी ॥ ४ ॥ ॥
वालम घेहनी आंखे अतिशय उरजखे रे ॥ आवो अंत
र अलबेला अमने दुणवयो रे ॥ वालम ॥ टेक ॥ अना
लेणो वैराग वायु लणे रे ॥ आरत आंख अथी पपैपण
परखणे रे ॥ वालम ॥ १ ॥ मा कसण हिये शरीर रक्त थाय
छे रे ॥ मोहन मणवा माटे मन अकळाय छे रे ॥ वाल
म ॥ २ ॥ पंथ निरखी निरखी नेत्र मां झांखप डी रे ॥ पू
छुं पंथीने प्रीतम तारी वातडी रे ॥ वालम ॥ ३ ॥ गळ-
कां पपैपणे पोकारे मनुं तुमने रे ॥ मणो माधव मधु
राकृति सुखने रे ॥ वालम ॥ ४ ॥ ज्ञान ज तु वगिना तो
कणकुं मराय छे रे ॥ पिरता रेहती नथी गुमपी ग्या
य छे रे ॥ वालम ॥ ५ ॥ मांहे धीर आपी ध्यान मां घणी घ
सो रे ॥ विठ्ठल वाल करी लाल हृदे मां यसो रे ॥ वालम
॥ ६ ॥ ॥ गरबी ॥ ३ ॥ ॥ सुणो रे श्यामण कुं
शंकट कहुं कथी रे ॥ मारा अंतरमां आप हठ जाति रे
॥ सुणो श्याम णा ॥ टेक ॥ शास्त्र संत केरा शीख कहुं सु
णुं सही रे ॥ प्रीत श्याम णी मांथे कहे नहि रे ॥
सुणो ॥ १ ॥ समजू छुं सा था सद्गुरुनी सानमां रे

॥तहपिधूतीमनषसेविषयध्यानमांजी॥सुणरो॥२॥
जुगनेकृतकजनेकरोनामबांजे॥तहपि धीतपो
रेयामधामधाममांजी॥सुणो॥३॥विभुलव्यापी-
नेरह्याछेविश्वमांवसीजी॥जणउंतहपीजयदृष्टि
दृमांजसीजी॥सुणो॥४॥रागद्वेषजेहकेरी
करुद्वारछेजी॥वहुवाणीयेपणवृत्तिमांविकारछे
जी॥सुणो॥५॥एवांपापप्रतीहीनमूढमनकरे
जी॥कृपाणकेराववितातेकष्टकोणहरेजी॥सुणो॥
६॥कामक्रोधमनालगजलमना॥जपारछेजी॥अंतर
जामीएकआपनोआधारछेजी॥सुणो॥७॥माटे
शरणमांपड्योछुंप्रभुपाणजेजी॥दासनाजनुते
दुःखदुरकरणजेजी॥सुणो॥८॥ ॥गरबी॥
१॥ ॥ज्ञानेसालणोकृपाणुकदुदुगरीजी॥क
तोतारोछुंतारोछुंतारोछुंकरीजी॥ज्ञानेसालणो॥
टेक॥कुंकर्मकर्याकामनानीलारमांजी॥वारेयाउ
वह्योविषयनाविकारमांजी॥ज्ञाने॥१॥मनरेकुतुन
थीहरीकीर्तीनीरफेरामांजी॥दुष्टहालिकलमछेहृ
दामांजी॥ज्ञानेसालणो॥२॥पामरपणेपणप्रीतिप
पमांकरेजी॥धीरजराखीहरीध्यानसणउंनपयरेजी
॥ज्ञानेसालणो॥३॥पतीतपावनपोताचेप्रभुपासमां
जी॥मनेपाळनकरोनेहरिकुलासमांजी॥ज्ञानेसं
लणो॥४॥जइआपनुंबीपांरीवारमांकरोजी॥वे-

ગેવૈરાગઆપીનેવેદનાહરશોજી॥કાંનેસાંભળો॥૫॥
સામીશાંતિઆપોસદગુરુનાસંગમાંજી॥રસીલાર
ભજીરસીકસંગરંગમાંજી॥કાંનેસાંભળો॥૬॥ભક્તિ
ભાવનાયેલેદભાવનાહરશોજી॥લાલદૂછેમારોઆવું
મુજેઉમ્યરશોજી॥કાંનેસાંભળો॥૭॥ ॥ગરબી॥૫
॥ ॥મારાઅંતરમાંઅલખેલાઆવજોજી॥મ-
નેરીઆકુરેરા મારથી મૂકાવજોજી॥મારાઅંતરમાં॥ટેક
કામક્રોધઘોરચોરચીતમાંવસેજી॥તેતેજૂટેરીતો
લાજતાહેરીજરીજી॥મારાઅંતરમાં॥૧॥માનમો-
હમદમછરઅહંકારછેજી॥લોભક્ષોભમોહવેદનાવિ-
કારછેજી॥મારાઅંતરમાં॥૨॥એનોઅંતરમાંઅતિ
ઉતપાતછેજી॥મારેમાથેમાધવમોટીએનીઘાતછે
જી॥મારાઅંતરમાં॥૩॥ઠાકુરજેડીકરગરીકૂંપોકર્યો
કહીજી॥કઠણકાળજનારીઆકુકાંઈસુણોનહીજી
॥મારાઅંતરમાં॥૪॥રંકજેકુંજેકરંકઅપારછે-
જી॥નાસીછૂટવાનેલાગકોલગારછેજી॥મારા
અંતરમાં॥૫॥મારેવારવારચિઠુલાકકુંકુંથીજી॥સ્યા
મરીઆનુનેસંતાપોછૂટકોનથીજી॥મારાઅંતરમાં॥૬
॥અંતરજામી મારેઆપનોઆધારછેજી॥પ્રભુપા
સેપ્રીતેલાલનોપોકારછેજી॥મારાઅંતરમાં॥૭॥
॥ ॥ગરબી॥૬॥ ॥સમાપ્ત॥ ॥
રાગગરબી॥ ॥મનનેશીક્ષાવિષે॥ ॥

रीझमाननेतुंमूढमनमाहेरीलेनो॥साचीसमजवी
नासीधीनथीताहेरीलेनो॥रीझमाननेनो॥टेक॥तनि
श्रा पथीरथीपडीलावनालेनो॥जेवरजोपणीज्ञान
नेतूंनामनावनालेनो॥रीझमाननेनो॥१॥तेमांथीपी
ड्रष्टश्रापीनेउंधारसीलेनो॥दुजहरीयानेपारलेठउता
रसीलेनो॥रीझमाननेनो॥२॥माटेसर्वलजसंतश
रणमांधसोलेनो॥विषयवासनातजनेसंगमांवसो
लेनो॥रीझमाननेनो॥३॥तेहजापरीनारायणना
नाममांलेनो॥धीरजजापीनेवसावेहरीधाममांले
नो॥रीझमाननेनो॥४॥जन्मझोरीडनांकल्मषझापरीलेनो॥
प्रीतचैतनस्वरूपमांलेईथापशेलेनो॥रीझमानने
नो॥५॥अजंउआतमानोरासउरप्रकाससरीलेनो॥हद
यतिमिरलूलेनहीलासरीलेनो॥रीझमाननेनो॥६॥
नारेलक्तिराजरांतिसुजजापरीलेनो॥जोरेलक्त
जेलवेगेमननोजसेलेनो॥रीझमाननेनो॥७॥जेवु
सूमजीसकुसेवोसाच्यासंतनेलेनो॥कहेलालश्रीहरजा
उसीअनंतनेलेनो॥रीझमाननेनो॥८॥ ॥समाप्तम्॥
॥ ॥रागगरबी॥ ॥कुथनीवीषे॥ ॥झे
रीकुथनीथीगरीबीश्रेकुलीघणीलेनो॥रेहणीरंयकुरहे
तेसकुशीखोभणीलेनो॥झेरीकुथनीथीगरीबीजेकुली
घणीलेनो॥टेक॥साचीरीतहरीजीरीसीखसंसारमां
लेनो॥ऐंघआपेवाहेविषयवेगंधारमांलेनो॥झेरीकुथन

नीथीा।४॥ शब्दादीपलेईदेखाडे पंथ सततमांन्ने।।ऐजे
पोतेक्रईगमारग्रहगतेमांन्ने।। फेरीकुथनीथी।।राावि
षयत्यागेलाधे तत्त्वयदेवाग्यमांन्ने।।मएापोतेराग्येन
रीनेह्नाय्यमांन्ने।। फेरीकुथनीथी।।उ।।ब्रह्मवाग्यकी
ध्नमावेत्त्योगासोकुनेन्ने।। दृष्टिदेहमांतनेनसंरी
यरीोकुनेन्ने।।फेरीकुथनीथी।।श।।दृष्टे हांलिकुदेखाडे
दुल्लाय्यारनेन्ने।।वेषधारीनेवायेछसकुसंसारने
न्ने।।फेरीकुथनीथी।।५।। स्यामशीओनेरहेछे साथ्या
स्वेमांन्ने।। कुलालतन्ने नेहदेहगेहमांन्ने।।फेरी
कुथनीथी।।६।। ।।समाप्तम्।। ।।रागगर
बी।। ।।विनतिविषे।। ।।नकि ब्रापुंछोनंद्य-
छनासालरे।।मदीडांमारारे।।ब्रराग।। ।।ब्रुणे।
श्रवणरंगीलालालरे, हासहूंताहरोरे।।तमेदीनानाथ
यदयाल।।हूंनेअगारोरे।।१।।मने मारेछेरात्रुघणु
मारेरे।।दामक्रोधलोभरे।।ब्रापेब्रंतरमांडुब्रन्म
पार,उपजावेक्षोभरे।।२।।छावेब्रंतररत्तिनीत्याग
रे,ब्रग्यानकुजावीरे।।मूलावे ग्रेहधराग,नांजेल
लेब्यावीरे।।३।।फेरेईन्द्रियो ब्रथीमाररे,ब्रंधघरब्रा
परे।।विषयवेहनाब्रंगारमोझार, थिरनेईथापेरे
।।४।।ब्रनीब्रंगेब्रंगलागीलायरे, कुष्टछेकरीरे।।
जटरसजावानेधाय,कुमेनकुजिरेरीरा।।५।।ब्रम
ब्रनेकुकरेछेब्रगालरे,नेमनबावेरे।।ब्रुतिरा।।ब्रले

कुनीलाल, संपटनसाथेरे ॥३॥ मनेलूटेछेलालमीराय
रे, कृपणलनणीरे ॥ मारीथिरथिरकुपेकाय, पिऊजपेठेपा
णीरे ॥४॥ कूजेकलो श्रीजकुजणवंतरे, नाठानीनथिजाल
वीरे ॥ करगरी कंकमणाकंथ, लालनरी त्यारीरे ॥५॥ कुरो
चरणागतनीसहायरे, रीजुनुंमानमोडो ॥ पाजोप्रेम
रसश्रीयदुराय, चरणचीतलेजोरे ॥६॥ लोकलोकनोत-
लवोनेनेहरे, नंदकुमाररे ॥ आपोआपनाजीपरसाथो
लोह, लालनेअपाररे ॥७॥ ॥गरबी॥ ॥ प
मनेदरशनदीनदयाणूरे, अंतरआपोरे ॥ गोपाळ ग्रह
यवलाल, कृष्ण माकृपारे ॥१॥ रीजुसिंधु अपारमोजाय
रे, पत्योकुम तीमहरे ॥ मनेनाकग्रहीनेनहावे शाढो
नेनंदनंदरे ॥२॥ कुजांकर्मनी लणमांअपारडे, धुंधा-
णोकुगमारडे ॥ लेजयोरारीअजवतारा ॥ पल्यामिंदा
रथाररे ॥३॥ लहांलहांलन्मधिरथालहांतांछेरे, मांडून
घीसेकोर्छेरे ॥ रगांस्थारपिनांसंगीलहाय, कंकुडोने
रोछेरे ॥४॥ श्रेमकर्मकुरीलवमांहीरे, लटक्यो आपा
ररे ॥ नथिरियामथिनालुजमनेजोर्छे, दुःजत्नंजनरेणपु
॥६॥ विदनोजतिरीयअध्यासरे, जीपनेत्रासरे ॥ म
टेशेजाउं प्रभुपास, लव्यानी नथि जासरे ॥७॥ वि
षयवेदनासरणिरथायरे, तनतपीलनयरे ॥ जापोला
लनाअंतरमांय, सेहने सुजथायरे ॥८॥ ॥
गरबीरा ॥ ॥ सुणो मांयप मारानाथरे, वेहला

नीवातरे ॥ कुरगरीने कुं साक्षात, तमने तातरे ॥१॥
॥विषय जणमांवह्युं करीवालरे, माहु मनमीनरे ॥क
पपारधीयेनाखी जाण, देखेनपुण्यहीणरे ॥२॥ जो
कर्मसंजोगे पडी जाणरे, पारधीनी पासरे ॥ तीक्षणरी
स्नेत लडण, करसे विनाशरे ॥३॥ जग्ये जणथीतो
यविषे जणरे, जहर सूकाशेरे ॥ पापे तापमां थईने वि-
कण, नर्कमां जशेरे ॥४॥ विषयजणने मानेसाक्षातसे
समुद्र समानरे ॥ कहीसुखसागरनीवात, सुणे न
कदिकानरे ॥५॥ मारे मनपर आणी मेहेर रे, थीर करी
थापोरे ॥ ज्ञानानंदनिधिनुंज्ञान, अंतरमां आपोरे
॥६॥ कमिकृपा आकर्षणेनाथरे, कष्टकापीनाखोरे ॥ज्ञा
नानंदजणनी मांय, दासनेराखोरे ॥७॥ ॥
गरबी ॥७॥ ॥ मारा मननी माया नजायरे,
सुणो नदुरायरे ॥ सुख माटे कर्यां साधन, दुःख कु
थायरे ॥१॥ जरमाणुं जाणीने जोगरे, जोगी मन
भूररे ॥ व्याम धाम धाम कामनी मांय, रहे चकचूररे ॥
२॥ प्रेलोगने तमने मजोगरे, तृप्तीन थायरे ॥ कहो
जगीईंध न संजोग, क्रम ओलायरे ॥३॥ तुजक्र
पाविना कोटे कोईरे, कोटि उपायरे ॥ साधनकरीपे
श्रीमरी जाय, तरे न संसाररे ॥४॥ मारे समजावो म
नमांयरे, सुखनी सांनरे ॥ ज्ञानावोजयजेहदेह,
श्रीभगवानरे ॥५॥ कामक्रोधमदलोभजयमोहरे,सं

रीयमूळरे॥कृपाकरीनेकरोहरीदूर, मायानुंमूळरे॥३॥
हुंछुंदीनतमेदीनदयाळरे, तुंनाथहुंअनाथरे॥मारे
नारणनीकरोप्रतिपाळ, हरीग्रहीहाथरे॥४॥ ॥
पद॥४॥ ॥समाप्तम्॥ ॥रागगरबी॥ ॥
साधुसंगविषे॥ ॥वांसलडीवागीनेहुंतोजागी॥
ए राग॥ ॥साधुनोसंगकरोनीतनीत॥जेथी
थायेप्रभुसंगाथेप्रीत॥साधुनो॥टेक॥ विषयनीवा
सनाजेथ डीरजशे॥पूर्वनांसंचितपापप्रजळशे॥
गांठअज्ञाननीजेथकीगळशे॥साधुनो॥१॥जेना-
थीसंशयसकुरणीजारी॥येपळयेपळमनतेवरीथी
री॥तेथीज्ञानदीपकदीलमांधारी॥साधुनो॥२॥
जेतोतनेवाणीमांवीवेकजतावे॥ज्ञाननीगूढगती
समजावे॥जगतनुंभानतनेजेभूलावे॥साधुनो॥
३॥आपेरीरामनामनिजरत्न॥जरूरतूंकरजेतेनुं
जतन॥ जगतमांजूठुंनकरीशप्रयत्न॥साधुनो॥४
॥नीतसतसंगगंगामांनाजे॥उच्चीष्टतूंगुरुनोपीं
तुंभाजे॥लावेगुणनारणप्रभुनागाजे॥साधुनो॥
५॥ ॥गरबी५॥समाप्तम्॥ ॥रागग
रबी॥ ॥वीनतीविषे॥ ॥सुणोतमेरंगी
ला श्रीरणछोड॥जगतमां तमारीनथीक्यांईजोड॥
॥सुणोतमे॥टेक॥हुंछुंमानाहुंभनीकहाणी॥वडु
छुंपिकृतपरठंमुजवाणी॥जाणोछोतदपीहुंछुंवजा

णी॥सुणोतमे॥४॥मारुंचीत चंचळचपळछे॥रा॥
हुं छेनेमहरायुं ढोर॥लाजेनहीं रातदीवसीभटकेलोर
॥सुणोतमे॥५॥पीधांरनीवाउतोडेजळवारो॥पे
सेनई प्रपंचक्षेत्रमोझार॥करेछे विरुद्ध विषयनो आ
हार॥सुणोतमे॥६॥ अेवुं अेअनादीनुं दुष्ट अत्यागी
॥चारेचारे स्तुतीयुं मनी धांगी॥ हवेनथि लेतुं ज
गतमांथी लगी॥सुणोतमे॥७॥घरेनहीं पेहलोकनी
लाज॥करे अकुलत्क मांकुडांकाज॥गमेनहीं सायासा
धुनो समाज॥सुणोतमे॥८॥अनेतमे प्रेमबंधनथी
बांधो॥ ज्ञानगाणीयुं गणामां सांधो॥ चरावोने चेतन
आनंद छायो॥सुणोतमे॥९॥नथी मारे तम पाखे कोई
ईनाथ॥लेजो मारा दणकताढोरने साथ॥ आलेकु
जेवणाये लालनो हाथ॥सुणोतमे॥१०॥ ॥गरबी॥
पीलु॥धी॥ ॥लालदीवाणीनो मारे हाथ झालो॥प्रभु
मारुंचीतचरणमां चोटाडो॥ लालदीवाणीनो॥टेक॥
नथीमारे अर्थ जगतमां कांई॥करेछे भोगट मन जय
मांही॥तेनेतमे राखो चरणमां राई॥ लालदीवा
णीनो॥१॥ हुंमीदोषपरनाकरे अकुपाप॥लपेछेल
कुविषयनाल्लप॥करेछे पुण्यकर्मनो उत्थाप॥ला
लदीवाणीनो॥२॥कुतोजेनेधार्यो कामधरमंकीडी
नो॥जेतो भरे धीस थी उथुं थईनो॥ चारे चारे अंधवि
षयमांवहीनो॥लालदीवाणीनो॥३॥घडीपलघ

रमांनथी जेने गमतुं ॥ रहेछे रातदीवसमनरमतुं ॥
लग्नमेंछे लवना लोगोमां लगतुं ॥ आलदीवाणीनो ॥२
॥ हरोप्रेम अंतरमां अलवाणुं ॥ दीवाणी ज्ञानदीपक-
नी लाणुं ॥ तो तो मारा मनने हुं पाछुं वाणुं ॥ आलदी-
वाणीनो ॥ पोटा जो मारा अंतरनो अंधकार ॥ जी-
घाडोने रामरत्नलडारा ॥ वधे दीनदीन वीवेकवेपार
॥ आलदीवाणीनो ॥३॥ रीत्ति सारदानुं पूजन कर्यां
रे थारी ॥ तारे मारुं दुःखसहु हरनारी ॥ लक्ष्मीवर थी
न थोपडे लखारी ॥ आलदीवाणीनो ॥४॥ थीरा हरी
लक्ष्मसधायोलाल ॥ मटे दीरनमना दवानो दाल
॥ प्रसन्न थारी प्रेम पम्मनाल ॥ आलदीवाणीनो ॥
॥ आप्रवीदीवाणीनेने देखारी ॥ तेनात नताप सकु-
टणीलसी ॥ लालजनो प्रीतमप्रीते प्रकासी ॥ आलदी-
वाणीनो ॥६॥ ॥गरबी॥२॥ ॥समाप्तम्
॥ ॥राग गरबी॥ ॥विरह विषे॥ ॥
मणी अेक विरह जेनमारा मनमां ॥ तेने देखी ताप
थया मारा तनमां ॥ मणी ॥ टेक ॥ अेना अंतरनी व
तमें जाणी ॥ मारी पासे पीवामागे प्रेमपाणी ॥ थई
छे विरहणी प्रेममुं भयाणी ॥ मणी अेक ॥१॥ जरेजे-
नी हूं तो छुं प्रेमनी प्यासी ॥ अेना माटे अंतर रहे छे
उदासी ॥ प्रेमजणपारी प्रीतम अविनासी ॥ मणी
अेक ॥२॥ त्यारे तेजो लक्षारतना जोली ॥ उडो

आपणजे दिलदारजेणी ॥ जेर्ये छै रुं मुक्तिथी अ
रुं होणी ॥ मणी ओ ३ ॥ रु ॥ तारी तो याल नथी यील मड
ती जगतमां लाण नथी जेनी जडती ॥ जोणे थी जग
मनथी जेनी पडती ॥ मणीजे ३ ॥ ४ ॥ त्यारे जेनी जो
ण जजर नहीं लहीये शुं ॥ त्यारे आरत पीरा तेमां ल
गी सही ये शुं ॥ छानी यात होना आगण कहीये शुं ॥
मणीजे ३ ॥ ५ ॥ विरहणथई सुजन ओ रे यियारा ॥ घा
णी छाती दुःखे यार यार ॥ यहू छे जेओनी जांजे जां-
सूधारा ॥ मणीजे ३ ॥ ६ ॥ जेओनी जां छ्युं थई छेरा
ली ॥ जारतनी जांच्ये जळे जेओनी छाती ॥ पीरा
जेओनी मने नथि जमाती ॥ मणी ओ ३ ॥ ७ ॥ लू
ली न्यारे लाग जेओनि तनमां ॥ प्रीतम प्यारो
आवी मळ्या त्यारे मनमां ॥ प्रेम जगपई ने रा-
जी यैतनमां ॥ मणीजे ३ ॥ ८ ॥ यैतन सिंधुमां मा
रुं मन मणीयुं ॥ जे म हांई लूण पाणीमां लणीयुं
॥ विरहनुं दुःख ततक्षण टणियुं ॥ मणीजे ३ ॥ ९ ॥
वीरह थी वीरह प्राय जेने लारी ॥ तेनी आयात ह
ली विस्तारी ॥ ओ तो लागे लाल प्रीतमने प्यारी
॥ मणी ओ ३ विरहजेन ॥ १० ॥ ॥ गरबी ॥ ५
॥ ॥ विरहजेनी आवी अगन ३ मनमां ॥
थारे थारे आंसू वहे लोयन मां ॥ विरहजेनी ॥ टेक ॥ म
री मन वस्तीने ओ समजावे ॥ रीज संदेशो कही सं-

जणावो॥ मने मारी भूलअेभुलके नणावो॥ विरहजे
नी॥५॥ उंघे रीरे भूलीपीडा ज्यारे पामी॥ त्यारे
तें समर्या अंतरजामी॥ संकटमांथी उहारजो
मने स्वामी॥ विरहजेनी॥६॥ कर्यो तें कोलप्रभु
नी पास॥ संभारीश तमने हुं श्वासोश्वास॥ ज
गतमां रहीरो अंतरथी उदास॥ विरहजेनी॥७
॥ तारा जे कुसंग दुःजहरना॥ तेनी साथे करती
नथी केम प्यार॥ जरे तारी संकटवेळा संभार॥
वि रहजेनी॥८॥ अेतो तारा तनरण पोषणकरत
रा॥ तेने छोडी केम तुं भमे छे जहारा॥ नठोर तुजसर
जीनथी कोई नारा॥ विरहजेनी॥९॥ साच्यां तुज
जग मे नही तेने॥ व्यभिचारी नारी कहे सकु तेने
॥ हरजी तुं संगे रंगीलानी रे हे॥ विरहजेनी॥१०॥
जुदी ते जंतजुहूं थई भरी॥ तेना संगे मनी भूति
यो मारी॥ पछे पस्तावो करे शुं थारी॥ विरहजेनी॥
११॥ तारा ते झूठा सगा संसार॥ स्वारथ सुजमाटे
करे जकु प्यार॥ अंते तेनथी जांसुना जे जोनार॥ वि
रह जेनी॥१२॥ अेनी जेवी वात सुणी रास्वा रात
ज्यूं में सुज सकु संसार॥ अंतरमां संभार्यो करजो
कार॥ विरहजेनी॥१३॥ जाह्य मारी ओलोत मेजकु
नामी॥ अंतरमां भजने अंतरजामी॥ तमारा वि
योगे पीडा जकु पामी॥ विरहजेनी॥१४॥ जेवी ते

नामनमां विरहजोधमणशे॥ तेना तो ताप त्रिविधि
नाटळशे॥ तेनुं जोल्युं जाण प्रीतम साथे पणशे॥
विरहजेनी॥१॥ ॥गरबी॥२॥ ॥समाप्त॥
॥ ॥राग गरबी॥ ॥ज्ञानविषे॥ ॥
घटाज्ञानरूपी चढी मारा घटमां॥ जारतनी जळझीस
मीजरपरमां॥ घटाज्ञाना॥टेक॥ धीवेकनी चादणी व-
रसेलारे॥ बुद्धिरूपी जूं दपेडघारेघारे॥ जावेछे ज
थंडचैतननी धारे॥ घटाज्ञान॥१॥ वहेप्रेम पाणी
प्रवाहनुं पूर॥ कर्मनी कीच थई गई दूर॥ छपीगयो
संशय रूपीसूर॥ घटाज्ञान॥२॥ मधूरीवाणी जोले
मनमोर॥ कुशळता कोयल करे जकुशोर॥ प्रीतीरू-
पी पपैयो करटंकोर॥ घटाज्ञान॥३॥ ध्यानरूपी ध
रतीगई छे लीनं॥ उगियांछे पूर्वोल्यासनां जीन॥
रह्युं छे तेने दपीदीलरीझ॥ घटाज्ञान॥४॥ जज-
डानंद रूपी फळ लारे॥ लाग्युं छे चैतन वृक्षनी डारे
॥लणी लीधुं लाले पूरथ रनस्कारे॥ घटाज्ञाना५
॥ ॥गरबी॥५॥ ॥फूलीतारा तनमां
ज्ञानफूलवाडी॥ तेने लेने अंतर जोअ उघाडी
॥फूली तारा॥टेक॥ प्रेमरूपी पुष्प मांडुं मन लाणे
॥वणग्युंछे संत संगतनी डाणे॥ उतारी ले मनुष
जन्मने डाणे॥ फूलीतारा॥१॥ वैराग रूपी वसे जा
गधाना॥ तेने तूं आपने मनथी माना॥ जेथी थाशे

ज्ञानअगीयानुंज्ञान॥मूलीताश॥शान्मेनेलेन-
वानीजारतत्यारेथाशे॥त्यारेतारुंतनडुंतपित
पित्तशे॥घडीपणघरमांकेमरेहेवाशे॥मूलीता-
रा॥३॥वीवेकनोथायुत्यारेदीलवासे॥त्यारेओ
धजानंदगंधनोथाशे॥जगतनुंलाजलमूरलुला-
रे॥मूलीतारा॥४॥जेतुंमूळभोमरूपीत्यारेम-
ळशे॥त्यारेतारातापत्रीविधिनाटळशे॥साचे
लालप्यारोमलुंउरलणशे॥मूलीतारा॥५॥
गरजीरा॥ ॥समाप्तम्॥ ॥रागगरजी
॥ ॥हरीनेलकमेरेहो लावे॥मूघोमनुष
जनमहरीनावे॥मूपेयतीने होयालो॥मारग
हरीभजवानुंटलाले॥१॥विषयवासनारेहो वी-
सारो॥तोआवरोदुःखहरीजानोआरो॥जेसु
खसहुयोनीमांहोजावे॥हाथचढ्योहीरोशुंग-
मावे॥२॥तेनीत्रषणारेहोतजजे॥सतगुरुसंगे
साधनसजजे॥शीशालैशरणेरेहो थाशे॥हरु
गेहनो नेह निवारो॥३॥लक्ष्किलावेरेहोलक्षिये
॥रूपरडामनाआपसतकीये॥शब्दसुणीनेरे
होलगो॥भ्रांतिलवनालो यंगनीलागो॥४
॥निश्चेलक्ष्यो हो लागलगो॥शीदकरो आलीजे-
त्याताणो॥माटेमननुंमानहोमेलो॥अरेदील-
लालप्रभुसंगखेलो॥५॥ ॥गरजी॥५॥

॥ ॥ अंतरजामी हो अविनाशी ॥ प्रीतमप्री
त्येथाय प्रकाश ॥ रसीयो सहु घटमांहो रमे छे ॥ लू
ल्यो तेन रजाहे रलमे छे ॥ १ ॥ अगनाली मांरे होग
ध ॥ तज तेने सूंघे घासमती मंद ॥ अम अंतर मांहे
अविनाशी ॥ मूढ नहि जाणे मथुरां काशी ॥ २ ॥ भ
ती जगमांरे हो जाणो ॥ जेने तमे भणवा आरत
आणो ॥ आरत जगनी होउर थाय ॥ पूरवनां पा
प सहू जपी जाय ॥ ३ ॥ विषयवासना रे हो लागे ॥
जक्तनूं सुख सहु जाडूं लागे ॥ सुखीष्टा समहो ला
से ॥ ग्रेह वैरागनो वेग प्रकाशे ॥ ४ ॥ स्वर्गना सुख
मांहो मन नावे ॥ ब्रह्मलोक सुख स्वप्ने न लावे ॥ ता
लावेली रे हो तनमां ॥ मणवा लाल प्रभुने मनमां
॥ ५ ॥ ॥ गरबी ॥ २ ॥ ॥ मणवा तन मनहो
लपी लय ॥ अंगो अंगे लागी आरत लाय ॥ अन
कुतांन मनी रे हो लय ॥ चितमां चटपटी चिंता थाय
॥ १ ॥ नयणे नींद्रा रे हो नावे ॥ लावेलो अन मुखमां
न लावे ॥ शरीरे रुधीर मांस हो सुकाया ॥ दीन दीन
देही दुरबण थाय ॥ २ ॥ छानी दाझे रे हो छाती ॥ र
डतां वीते सघणी राती ॥ कृष्ण घणुं ओने होके हे पाय
प्रीतम तुज वीना प्राण पणाय ॥ ३ ॥ माधव मुजने रे
हो मणजो ॥ लक्षि आपी अंतर लणजो ॥ जनने कु
जीयो रे हो लणीए ॥ प्रेमजण पान्ने सारंगपाणी ॥ २

॥नेहनो आपजे रहेनातो॥ राखो नित्यरंगे मने
रातो॥ बालनी करजो प्रतिपाळ॥ मारा लालित
त्रिभंगीलाल॥प॥ ॥गरबी॥३॥ ॥
समाप्तम्॥ ॥रागपद॥ ॥वीनतीविषे
॥ ॥हो मनवा श्रीहरीशरणे रहेने॥एराग
॥होकेशव सुणजे कृपाकरी कान॥मोक्षमारगना
परिपंथीनो, नारी करो लगध्यान॥होकेशव॥टेक॥रंग
रणलोभीमां आवी, कूडे साध्या स्वरा॥पाछापग न
लेरे नडरे दिल, तेने ध्यावी कीधा अकरूर॥होकेशव॥१
॥हरीनुं मन मोहोटा नारद मुनी, ज्ञानी ध्यानी धीर॥
तेनापेण तनमां तन्मूर्त थई, उरउपजावी पीर॥होके-
शव॥२॥ लोणानाथि सहारी वध्रस्ना, जगमां कहावे
अजीत॥ जे कुल भृंगी आद्ये अनेकने, कवा कीधा छे
कजीत॥होकेशव॥३॥ देवदनुज मुनी मनुज असुर
आदी, सकुनो शत्रु अजेह॥ वीकळ करे अंतर व्यापी पण,
जेने न दीसे देह॥होकेशव॥४॥ इत्यादिक मोहोटा मो
होटाना, मूकावे मननानेम॥ अंतर विषय ध्यानी अ
ज्ञानी हूं, ते थकी छूटूं केम॥होकेशव॥५॥ कामरीपुना
नारी तणो कह्यो, श्रीगीतामां उपाय॥ लाखुं छुं कुल
दुःपती तोपण, मुजथी नमे स्योजाय॥होकेशव॥६॥
माटे कृपाकरीने तमे आपो, अनुलवी संतनो संग॥ संगे
श्रुतिसीद्धांत सुणावी, मने आपो लक्ति अंतरंग॥हो

शपा।।४।। अंतरंग भक्तिजापी हरी, हते आलो हपा।
नेपोते वोपण भणीपोतानो, लालने हरभेसनाथ
।।होरीवा।।८।। ।।समाप्तम्।। ।।रागपेहा
मनने प्रबोधवीषे।। ।।होमनवामान शीखा
मणमारी।। श्रीकृष्णचरणनुं शरण ग्रह्या विना, था
य नहीं गती तारी।।होमनवा।।टेक।। पडवानुं नरदेह
पांमु, सुणमनपंखीडीर।। तेनो आश्रय करी अज्ञा
नी, केमथाशीरह्यो छु तुंधीर।।होमनवा।।१।। काळसी
याणो रीशपर रीत्रु, नीतनीर खेनीरधारा।। तेथीपिं
डपांमुं प्रतिदीन, क्षरण थाय गमार।।होमनवा।।२
।।चीत्रविचीत्र विषयचूशामां, चंचूरहु दीनराता।।
चंचूरसमां मीत चोहोटयुं तेथी, दुःखेनतारीतुंघा
ता।।होमनवा।।३।। जेदीनकाळ अचानक करशे, पिं
पिंजरनोनाश।। त्यारे मूकीश के मञ्जषमारी, मारे स
मजी मूकय जेनी आश।।होमनवा।।४।। विषयलो
गमारे जीवनअकु, दुःखछे नर्कमोझार।।पण दुर्लभ
नरतन रत्न अमूल्य मारे, तुजने कहु वारवार।।होमन
नवा।।५।। मारे विषय चूशामांथी तुं, चितचंचूने नि
वार।। काळरीत्रुनो भय दुःखेमुजे।। कृष्णकृष्णउच्चार
।।होमनवा।।६।। हरिहरिउच्चरतां हरीरूपथई, टळी
जशे संसार।। पींडपींजरनी प्रीतीमटीतारु, चितथ
ईजशे धिक्कार।।होमनवा।।७।। माटेसकु साधनकरी

जणगां, लालतूं लेने नाम ॥ नाभे प्रसन्न थई परमेश्व
र, आपरीतु बने विश्राम॥ हो मनवा॥ ८॥ ॥ पद
॥ ९॥ ॥ हो मनवा सांभळ मारी वात ॥ श्रुति सी-
द्धांत सार शिखामण ॥ तू बने कहूं साक्षात ॥ हो मन
वा सांभळ ॥ टेक ॥ श्याम सुंदरना साचा भगतनो, कर
ने तूं सतसंग ॥ नीत्य निरंतर नियम धरीतारे, तूं पी
दे ने अंतर अंग ॥ हो मनवा ॥ १ ॥ प्रभुनी पूरण कृपा
होय त्यारे, संत तणो संग थाय ॥ संगे हरीनां चरित्र
सुणी, पछे हरीमहीमा समजाय ॥ हो मनवा ॥ २ ॥ हरी
महीमा हरीकथा श्रवणमां, नीत्य धरावे नेम ॥ नेमे नो
तम चरित्र सुणी पछे, प्रगटे प्रभु साथे प्रेम हो मनवा
सांभळ ॥ ३ ॥ प्रेमे गदगद कंठ थईने, थाय हरीगुण
गान ॥ पछे रोमांचित थई रुदन करीकरी, भूले शरीरनुं
भान ॥ हो मनवा सांभळ ॥ ४ ॥ पछे आनंद अश्रु नेत्र-
मां आवी, परमानंदनि रतिलभाय ॥ परमानंदमां म-
ग्न थई पछे, भक्त नरछे दंभाय ॥ हो मनवा सांभळ॥
५॥ पछे चिदानंद रूपे थईने पद, जीवनमुक्त पमाय
॥ जीवनमुक्तनी अकळगती जेतो, कोई थी कळीन
शकाय ॥ हो मनवा सांभळ ॥ ६ ॥ जे पद प्राप्ति थवानुं
कारण, महानुभावनो संग ॥ लालतूं लगन धरीने क
रजे, शीतल थाय अंग अंग ॥ हो मनवा॥ सांभळ॥
७॥ ॥ पद ॥ १०॥ ॥ हो मनवा मूकी दे जग

आरी॥ भक्तथई अभक्त आरी करेते, भक्त नहिं अभक्त
दासा॥ होमनवा मुकीदेअगआरी॥ रेकुं॥ आशा॥ जेने
कुबनमनीबननी, जनर अमरजेपास॥ अनेक जा
पद आपीनेतारुं, घालरी सत्यानारी॥ होमनवा
मूकी॥ १॥ चक्रवर्त्तिराजनी संपदा, ऊपररहतेजा
ण॥ पणजेआरी॥ मटीनथी मननी तो, राजनहीं
रंकजाण, होमनवा मूकी॥ २॥ आशा॥ रात्रीभांनीत
वीचरे, दुर्गुणघूड अनेक॥ कामक्रोध महलोलमणी
तने, लूलावेज्ञानवीवेक॥ होमनवा मूकी॥ ३॥ आ
शा॥ जल्लज्ञानसूर्यनेजेने, नीलदांके छे नीदान॥
अज्ञान अंधारुं जेथी, जन्मजन्म करे छे हेरान॥ हो
मनवा मूकी॥ ४॥ वैराग वायुनो वेग वहे त्यारे॥ आ
शाजल्लवेराया॥ पछे अंतरज्ञान सूर्य प्रकाशी, ता
हूं असमृप्तुजनया॥ होमनवा मूकी॥ ५॥ निराशी
ना अंतरमानीत, वरते अर्भआनंद॥ सर्वदीशा॥ आ
नंदमयदेखी, वीअ्चमांवीचरे स्वछंद॥ होमनवा मू-
की॥ ६॥ मारे अंतर आरीतजवूं, नरूपीपाने
नीसारी॥ नीराशीना मनमांवसेनीत॥ लालप्र-
भुअविनाशी॥ होमनवा मूकी॥ ८॥ ॥पद॥ ३
॥ ॥ होमनवा सांजलशीखासार॥ हेतेश्री
हरीनागुणगाईने, उतरजेभवपार॥ होमनवा सांज
ळारेकुं॥ ऊरतगेकूडांकर्मतजे तमे, ततक्षणमनक्र

मचाणा ॥ जेथी अधिक अधिकुं दुःख पाय मारे, कपटि
रोरी कहणा ॥ हो मनवा सांभळजो ॥ ३ ॥ माग रहीरे मारुं
तन मारुं धन, मारी नौतम नारी ॥ जेम मारुं मारुं मि
थ्या करे जेथी, मूरख आयछे मारा ॥ हो मनवा ॥ ४ ॥ पो
षे पामर प्रपंच तणी तूं, वेगे प्रीत निवार ॥ अथानतु
च्छ थई रीझिने वळे, संसार सफरनो भार ॥ हो मनवा ॥ ५ ॥
माहे मननी माया तजि, भज माया पति भगवान ॥
प्रीत्ये प्रसन्न थई परमेश्वर, आपे निज आनंद घन ॥ हो
मनवा ॥ ६ ॥ भाग्य गणे करी करी करी आव्यो, दुर्लभ नर
अवतार ॥ खूणी रात नहीं थाओ फरी तिणो, फरी आवे
नहीं आ वार ॥ हो मनवा ॥ ७ ॥ चैतर चित्तनुं चिंत
न तजि तूं, चित चैतन मांधार ॥ चीतना संगे चैतन
ने थाय, जन्म मरण संसार ॥ हो मनवा ॥ ८ ॥ चढ-
शाळे विषय वेग तणुं तूं, आज्ञण अजणगुं निवार ॥ वि
षयारिक्तना अंतर भीडे, राग द्वेष अंगार ॥ हो मनवा
॥ ९ ॥ जाणे अनुक्तेथी भगवे तूं, भक्त स्वजनथी जंत ॥
अजणगुं अविद्या गफ्फन पणारे, लासे अंतर मांही अ
नंत ॥ हो मनवा ॥ १० ॥ अखाडे अंतर लेई आपघा सं
शाय शोक संताप ॥ सगाळ अंग वतसळ थईने,
तारुं अजणगुं धारी आप ॥ हो मनवा ॥ ११ ॥ आवणे शां
ति सुखनां सर्वडां, घन सेधार संपाता तननां त्रिविधि
ताप रळी, पीलदारी अनंद अपारा ॥ हो मनवा ॥ १२

॥लाहरवे लारेमां लारे, सतगुरुनो महिमाथारीषे सुरेशश्रुति शिव सारद, नेतीनेतीनीतगाय॥होमनवा॥२॥आसोथेसाध्या आनंदनी, समजावे सतगुरु भान॥अधिकारीअंतरमांधरशे, बालप्रभुनुं ध्यान॥होमनवा॥३॥ ॥पद॥२॥ ॥होमनवा सांभलनेरगुरुज्ञान॥सर्वजवश्रीहरीनाअंशे जेवुं, समजीआपो मानदान॥होमनवा॥टेक॥मनक्रमवचनेकोई प्राणीनो, करवोनहींक्यारे द्वेष॥जवकुजे हरीआपेदुजायमाटे, तजवोअंतरथी अशेष॥होमनवा॥१॥तीर्थव्रतवरणाश्रमधर्म, विद्याध्ययन अर्चन ध्यान॥चेतनद्रुषीदालिकनुं लक्ष्मी, मांहीआकृती समान॥होमनवा॥२॥विद्याविनयसहीतब्राह्मणगाय, हस्तीस्वपचनेस्वान॥सहुमांसरखो आत्मा धेतनने, पंडीतकहेभगवान॥होमनवा॥३॥समदरशीनीवृत्तिरहे नीत, शांतिसभुदनी मांय॥चितनतजि चेतनपर्छदेखेन, लौकिकभावना कांय॥होमनवा॥४॥जेमकिंचितअग्नीकाष्टसमूहने, भस्मकरे नीरधार॥तेमअल्पज्ञान सहुकर्मने भस्मी, भूतकरेतेणीवार॥होमनवा॥५॥श्रीकृष्णनाशुद्धरुपासीद्ध. निर्मोही निर्मान॥अर्जुनउद्धवआदिकने, श्रीहरीये आप्युंजेज्ञान॥होमनवा॥६॥तेमाटेसहु साधनतजिनें, भजलाचेभगवान॥भगनेलाल

प्रभुगीरजावी, समभावेज्ञाननीसांना॥ होमनवा
सांभळनेशुद्धज्ञानना॥७॥ ॥पद॥५॥ ॥

होमनवा मनमायाने तजने॥ मनक्रमवचनेभाव
धरीनीत, कृष्णचरणचूपे भजने॥ होमनवामनमा-
याने तजने॥टेक॥ चतुराननेचूकपडावी, ऊरऊपजन-
वीजनंगा॥ तेथीब्रह्मा आतुरथईधायाभ्नुयो, करवा
सुतानो संग॥ होमनवा मनमाया॥१॥ दीव्यमोह-
नीरूपदेखीधस्युं, रूपनुं रीवज्येध्यान॥ मनमथ
वसथईविषयमांहीवही, भुल्यास्वरूपनुंज्ञानहो
मनवा॥२॥ नारदमुनीनामनमां पेसी, केवोनच्या-
व्योनाच॥ ज्ञानगयुं मर्कट मुखथयुं रीस, घरसोनही
कुंसाच्या॥ होमनवा मनमायाने॥३॥ ईन्द्र सोभरी
पारासरपण, वेगेवह्यामनपूर॥ श्रृंगीऋषीजाद्ये
जनेकने, कामेकीधाछे हजूर॥ होमनवा मनमाया
ने॥४॥ ते माटे तुं तत्परथईने, रूपे चीतमां चेत;
मानमूकीनीत करनेसाच्या, संतनी साथे हेत हो म
नवा मनमायाने तजने॥५॥ तेनीकृपाथीकीतरजे तुंमन
नरूपसंसार॥ मननमरे मनमरीजशे पछी, पा-
मीशमायानो पार॥ होमनवा मनमायाने तजने॥
६॥ ज्हांज्हां मनन स्वभावे मनरहे, तहां तहां कुंज
अपार॥ माटे मननुं मनन तजि मन, लालप्रभु मां
तुंधार॥ होमनवा मनमायाने तजने॥७॥ ॥

पद ॥ ३ ॥ ॥ समाक्षेम ॥ ॥ गर्वप्रहरवि-
षे ॥ ॥ हो मीथ्यां रीछने धरो मन गर्व ॥ कर्म धर्म
नी जणमारे, रोख्री घूंपाणा सर्व ॥ हो मीथ्या री
छने ॥ टेक ॥ एकादशीमां ओद्धव प्रत्ये, भाष्युं श्रीभग
वान ॥ मारी सेवा स्मरण कीर्त्तननो, सर्व वर्णनो
धर्म समान ॥ हो मीथ्या रीछने ॥ १ ॥ शास्त्रनो आश
य समजे नहीं धरे, धर्म कर्मनुं मान ॥ रोग्य कचाएीमां
धर्ही जई सायां, संतनी समजे न सान ॥ हो मीथ्यां
रीछने ॥ २ ॥ कर्म संजोगे समजावे कोई, श्रुति सि-
द्धांतनी वाण ॥ तो पण मानी पंडीत पोते अकु, अप
ने श्रुतिवाक्य प्रमाण ॥ हो मिथ्या रीछने ॥ ३ ॥ अभ
म विद्यामां अंतर्जई, अज्ञाने भ्रम अनेक ॥ आप
भमे अन्यने भरमावे, पण समजे नरी शास्त्रवि-
वेक ॥ हो मीथ्या रीछने ॥ ४ ॥ कर्मना फळने अक्षय कहे
वणी, अक्षय कहे स्वर्ग धाम ॥ जेम काम कामना क
र्म करे धरी, क्यारे न लहे विश्राम ॥ हो मीथ्या रीछने
॥ ५ ॥ आवागमनवेगमां वहे नीत, मानी पंडीत
मूढ ॥ असाध्य रोगी भवभोगना भोगी, कहो केम
समजे गती गूढ ॥ हो मीथ्या रीछने ॥ ६ ॥ विविधप्र-
कारना कर्म धर्मना, कृणथी शांति न थाय ॥ तो ते वेद
व्यास पर्छ नती ॥ जेथुं पोते श्रीमुखे गाय ॥ हो मीथ्या
रीछने ॥ ७ ॥ कृपा करी नारद मुनीये कह्यो, भक्तिज्ञान

દઢપંથ॥ તે સુણી ભગવતધર્મ સહીત ભાખ્યો, વ્યાસેશ્રીભાગવતગ્રંથ॥ હોમીથ્યારીદીનો॥૮॥ તે માટે તમેધર્મ કર્મનું, મૂકો મનથી માન॥ સીધાંત શ્રીભાગવતનું સમજી, ભક્તિ ભાવેભજ્જો ભગવા ન॥ હોમીથ્યારીદીનો॥૯॥ પૂર્વ જન્મના પુણ્યેજ્જે મળે જ્જનુ ભવીસંતનો સંગ॥ સંગેસહુ સંશય ટળીને પ્રગટે, લાલપ્રભુરંગ રંગ॥ હોમીથ્યારીદીનો॥૧૦॥ ॥ સમાપ્તમ્॥ ॥ રાગકયીજ્જેનુંસાર॥ પદ॥ ॥ વીનતિવીષે॥ ॥ રહ્યું જ્જવેરે કેમ રહ્યું જ્જવે॥ કહો કૃષ્ણવિનારે॥ કેમ રહ્યું જ્જવે, કેમ રહ્યું જ્જવેરે કેમ ર હ્યું જ્જવે॥ટેક॥ વિરહાગ્નિની જ્વાળા, ઊઠ્યાર વારેઉ રમાં॥ ક્ષણેક્ષણે તનુ માકું તપાવે॥ કહો કૃષ્ણ॥૧॥ જાંગે જાંગે જ્જારત સાથ બળે છે જહુ॥ લોચન નીત જાંસુ લાવે॥ કહો કૃષ્ણ॥ ર॥ મન મળવા જ્જાદ ય મનન કરી, ચીતમાંચિંતવન થઈ જાવે॥ કહો કૃષ્ણ ॥૩॥ કાળ ભયંકર કાયા કપાવે મારી॥ ભોજન મુજ્જ માં કેમ ભાવે॥ કહો કૃષ્ણ॥૪॥ છાંની ચિંતા યે છાની છણ છણે છાતી મારી॥ રાત્રી જાંપ ક્રૂને જ્જવે॥ કહો કૃષ્ણ॥૫॥ જ્જારત જાણીઉર જ્જારત વાણી ક હી॥ લાલ મળવાને સંદેસો કહાવે॥ કહો કૃષ્ણ॥૬॥ ॥ પદ॥૭॥ ॥ કેમ કરીયેરે હરી કેમ કરી યે॥ કાળ કર્મ પીડે છે હરી કેમ કરીયે॥ કેમ કરીયેરાયે

डाकोरेथि कोणथी डाणे कह्यो फरीफरी मुजने॥ जन्म-
मां जन्मी जन्मीने मरीये॥ कोण कर्म॥१॥ लख चलय
पंथमां मुजने लइ आव्यो त्यारे॥ ठीक केठे कोणे समजुं नव
करीये॥ कोण कर्म॥२॥ नर्कनां दुःख श्रवणे सुणीने कं
पे छे काया॥ नेत्रमां नीत्य आंसु ढळीये॥ कोण कर्म॥
३॥ कांइ कर्मे जन्म जन्म कांइ राख्यां कर्म॥ रोग टके रा
फरीफरी करीये॥ कोण कर्म॥४॥ रांकने रडतो देखी कृ
पा करा से पेखी॥ लालनुं दुःख हरी वेगे हरीये॥ को
ण कर्म पीडे छे हरी॥५॥ ॥पद॥२॥ ॥
मेहेर आणीरे मन मेहेर आणी॥ मने मळजो मो
हन मन मेहेर आणी॥ मेहेर आणीरे॥टेक॥ केट
लुं कहीं कहीं कहुं कृपाळु तमने॥ मारा कर्मनां दुःख
नी छे आ कहाणी॥ मने मळजो॥१॥ कामण थी तं
कुं गाण करजो डीठ्रलु॥ कर गरुं छुं मन क्रम वाणी॥ म
ने मळजो॥२॥ पळे पळे मन मरडर दुःख आपे मुजने
॥ माटे मनने तम चरणे लेजो ताणी॥ मने मळजो॥
३॥ अंतर टाळीने अंतरमां पधारो वाला॥ दासनुं
दोहलुं दुःख जन्न णी॥ मने मळजो॥४॥ जाणत जा
यजणे छे अंतरमां माटे॥ लालने पाजो प्रेम पाणी
॥ मने मळजो॥५॥ ॥पद॥३॥ ॥नीत जा
वोरे हरी नीत आवो॥ मारा हरदामां हरी हेते नीत
आवो॥ नीत आवोरे॥टेक॥ नेत्रना देषो

माहाराहूरकरोदयाळु॥ नेत्रमांजावीनेत्रेनेहलावे
॥माराहरदा॥२॥ मधुरमुखेमधुरबोलीमधुरमुख
॥हरजुदेखाडीमनेहसावो॥माराहरदामां॥३॥ भ
क्तिअंतरमांआपोभक्तवत्सलप्रभु॥भक्तिला
वेमारामनमांलावो॥माराहरदामां॥३॥मनमां
आवीनेमननुंमननमुकावोप्रभु॥दीव्यस्वरूपम-
ननेदरशावो॥माराहरदामां॥४॥लालतं मारो
मारोकरीनेअंतरपधारो॥प्रेमरसप्यालोमनेप्रीते
पायो॥माराहरदामां॥५॥ ॥पद॥४॥ ॥
समाप्त॥ ॥रागऊपीअनुसार॥ ॥
तत्वतथाप्रेमविषे॥ ॥धनधन्नवेरे शीहदधन
धन्य॥जेणे तत्वसाधूं तनमांते रीहधनधन्य॥ध
नधनवेरे॥टेक॥ तनमां रे तपव्रत तनमांरे तीरथ॥
प्रेमरसप्यालोतनमांपावे॥जेणेतत्व॥१॥तन
मांरेत्याग तनमांहीवैराग्यछे॥ज्ञानगुरुनुंतन-
नमांआवे॥जेणेतत्व॥२॥ तनमांरे हरीकथात
नमांरेहीरतन॥ध्यानधणीनुंतनमांध्यावे॥जेणे
तत्व॥३॥ तनमांरे तननुं ज्ञान जूझावेगुरुप्रसा-
नेकरीने तनमांसमजावे॥जेणेतत्व॥४॥तन-
मांरे तत्वज्ञानीतननारे तापहरे॥ तनमांरेलाल
हरीगुणगावे॥जेणेतत्व॥५॥ ॥पद॥५॥ ॥
धंधेधाधेरे शीहदधंधेधावे ॥जेणेप्रेमरसपीधाले

रीद घंघे घावो ॥ घंघे घावे रे ॥ टेक ॥ गदगद कंठे गो-
विंद गुण गाईने रे ॥ आनंद अश्रू आंख्युं मां आवे
॥ तेणे ॥ प्रेम ॥ १ ॥ रूदने रोमांचित थाय रसिक रंगे ॥
परमानंद उर झीलरावे ॥ तेणे प्रेम ॥ २ ॥ हरीरस रा-
ता उन्मत्त मद माता फरीं ॥ त्यारे नृत्य करे ने हरी
गुण गाये ॥ तेणे प्रेमरस्स ॥ ३ ॥ दीव्य द्रष्टीये दीव्य
स्वरूप हरीनुं देखे ॥ तत्त द्रष्टी त्यारे नजरे नावे ॥ ते-
णे प्रेम ॥ ४ ॥ जेवा जन कोटीकु मांरे वीरला कोई ॥ वी-
श्वमां वीचरे जेतो निर्दावे ॥ तेणे प्रेम ॥ ५ ॥ कहे ला-
ल कोईने मणे त्यारे कर्म संजोग ॥ पण पुण्य वी-
ना न आोळख्या जावे ॥ तेणे प्रेमरस पीधा ॥ ६ ॥

॥ पद ॥ २ ॥ ॥ समाप्तम ॥ ॥

राग सोरठ ॥ ॥ विनति विषे ॥ ॥ प्रभु
हुं प्रीते करूं छुं पोकार ॥ कांने सांभळो नंद कुमार ॥
प्रभु हूं प्रीते ॥ टेक ॥ भव कुप दरीयामांथी मुजने ॥
सांह्य ग्रहीने काढो बाहार ॥ प्रभु हूं ॥ १ ॥ जप तप व्रत
वैराग्य मे नथी ॥ निज नाम तणो आधार ॥ प्रभु
हूं ॥ २ ॥ तात मात सुत सजन सनेही ॥ कोई नथि
दुःख हरनार ॥ प्रभु हूं ॥ ३ ॥ संकटमां संगी श्रीहरी तम
मे ॥ आपदा करो छो अपार ॥ प्रभु हूं ॥ ४ ॥ मारी जेक
आरी जन जेवा ॥ पूरण करो करतार ॥ प्रभु हूं ॥ ५ ॥
मोटो मेरो पण लाज तुं मारी ॥ कहे श्री मुक्त उदे त्या

रा प्रभु हुं॥पे॥ ॥पद ४१॥ ॥हरी हुं तारो
छुं हुं तारो॥ हे तहपि ग्रहोने हवे मारो॥ हरी हुं तारो छुं
॥टेक॥ थिरथर कुपे काया मारी॥ देजे लव सागर कुंज
लारो॥ हरी हुं॥१॥ कइ साधन करी श्रमित थयो पे-
ण॥ आव्यो नथि कुंज आरो॥ हरी हुं॥२॥ मूढ हुं ल
क्ति सुधारस भूक्यो॥ लव लोगमां लभ्यो अपारो॥
हरी हुं॥३॥ सर्वोत्तम तुम शरण पडी पडी॥ पळे पळे
कइ छुं पोकारो॥ हरी हुं॥४॥ रूप सींधुमां राखो रसीक
वस॥ नटवर करीो न न्यारो॥ हरि हुं॥५॥ लालनी
कुनो प्रतिपाळ दयानिधि॥ रेडो मुजमां प्रेम रस धारो
॥हरी हुं॥६॥ ॥पद ४२॥ ॥प्रभु तमे श
रणागत प्रतिपाळ॥ हरी मारुं हुं ज करोने दयाळ॥
प्रभु तमे॥टेक॥ रागद्वेष लवरोक सींधुमां॥ ब्रूडी थ
यो छुं जे दास॥ प्रभु तमे॥१॥ शरीरना वनी रुद्ध
रही नथी॥ वहे कर्म वायु विकराळ॥ प्रभु तमे॥२॥
करणाधार सद्गुरुना शब्द रेल्या॥ सुणी नरके सं-
भाळ॥ प्रभु तमे॥३॥ वीषय वेगमां वह्यो विकळ थ
इ॥ ऊठे तृष्णा तरंग विशाळ॥ प्रभु तमे॥४॥ आज
थडायो जेम अनेक जन्मथी॥ कष्ट काप्यो काळ॥ प्र
भु तमे॥५॥ पळे पळे लाल जे दास पोकारे॥ श्याम
करोने संभाळ॥ प्रभु तमे॥६॥ ॥पद ४३॥
समास म्॥ ॥राग कफी॥ ॥जीपे वी

विषे॥ ॥श्रीरणछोडजीक्लाधार॥समरमन मूरख मारा॥श्रीरणछोड॥टेक॥ मात तात भ्रात नारी सुत नात जनता॥ स्वार्थी सहु संसार रे॥ समरमन॥१॥ छुटे वेळाये तारां, सगां सहु रहे दुरां त्यारां॥ कोई नहीं आवे तारी वाररे॥ समरमन॥ २॥ मारूं मारूं शुं करे, मूंढ शुं फुल्यो फरे॥ तारूं नथी तलभार रे॥ समरमन॥३॥ धूर्त्तपणे तूं धन, शीद ने संचे छे जन॥ धरया रहेशे भण्डार रे॥ समरमन॥४॥ कृष्ण कृपाळु हरी, भाव ध्यानमां धरी॥ भजी उतरो भवपार रे॥ समरमन॥५॥ ॥ पद॥ ॥श्रीरणछोड रंगीला हरी॥ भजी ले मन भाव धरी॥श्रीरणछोड॥टेक॥ रत्न सरीखुं तन, जक्तमां नरतन॥ पाम्यो चोराशी फरी फरी॥ भजीले मन॥१॥ अवसर आवो सारो, फरी नहि आवे तारो॥ अरे वात कहुं छुं खरी रे॥ भजीले मन॥२॥ स्वारथी भामण सहु, तारा हीत माटे कहुं॥ कहुं छुं तने करगरीरे॥ भजीले मन॥३॥ जेजनना लेखां तो मूढ शुं करेछे मातो॥ डग नथी भरतो डरी रे॥ भजीले मन॥४॥ रसीक रूप रसाळ, भासतुं क्षीने वाला॥ तरि भवसागर जन तरीरे॥ भजीले मन॥५॥ ॥ पद॥२॥ ॥समाप्तम्॥ ॥गरबी॥ ॥विनतिविषे॥ ॥श्रीरणछोड

પ્રાણાધાર ॥ તમે છો મારા દુઃખ હરનાર ॥ શ્રીરણછો
ડ ॥ ટેક ॥ આપ વીના તે મારે, નથિ કોઈ આ સંસારે
॥ આંસુનો ખોનારરે ॥ તમે છો મારા ॥ ૧ ॥ તમ વિના
અંતર સહુ, બળતું રહે છે બહુ ॥ કુળ નથી વણતીલ
ગારરે ॥ તમે છો મારા ॥ ૨ ॥ ઘરમાંહી ગમતું નથી,
વનવસે સુખ નથી ॥ ચરપટી ચીતમાં અપારરે ॥
તમે છો મારા ॥ ૩ ॥ જાય કાલ કાં તાં બહુ, દીન વહી
ગયા પ્રભુ ॥ કેમ નથિ કરતા સંભારરે ॥ તમે છો મારા
॥ ૪ ॥ શ્યામ સને હી વિના સહુ પળ લાલનને ॥ સુખ
નથિ આ સંસારરે ॥ તમે છો મારા ॥ ૫ ॥ ॥
પદ ॥ ૧ ॥ ॥ શ્રીરણછોડ રંગીલા દયાલા ॥ તમે
છો મારા પ્રભુ પ્રતિપાળ ॥ શ્રીરણછોડ ॥ ટેક ॥ અતિ
તમારી જમને, શું કહું ત્રિવિક્રમ તમને ॥ અંતરમાં
છે અપારરે ॥ તમે છો મારા ॥ ૧ ॥ ટળ જશે સહુ તાપ તન-
નના, મટશે બહુ ફેરી મનના ॥ જ્યારે શ્યામ કી
પાલેરી સંભાળરે ॥ તમે છો મારા ॥ ૨ ॥ પ્રેમરસ
પ્યાલો જ્યારે, પ્રીતમ તમે પાશો ત્યારે ॥ મારા મન-
ની મટશે ઝાળરે ॥ તમે છો મારા ॥ ૩ ॥ રાંક છું રતેમ
જ, કહું છું અંતરનું દુઃખ ॥ કરશરી કૃષ્ણ કૃપાળ રે ॥ ત
મે છો મારા ॥ ૪ ॥ દરશન અંતરમાં આપી, ગ્રહેની વિ
નાશ કાપી ॥ લાલનને કરશો નિહાલરે ॥ તમે છો મારા ॥
૫ ॥ ॥ પદ ॥ ૨ ॥ ॥ શ્રીરણછોડ રંગીલા

धणी॥ तमे छो मारा शीरना मणी॥ श्रीरणछोड
॥टेक॥ लक्षचोराशी फेरा, वारेवार फर्यो फेरा॥ पापी
॥पाम्यो छुं धणीरे॥ तमे छो मारा॥१॥ कुत्सित क
र्म करी, अंध थयो छुं फरी॥ कृपा तेनुं सीधुं में जाणीरे
॥तमे छो मारा॥२॥ श्यामदामने जेई बुद्धि मारी
जई मोही॥ जेम मोरलीये मोही नागणीरे॥ तमे छो
मारा॥३॥ कृपानिधि कृपाळ, केम जेता नथि संभा-
ळ॥ कठ्ठ थई न करशो ताण॥ ताणीरे॥ तमे छो मारा
॥४॥ नारणने शुं रुठ्यो राजो, लोलजेने नथि
जाजो॥ पायो जेह प्रेमरस कुणीरे॥ तमे छो मा
रा॥५॥ ॥पद॥७॥ ॥श्रीरणछोड रंगी
लालाल॥ तमे छो प्रभु दीन दयाल॥ श्रीरणछोड
॥टेक॥ आंसु लोच्यनमां आवे॥ लोकलाज मुजने न
लावे॥ तमविना तनछे जेहालरे॥ तमे छो प्रभु
॥१॥ जळविना मीन जेम, तमविना मन तेम॥ प्रे
मरस पैने ल्यो संभाळरे॥ तमे छो प्रभु॥२॥ वारे
वारे करगरी॥ कुंडमां थई जर जरी॥ केम नथि कुण
ता कृपाळरे॥ तमे छो प्रभु॥३॥ दोष देखीने मारा,
मनथि जेने फेरशो न्यारा॥ तो मारो शो थाशे हवाल
रे॥ तमे छो प्रभु॥४॥ जेवो तेवो पण नारण॥ शरणे
पड्यो कृपाळ॥ माटे करवुं घटे छे वालरे॥ तमे छो प्र
भु॥५॥ ॥पद॥८॥ ॥श्रीरणछोड जग

धारा ॥ तमे छो मारा प्रभु भरतार ॥ श्रीरणछोडजा
रे ॥ स्नेह संबंध नातो, जगतमां नथी जतो ॥ तो
तमे केम तजशो दीदार रे ॥ तमे छो मारा ॥१॥ पोषण
मांहे नेम, प्रीते करो छो तेम ॥ आपो सुखसंगम अ-
पार रे ॥ तमे छो मारा ॥२॥ करगरी कहुं छुं रीते, मानो प्री-
तम प्रीते ॥ अहो जोने केम रहे जालार रे ॥ तमे छो मा-
रा ॥३॥ तन मन शीतळ थाशे, ब्रेहनी वेदना जाशे ॥ आ-
पो अंतरमां दीदार रे ॥ तमे छो मारा ॥४॥ प्रीतीना प्रति-
पाळ, लालनी लेजो संभाळ ॥ करो निजर्दनो विचा-
र रे ॥ तमे छो मारा ॥५॥ ॥पद ५॥ ॥स-
माप्तम् ॥ ॥अथ जेकत्ताविषे॥ ॥राग ढाढी
॥ ॥घरमांही मज्या गोपाळ ॥ लले मारी ली-
धी संभाळ ॥ घरमांही ॥ टेक ॥ दरदीयुं सकु दूर, दे-
ख्यो दिव्य ज्ञान सूर ॥ तिमिर अज्ञान टळ्युं ततकाळ
रे ॥ लले मारी ॥१॥ चितमां चेतन चंद, जोईने पा-
म्यो आनंद ॥ विरह अग्निनी समी ज्वाळ रे ॥ लले
मारा ॥२॥ मट्यूं सहु मान मोह, कंई नहीं परलोक
॥ देह प्रति दीध्यानं दलाल रे ॥ लले मारी ॥३॥ ज्ञान
दीपक पाज्ये, साधन कोई करो लाज्ये ॥ प्रभु जमणे कंदी
हां परे ॥ लले मारी ॥४॥ लालना प्रीतम मणीया,
जा थीने अंतरमां लणीया ॥ निरखीने पयो छु नि-
हाल रे ॥ लले मारी लीधी संभाळ ॥५॥ समाप्तम्

राग जंगलायथी॥ ॥विनति विषे॥ ॥
रणछोड रसीलारे, तमे ललित जोडाणाने मारे प
थी लीला॥ आपे अर्पणं जे कीला॥ वेगे उरमां व
सीला॥ रणछोड रसीलारे॥ टेक॥ प्रभु आरत अं
तरमां आणी॥ अपारा॥ तुम रीत घणे पडीने प्रीते कुंछुं
पोकारा॥ अहे पेहना अपारा॥ कष्ट दूर करनारा॥ रण
छोड॥१॥ प्रभु भोग वासना रूपी लोयंगा॥ अति
तेनुं विष व्याप्युं मुज अंगा॥ आपो संतनो प्रसंग
॥ वेगे पाय विष लंगा॥ रणछोड॥२॥ प्रभु क्रोध
कसेकीधो अंतर अंधारो॥ सकुतो डी पाडे प्रेमने
मनो पक्षारो॥ अंतर आवी अने मारो॥ मुजगाय
ने उगारो॥ रणछोड॥३॥ प्रभु कोगट कैराद स्यो अ
कुचारा॥ मारा तनमां त्रिविधि तापत पैछे अपार
॥ ते दुःख हरनारा॥ लेलेलालनी संभाळा॥ रण
छोड॥४॥ ॥पद॥५॥ ॥रणछोड रंगी-
लारे॥ मेंजाणी तमारी रीत रसीला॥ जोडाणाने
मन वसीला॥ हृदध्यानमां धसीला॥ रणछोड रं
गीलारे॥ टेक॥ तमे प्रीतम प्राण आधार अमारा॥
मारा अंतरमां आवीने दुःख हरोने अपारा॥ वि
षयसुखोलागे खारा॥ जेवो कर्यो विचारा॥ रण
छोड॥१॥ तमे माया मान मोहने नीवारो॥ काम
क्रोधने वीडारो मुज दीनने उगारो॥ प्रीतम हृदय

मांपधारो॥अंतरआनंदवधारो॥रणछोडरंगी
लारे॥२॥तमेदुष्टदुरारी॥दरदकरोदूर॥हरीकेते
हरीनेराजोरीररणेकलूर॥आपोअंतरज्ञानसु
रा॥लवमां॥लासोलरपूर॥रणछोडरंगिलारे॥
३॥माहु मनमीनप्रीतमप्रेमनीर॥प्रीतेपानकरी
नेसेहेनेलूलुंकुशरीर॥नेत्रआवेनेहनीर॥राणो
लालनीअधीर॥रणछोडरंगीलारे॥४॥ ॥
पद॥२॥ ॥रणछोडजीरसीयारे॥तमेहेते
पोडाणानीस्नापे हरीहसीया॥ नसआपीरेया
नसीया॥नेहथीयाजेहनसीया॥रणछोडजीरसी
यारे॥टेक॥तमेमाततातमारा॥तमे त्राता॥तमे
सुभासनेही मारीसांलजोवात॥नेहआपोनेह
नाता॥हरोअंतरमांरीता॥रणछोडजी॥१॥काम
क्रोधमदमोहधीक्कारा॥वहेलोलनदीनीधारा॥अं-
तरमांधार॥अनुंदुःअछेअपार॥करगदुवारवार
॥रणछोडजी॥२॥हरे मनमथ मनमांआवीज
हाल॥जेतोसेहेनेसाधेविषयसुजनोसमाज
॥मारे मुकावोमहाराज॥नहितोलसेतुकला
ल॥रणछोडजी॥३॥प्रभुनेवोतेवोपणदास
छुंतमारो॥येजेपोतानुंतमेजीरदवीचारो॥जे
थ्रुमुष्पथीउच्चारो॥लालनलूछेदासमारो॥रण
छोडजीरसीया॥४॥ ॥पद॥३॥ ॥

रणछोड रंगरातारे ॥ तमे छानी जोडणानी साथेक रीयात ॥ जेना देखीने हनाता ॥ आव्या डाकोरमां घता ॥ रणछोड रंगराटेक ॥ प्रभु वारंवार करग कुंज पार ॥ स्याम करतानथी केम मारी संभार ॥ हवे पा म्यो हरी हारा ॥ करीकरीने पोकारा ॥ रणछोड रंगरा- तारे ॥१॥ नित मंचणपांच चोर वसे पासा ॥ जेतो धीरज ध्यान धननो करेनाश ॥ जेथी थईने नीराश ॥ प्रीते आव्यो तुज पास ॥ रणछोड रंगरातारे ॥ २॥ कहोके म करीत कुंजहरीयो जपारो ॥ माटे हवे ते हाथेग्र हो हरी मारो ॥ कुंजहरीयो निवारो ॥ मने पार उतारो ॥ रणछोड रंगरातारे ॥ ३॥ हवे वेगे ब्रजपाली करो तमे वाला ॥ प्रभु दीनबंधु कुंजहरता दयाळ ॥ भीरे रणछोड कृपाळ ॥ करो बाळने निहाल ॥ रणछोड रंगरातारे ॥ ४॥ ॥ पद ॥ ५१ ॥ ॥ रण- छोड कृपाळारे ॥ कृपा कीधी जोडणाने केवी कृपाळ ॥ द्वारकाना प्रतिपाळ ॥ आव्या डाकोरमां दयाळ ॥ र णछोड कृपाळारे ॥ टेक ॥ तमे अंतरजामी स्यामसकु थी अधिक ॥ वेगे तोणाया सथावाले चवीक ॥ प्रभु बोडाणीस्त्री जो ॥ पाछा करथी थई छीक ॥ रणछोड कृपाळारे ॥ १॥ तमे धीरज धर्म आपी दृढध्यान ॥ मने लूजावो न्यून मन्त्रनुं भान ॥ पाछळ थी सभा ना ॥ समभाव जेवी सान ॥ रणछोड कृपाळारे ॥

वाप्रभुमायाकारणकर्मलयकापो ।। मारांदूरकरो
पांयेप्रभुपांपो ।। निलनंदनितजापो ।। पीतप
रण मांपीपो ।। रणछोडरूपाळारे ।।३।। प्रभुप्रेमसी
घुतनपास्नेलस्यो म्होटो ।। अरे दिलथिपोकारेलाल
अरोजोरो ।। पावोप्रेमरसलोटो ।। जेथीजावेनहि
रोटो ।। रणछोडरूपाळारे ।।४।। ।।पद।।५।। ।।
रसीयारणछोडरे ।। तमे कयाजोडाणा नाथुरूया
मनकोडा ।। मुकीमाननेमरोडा ।। दीधीदुःखकांथीदो
डा ।। रसीयारणछोडरे ।।टेक।। तमे मारीवातस्या
मसुणोकान ।। नथितमथुंश्रीडाकोरेरुलस्यान ।।
नथिमूकावथुंमान ।। जाणो अंतरमांध्यान ।। रसीया
रणछोडरे ।।१।। निजदासनायज्ञमां दासत्व तमे
लीधुं ।। अैश्वर्यतजिनेकीधुंर्यकार्यकीधुं ।। सार्थी
पर्णने सुखदीधुं ।। मारेतोछेकामसीधुं ।। रसीया
रणछोडा ।।२।। तमे गजनीअरज सांभळीघन-
श्यामा ।। पड्यो जड धाणे धायातज्यघामा ।। मारेके
मुं नथि कामा ।। जाणो अंतरविरामा ।। रसीयारणछो
डरे ।।३।। प्रभुलिखमपीतानुं पणराख्युंतमे लारी ।।
चक्रधारी गिरिधारी निजनेम नेवीसारी ।। अेवी
अरज न मारी ।। लाल मागे प्रेमवारी ।। रसीयार
णछोडा ।।५।। ।।पद।।६।। ।।समाप्तम्।।
।। ।।रागपद।। ।।संतविषे।। ।।म

संतोमळनेरे मोहोटा जननामनमां ॥ मोहोटा
ते मुक्तिनी जुक्ति जणावीतने ॥ त्यागकरावेताश
तनमां रे ॥ भणेतो भणजेरे ॥ टेक ॥ महानुं लाभनुं
रूप मनोहर ॥ राख जे हृदीया लोचनमां ॥ परमेश्वर
सरीखा समजीनेरे ॥ जंतर तनने तनमनधनमां
रे ॥ भणेतो भणजेरे ॥ १ ॥ चरणथोई चरणोदक लेई
नेतूं ॥ सेवकथईने रहेजे समीपतनमां ॥ मनक्रम
वचनेसर्व समर्पितूं ॥ रहेजे संतोनाशरणमांरे
॥ भणेतो भणजेरे ॥ २ ॥ तेह छोडावी जलेदकरावी
॥ ब्रह्मलावकरावे सहुजनमां ॥ लौतिकलावनुं
लानलूलावीतातूं ॥ प्रीतलेई थोटाडे चैतनमांरे
॥ भणेतोभणजेरे ॥ ३ ॥ ज्ञानहीणनी संगतछोडी
दतूं ॥ मांजिणनथीजपतमयनमां ॥ लालदासहरी
नादासनो संगछोडी ॥ रीदजोणे छवचनमांरे
॥ भणेतोभणजेरे मोहोटा जननामनमां ॥ ४ ॥ ॥
पद ॥ ॥ संगतकरजेरे साचा संतनी त
कजारे ॥ संतभण्या तेने साहेब मणीयाजेवुं
पहेछे वेदरा स्त्रर्दतीहासरे ॥ संगतकरजेरे ॥
टेक ॥ शब्दसंदेसो श्रवणे सुणावी मोहोटो ॥ म्
कावे मायानो पासा ॥ भक्तिलावेहरिमां लावक-
रावीतने ॥ ततक्षणकरशी हरीदासरे ॥ संगतक
जेरे ॥ १ ॥ वैराग विषयनो त्यागकरावी तने ॥ म्

डावे देहनो अध्यासा ॥ चैतन अस्तु तने अंतर आ
पी हरीनो ॥ चीअमां देखाडे विश्वास रे ॥ संगत करले
रे ॥ २ ॥ कामीना संगे काम वाधे लोलीसंगे ॥ वाधे लो
लनो अभ्यास ॥ अेम संतनी संगे संत सरीखो
थई ॥ सेहेने पामे पद अविनाशी रे ॥ संगत करले रे ॥
३ ॥ अेवुं समजी नर मूंढ अज्ञानी तुं ॥ वेगे कर संत
नो सहेवास ॥ कहे बाल संतने शीरी रासूंपी देतारा ॥
चीतमां देखाडे चीता कडी रे ॥ संगत करले रे ॥ ४ ॥ ॥
पद ॥ ॥ समजीने समजने रे संतना शब्द
सुणी कान ॥ वेपार विठ्ठलवरना नामनो अेता ॥
अंतर नपि अन्यध्यानने रे ॥ समजीने समजने रे ॥ टे
क ॥ अेक शब्द सुणी स्वर्ग दिधुं ना ॥ लागले घ-
छेलनीलाना ॥ अेक शब्द सुणी माछु सुणे दे-
रो ॥ काग विष्टाना समाने रे ॥ समजीने समजने रे
॥ १ ॥ अेक शब्दे दशानन लक्ति जूदालणी ॥ मूअे
करे अेमातोण ॥ अेक शब्दे सकु साधननी सूणी
समजा ॥ समजीने वदे मुखवाण रे ॥ समजी समजने
रे ॥ २ ॥ अेम शब्दोना सूत्रनुं डोडुं घणसं ॥ धुंधा-
अेंलण समान ॥ संत शब्द कणा डातरणी पीतुं
टकातरी लन लगवानने ॥ समजीने समजने रे ॥ ३
॥ संतशब्दे शब्दातीत जणावी गीरमां ॥ आपे अ-
पंडानंददान ॥ अरमतनी अटपट मूकावीतने ॥

आपदीसाचुंरुडुंज्ञानरे॥समजीनेसमजोरे॥२
॥श्रद्धाणुंशरणांगतनेनीता॥समजावेशास्त्री
सानां॥लालदासनीतनीतकरजोसंता॥शब्दअमृत
तुंपानरे॥समजीनेसमजोरे संतनाशब्दसुणीज्ञा
ना॥पद॥ ॥पद॥७॥ ॥समाप्तम्॥ ॥
रागपद॥ ॥आलेनेसाध्यासतगुरुसंतम
णो॥तेतोतनमांअकुणकणानेकणेरे॥आलेनोवे
शा॥जेकअजंउनिरंजनआतमा॥जणहुजल्यो
तजणे॥सकुमांसरजासकुथीन्यारारे॥त्नावेह
जीनेलजोरे॥आलेने॥१॥जन्ममरणनुंमहादु
खमटेरे॥क्षुधापीपासापजो॥हर्षशोकमदमोह
नव्यापेरे॥तापत्रिवीधीनारजोरे॥आलेने॥२॥
देहअर्ध्यासनादोषनदेजेरे॥ब्रह्मसिंधुमांझ-
णो॥आपापरपरपंचनेपेजेरे॥गांठसंशयनीत्र
जोरे॥आलेने॥३॥सकुनासजासनेहीलगमांरे
॥रीत्रुसोधतांतयमजो॥जेवाअतुलवीनेदेजी
नेरे॥पापीपणपापपरहरेरे॥आलेने॥नापू
र्वजन्मनापुण्येप्रलुनारे॥पंथमांपगलुंतेरे॥
लालनोप्रलुज्यारेकृपाकरेत्यारे॥साध्यासंतने
जनुसरेरे॥आलेनेसाध्यासतगुरुसंतमणो॥पा॥
॥ ॥पद॥९॥ ॥आलेकोर्डसाध्यासंत-
नोसंगनीतकरे॥तेतोपजमांपापप्रपंचपरहरे

રે ॥ જાને કોઈ ॥ ટેક ॥ કૃષ્ણકૃપાણુની કથા અમૃતનું ॥ અહોનિશ પાનકરે ॥ ચિતમાંહ રીરસનું ચિંતન કરી ॥ વિષયલોગ વીસરે રે ॥ જાને કોઈ ॥ ૧ ॥ વેષ્ણવીવાણીનો વાદવિવાદ તજે ॥ હરીહરિહરી ઉચ્ચરે ॥ દેહગેહનો નેહનીવારીરે ॥ ડરીડરી ડગ સાંભરેરે ॥ જાને કોઈ ॥ ૨ ॥ દેહ અધ્યાસનો દોષ નીવારીને ॥ આતમદ્રષ્ટી ધરે ॥ નારાયણનો દાસ થઈ દધરી ॥ આનંદઉરમાં ભરેરે ॥ જાને કોઈ ॥ ૩ ॥ કોઈ પ્રાણીને પોતે દુઃખ આપે નહી ॥ સહુનુ અનુકુળ આચરે ॥ કોઈથકી ઉદવેગ ન પામેરે ॥ વિવેક વીશ્વાસ માં ફરેરે ॥ જાને કોઈ ॥ ૪ ॥ સહુમાં સરખો આત્મા દેખેરે ॥ ભેદદ્રષ્ટીપર હરે ॥ ચર્મદ્રષ્ટીનો દોષનીવારીરે ॥ ભાણ પ્રભુને અનુસરેરે ॥ જાને કોઈ ॥ ૫ ॥ ॥ પદ ॥ ૨૩ ॥ સમાપ્ત ॥ ॥ રાગ પદ ॥ ॥ સંતવિષે ॥ ॥ ॥ સોઈરે સાધુરે આ સંસારમાં ॥ જેણે પ્રેમરસ પાયા ॥ પિંડ બ્રહ્માંડના ઉપરે ॥ આતમજ્યોત જગાયા ॥ સોઈરે સાધુરે ॥ ટેક ॥ ગુણાતીત ઘરમાં રહે ॥ દ્રષ્ટે આવે ન દેહ ॥ જ્ઞાને ગગનવત થઈ રહ્યા ॥ અંતર અનુભવી એહ ॥ સોઈરે સાધુરે ॥ ૧ ॥ તુરીયાતીતે તદ્રૂપ થઈ ॥ દ્વૈતપણું દૂર નાખે ॥ પ્રપંચ ભેદને પરહરી ॥ સ્વયંબ્રહ્મને ભાખે ॥ સોઈરે સાધુરે ॥ ૨ ॥ નીત્યરાસ નરહરી તણો ॥ નીરખે અનંત અપા

रा॥ भावना मेरी लौकिक तणी॥ मीत थयुं मि
थ्याचार॥सोरठे रे साधुरे॥३॥ रोज्ञ सोधतां नव मळे
॥सकुथी मीत्र्यायार॥ कहे दास जेवा जनुलवी॥
दुर्लभ आ संसार॥ सोरठे रे साधुरे आ संसारमां
॥ने एे प्रेमरस पाया॥४॥ ॥समाप्तम्॥ ॥
अथ गुरु महिमा लिख्यते॥ ॥साखी॥ ॥
जय जय जगदाधार प्रलु॥ श्री गुरुदेव दयाळ॥स
कर वीश्व व्यापक विलु॥ शरणागत प्रतिपाळ॥१
॥ ताना विधि गुणनिधि गुरु॥ सत चित आनंद रूप॥
घर गृहमां ध्यानके॥ कहीन पडे भवकूप॥२॥ ॥
छंद मोतीदामनी भाषा॥ ॥ कहीन पडे भवकू
प ते जन॥ गुरुने सूंप्यू जेणे तन मंन॥ संत भग
वंत गुरु जे जलेह॥ जेषुं वारवार वदे छे वेद॥१॥
जाणे वीवेक जेनो जन काय॥ जेना घर मांय गुरुज्ञा
न सेय॥ ते तो गुरुदेवने जाणे वीशेष॥ भजे जनने
क शेष सुरेश॥२॥ भजे शुक सारद नारद रीख॥ भ
जे सनकादीक चार प्रसिद्ध॥ भजे ब्रह्माणी सची
रुद्राणी॥ पोते जोसे श्री भुज सारंग पाणी॥३॥
जेषो महीमा मनमांही वीचारी॥ भजे जपमां
ने भावे नरनारी॥ तेने गुरु भजतां सर्व भजाय
॥ नेम सकु रस सुधामां समाय॥४॥ जेने जेहपे
रस प्राप्त जे थाय॥ तेने सकु सोधण जेवे पमाय

॥ अक्षय पात्र होय तेने हाथ ॥ अन्य सहु पात्र भ-
णो तेनी साथ ॥५॥ भागीरथी मांही न्हावे जेना
य ॥ तेने सर्व तीर्थ तणुं फळ थाय ॥ मूळने सींचे
सर्व सींचाय ॥ जेम गुरु सेवेथी सर्व सेवाय ॥६॥
एवा गुरुदेव दया निधि दाता ॥ आपे निज सेवकने
शुभ शाता ॥ भूलो ना भा भक्तनी वात विचारी
॥ गुह्य गती कर्मनी केवी छे भारी ॥७॥ मल्या गुरु
श्री अग्र देव दयाळ ॥ मनोहर कीधी जेणे भक्तमा
ळ ॥ मल्या दासी पुत्रने श्री गुरुदेव ॥ आप्यो अंत
रमां भक्तिनो भेव ॥८॥ जन्म मरण दुःख गयुं स
हु दूर ॥ थया नीत नारद करीने हजूर ॥ रहीदास
रंका अंका भक्त पीपा ॥ भणे सहु भक्त नामदेव छी
पा ॥९॥ सेन भक्त सजनो अत कसाई ॥ सधनी
करमा ने मीरांबाई ॥ भूलैया जतीमां भक्त क-
बीर ॥ व्याध भक्त ज्ञातीना भणे आहीर ॥१०॥
॥ एवा कई भक्त जक्तमां अपार ॥ गुरुनी कृपा
ये तर्या संसार ॥ जक्तमां कोई नथी एनी जोड
॥ शरणे जतां पोहोंचे मनकोड ॥११॥ गुरु अवि
नासी थई छे अधीक ॥ मोहोटी मेरुथी सूतना
बीक ॥ गोविंदना सरज्या थया जीव अंध ॥ गमा
वे जन्म करीने गधंध ॥१२॥ एवा दुःजनो गुरु आ
णे अंत ॥ दीसे अंतर नेत्र अनंत ॥ गोविंदना

सरजन्या पड्या मोह जळमां ॥ गुरु उपदेशे छुटे तत
क्षण ॥ ३ ॥ गोविंद तो कर्म तणां फळ आपे ॥ गुरु
तत्वबोधे कर्म कष्ट कापे ॥ परब्रह्म पोते परोक्ष रहे
छे ॥ मन रुपी मायानो पडदो करे छे ॥ ४ ॥ गुरु मन
पडदाने दूर करीने ॥ आपे अंतरमां जप्रोक्ष करी
ने ॥ गोविंदना सरजन्या जवजगमांय ॥ ऊंचनी
च जन्म धरी अथडाय ॥ ५ ॥ गुरु तेने ज्ञान स्वरु
प देखाडे ॥ मोटुं जन्म मरणनुं दुःख मटाडे ॥ जेना
गुरु ज्ञानदीपक प्रदाता ॥ रहे निज रुपे सदा रंगराता
॥ ६ ॥ सच्चिदानंद सदा सुखकारी ॥ मही माळणे
रे मूढ संसारी ॥ पशु तुल्य पापी ते पामर प्राणी
॥ धरे गुरु साथे विरुद्ध जे वाणी ॥ ७ ॥ गुरु साथे
अंतर राखे जेह ॥ वारे वारे प्रेत योनी धरे तेह ॥
गुरुनो दोष देखे जे कोय ॥ ते तो नर आंधळी चाक
ण होय ॥ ८ ॥ गुरु उपकार न माने जेह ॥ ते तो श्व
कार धरे घूड देह ॥ गुरु मरजादा जे लंपट लोपे ॥ ते-
ना पर कृष्ण कठण घणुं कोपे ॥ ९ ॥ गुरुने मनुष्य
बराबर जाणे ॥ तेना हरी दुःखनो अंत न आणे
॥ गुरुनो जे मंत्र सुणे नही कान ॥ तेना माथे पाप
छे मेरु समान ॥ १० ॥ गुरुनी जात जुवे जन जेह ॥
ते तो रात जन्म धरे श्वान देह ॥ गुरुनुं जे मूढ करे अप
मान ॥ घणी काग देह धरे समशान ॥ ११ ॥ गु

रुनी जे सेवा हृदामां न राजे ॥ तेने नीश्चे नर्कनां कुं
डमां नाखे ॥ गुरुनुं जे नीत्य जपे नहीं नाम ॥ ते तो
फरी फरीने जसे ठाम ॥ २२ ॥ एवुं समजीने तजे
अभिमान ॥ भजे सामे लावे गुरु भगवान ॥
गुरुनुं ज्ञान हृदामां जे धारे ॥ ते तो तरी आप अन्य
ने तारे ॥ २३ ॥ गुरुनुं ध्यान धरे जन तेह ॥ तेने सा
क्षी थाय हरी साथे स्नेह ॥ गुरु गुरु नाम भजे जे उ-
च्चारे ॥ तेनो भरी वेदशास्त्रथी सत्तारे ॥ २४ ॥ गुरु सा
थे अंतर राखे न लेश ॥ ते तो प्रेम मार्गमां करसे प्रवे-
श ॥ गुरु साथे राखे साचो भाव शुद्ध ॥ ते तो भक्त
स्वधर्मथी भजे प्रबुद्ध ॥ २५ ॥ राखे गुरुवाक्यमां जे
विश्वास ॥ तेने थाय अंतर ज्ञान प्रकाश ॥ मन कर्म
वचने करे गुरु सेवा ॥ ते तो दीस देखे देवाधिदेवा ॥
२६ ॥ गुरुना मननो जे आशय जाणे ॥ ते तो महा
मोक्ष तणुं सुख माणे ॥ गुरुना शरणे सूपे जे शीश ॥
तेने देखी रीझे सदा जगदीश ॥ २७ ॥ वीश्वमां देखे
गुरुनो वीलास ॥ तेनो थीर थाय वैकुंठमां वास ॥ जु
वे भक्तमां गुरु गुरुमां भक्त ॥ तेने भगवान जाणे सा
चो भक्त ॥ २८ ॥ गुरु चरणोदकमां जेने प्रीत ॥ तेनुं
नवनीत तुल्य थाय चीत ॥ गुरुनो प्रीते प्रसाद जे
पामे ॥ ते तो गर्भवासनी वेदना वामे ॥ २९ ॥ गुरु
ना दरशन माटे जे धाया ॥ तेने सकल तीर्थ तणुं फळ

थाय॥ गुरूने ते प्रेमे करी पधरावे॥ तेना अंतरमां
हरीनीत आवे॥ ७॥ परशोते प्रीते गुरूना चरण॥ म-
टे तेना माथेथी जन्मने मरण॥ करे ते प्रीते गुरूनी प्र
क्रमा॥ तेने धन्य धन्य कहे शीवब्रह्मा॥ ८॥ गुरू-
ना ते गुण सुणे नीलजाना॥ तेनुं टळी जाय देहा
भिमान॥ जेणे जगनाधारण गुण जपेला॥ ले
णी गुरू आप्यो कुंवारणी मोझार॥ ९॥ पीडा ध्यो छूंतु
ठाकुं भक्तना धर्म॥ आम्यो लय मांही लाणी लोश
र्म॥ करीफरी भक्त मांकु डंकुं ड्रामा॥ करी सणडुंजे-
ठोनथीठीकु ठामा॥ १०॥ त्रिविधि तापे तप्यो जकुना
था॥ हवे मारे माथे मूको हरीहाथ॥ समाधो ने श्या
म मारो सकु धर्म॥ आपो अंतरमां अधिचण
धर्म॥ ११॥ जो जाणीने आप समाधो ने ताप॥
पेखो नही आप प्रभु मारां पाप॥ राखो नही राज
गृहमां रोष॥ देखो नही दास तणा प्रभु दोष॥ १२॥ प
॥ शीशुने माता नसाडलडावे॥ तारे तेने जीलुं
ते कोण जोखावे॥ ज्यारे पीता देखे पुत्रनो दोष॥
त्यारे तेने कोण आपे धन कोरा॥ १३॥ पतीव्रताना
रीपती ज्यारे त्यागे॥ त्यारे तेनी लाज ठीलने
शी लागे॥ पोषे नहीं प्रोढी तने यथमान॥ त्यारे
तेने अन्य ते शुं आपे दान॥ १४॥ जेथी लौकीक
रीते लागे लाज॥ आपतो अलौकीक राख धीराज

॥ अपअंडानंदसदाजयविनाश॥ प्रभुसमरसरसु
कृमकाश॥ ३॥ एवी दोषदासथी वेकथोल्ने दूर॥
तारे थाये पापशत्रुने धूर॥ कामक्रोधलोभ मदमा
न मोह॥ रागद्वेषदर्पदलपरस्तोह॥ ३॥ कें चीतथ
ती अंतरमां अजवाल॥ छूटे मुन रंगलोपी तुलना
॥ थयरे नहीं शंकधणीनी लगार॥ राजे नहीं रावत
मारो लार॥ ॥ माटे प्रभुपोतानुं कुवारवार॥ कुं
छुं कुरगरी वारकन्नर॥ सर्वांतर स्वमीनणोछे स
र्व॥ चीताशे अविद्याप्रपंचनो गर्व॥ ४॥ थाव सावो
ने रक्षकश्रेकवैराग॥ तारे नहीं लागे शत्रुनो लाग॥
चक्रवर्त्ति चेतननुं करो राज॥ तारे प्रभु थाय अमार
कुंज॥ ४॥ अंतरमां आपो प्रभु आनंद॥ देजाछे
ने थीतमां चेतन चंद॥ पावो प्रीते प्रेम सुधारस स
र॥ अमने प्रीतम प्राणआधार॥ ४३॥ गुरुगुणसा
गरश्रीगोपाल॥ दीलमां दरशन आपो दयाल॥
कहे अंछे दलाल कहने ३॥ सन्नासकुजोलोलय
लयरणछो ३॥ ४४॥ ॥ लावणी॥ ॥ श्रीगु
रु गुणसागर सदा॥ कोई न पामे पार॥ दीपस्तु
ते अल अलहीपती॥ वेदे पदरल सार॥ १॥ जन्म
मरण दुःखसींधुमां॥ वहे सकल संसार॥ ज्ञानी
गुरुतेने मले॥ ते पामे भवपार॥ २॥ जपतपतीर्थ
यज्ञव्रत॥ नहीं गुरुनाम समान॥ सकल शास्त्र

तुं लाल जो।। धरो गुरुनो विंदध्यान ।। ३।। गायशी
जेने सांभळे।। जपे अंतरमां जपा लालप्रभु ते
ने मळे।। टळे पाप संताप।।४।। ।।इतिश्री
गुरुमहिमासंपूर्णम्।। ।।समाप्तं।। ।।
इतिश्री लालदासजीकृतपदसंग्रह संपूरणम्



जाहेर खबर.

आ पुस्तक डाकोरमां बुकसेलर श्रीलोचन रणछोड-
नी दुकानेथी मळशे, तथा अमदावादमां बुकसेलर
जगजीवनदास दलपतरामनी दुकानेथी मळशे. ठेकाणुं:
अमदावादमां त्रणदरवाजाना मेदान आगळ जासेट
नी हवेली नीचे खानगी पुस्तक खानामांथी.

